নজির সংক্ষিপ্ত



অৰ্থাৎ

(হাইকোর্টের সংস্থাপন অবধি ১৮৭৯ খৃটাব্দের জুন যাবতীয় প্রয়োজনীয় ফৌজদারী নজিরের সারোদ্ধা

শ্রীগঙ্গানারায়ণ রায়, এম্, এ,

প্রীত।



প্রায়্ক ঈশ্বরচক্র বস্থ কোম্পানিকর্তৃক বছবাজারস্থ ২৪৯ সংখ্যক ভবনে ষ্ট্যান্হোপ্ যন্ত্রে মুক্তিত, ও গ্রন্থকারকর্তৃক তটা প্রকাশিত।

मन ১২৮৬ मान।

ভূমিকা ৷

বাঙ্গালা ভাষায় রীতিমত কোন ফোজদারী নজির পুস্তক না থাকায়, যাঁহারা বাঙ্গালা ভিন্ন অন্য ভাষা জানেন না তাঁহাদের অনেক অস্থবিধা হইত। এই অস্থবিধা দূরীকরণ মানদে "নজির সংক্ষিপ্তসার" প্রকাশিত হইল। হাইকোর্টের সংস্থাপনাবধি ১৮৬৮ সালের জুন পর্য্যন্ত যাবতীয় ফৌজদারী ফুলবেঞ্চ নজির ও তৎপরে বেঙ্গল ল রিপোর্ট ও ইণ্ডিয়ান ল রিপোর্টে গত জুন মাদ পর্যান্ত যত প্রয়োজনীয় ফোজদারী নজির বাহির হইয়াছে, তাহার সারোদ্ধার করিয়া এই পুস্তকে দন্নিবেশিত করা গেল। যে নজিরে কেবল মাত্র হাইকোর্টের এলাকা বা ক্ষমতার প্রদঙ্গ আছে, ও যাহাতে মফস্বলের মোক্তার বা পুলিদ কর্ম্মচারিদিগের কোন প্রয়োজন নাই, তাহাই পরিত্যক্ত হইয়াছে। পাঠকের স্থবিধার জন্য পুস্তকের প্রত্যেক পৃষ্ঠার উপরিভাগে ইংরাজী পুস্তকের নাম ও ভাগ, এবং মোকদ্দমার পাথে উহার পত্রান্ধ দেওয়া গেল।

বোম্বাই, মান্দ্রাজ, উত্তর-পশ্চিম ও কলিকাতার পৃথক্ পৃথক্ সংখ্যা থাকায় কেবল ইণ্ডিয়ান ল রিপোর্টে পত্রাঙ্কপ্রভৃতি নজিরের নীচে সন্মিবেশিত হইয়াছে।

গ্রাহকের অভিপ্রায় বুঝিতে পারিলে প্রতি বংসরে জুন মাসের পর নৃতন নজিরের সংক্ষিপ্রসার বাহির হইবে: বার্ষিক মূল্য আট আনা।

পাবনা। পৌৰ ১২৮৬।

শ্রীকেদারনাথ ঘোষ।

সাক্ষেতিক চিহ্ন।

ইণ্ডিয়ান ল রিপোর্টে নিম্ন-লিখিতরূপ স্থলে এইরূপ পাঠ করিতে হইবে।

> ८वा	•••	৩০০ পৃ	•••	বোষাই থণ্ড, ১ম ভাগ, ৩০০ পৃষ্ঠা।
২ কলি	•••	৫ পৃ	•••	কলিকাতা খণ্ড, ২য় ভাগ, ৫ম পৃষ্ঠা।
৩ এলা	•••	৭ পৃ	•••	এলাহাবাদ খণ্ড, ৩য় ভাগ, ৭ম পৃষ্ঠা।
৪ মা	•••	৯ পৃ	•••	মাক্ৰাজ থণ্ড, ৪ৰ্থ ভাগ, ৯ম পৃষ্ঠা।

^{🕮 🔊} মতী মহারাণী বঃ ছুর্গাদাস; এইস্থলে বঃ অর্থে বিরুদ্ধে—বিরুদ্ধ পক্ষে।



ভক্তিভাজন মহামান্য শ্রীল শ্রীযুক্ত জেম্স মন্রো সাহেব বাহাদুর করকমলেষু।

যে সকল পুলিসকর্মচারী ও ফোজদারী মোক্তারগণ ইংরাজী ভাষা জানে না তাহাদেরই উদ্দেশ্যে আমাদের এই ক্ষুদ্র পুস্তক প্রকাশিত হইয়ছে। মহাশয় জেলার জজ ও পুলিসের সর্কোন্নত পদাবলম্বী বিধায় উভয়েরই আশ্রয় স্বরূপ্। আমাদিগের বহু আয়াসের ফল আপন-কার করকমলে অর্পিত হইল।

এহকারয়োঃ।

वर्गानाञ्चात्री विनिद्धानिङ

মোকদ্দমার নির্ঘণ্ট।

লাম।							• পৃঠা।
অক্ষকুমার সাহা এবং ন	গেন্দ্রল	ान ठंटेंडो	পাখ্যা	य ं	•••	•••	€2
অনপূৰ্ণা বাই	•••	4.	•••		•••	***	94
অভয় চৌধুরী বঃ টি, ত্রে	•••		•••		•••	•••	७२
অরুণ চেলম্	•••		•••	•	•••	•••	10
আচাৰ্য্য	•••		•••	,	•••	•••	92
আদিভি গছ	•••		•••		•••	••	95
আব্বাস আলি চৌধুরী	•••		•••		••	• •	رد
আবহুল করিম	•••	•	•••		•••	.***	٥٠
আবুল হাসান	• •		•••		***	• • •	95
আবছল করিম	•••		• •	• •	•••	•••	৮৯•
আমিরদ্দী	• •	. ,	•••		•••	•••	5 8
আমিকদীন	••		••		•••	•••	ඉත
আমিরদীন	•		•••		••	••	47
আমিগোড়া হলাগ্ড	••	0.0	•••		••	••	৬৯
আরমাহলা	•••		•••		•••	•••	69 '
আগুতোষ চক্রবর্তী	•••		•••	• •	•••	•••	26
ঈশান দত্ত	•••		•••		•••	•••	७०
ष्ट्रेश्वतीव्यनाम निःश	••	•	• •	• •	•••	***	45
উজীর ওগয়রহ	•••		•••		•••	•••	89
छेमत्र भार्वनादत्रक	•••		***	* * * *	•••	•••	₹8
উপেজনাথ দাস	•••		•••	••	•••	•••	৬৭
এঞ্জেলো বঃ অপর এক প	2/2	•	•••	•	•••	• •	¢.
এতোয়ারী (মুসন্মৎ)	•••		••	• •	•••	•••	45
এয়াচিন সেখ	• • •	• - *	••	•	***		50

नाम ।					পূঞা ৷
এলাহি বক্স	•••	•••	•••	•••	>
ওফাতুরা	***	•••	•••	***	৩১
কলিকাতার উপনগ	রের মিউনিসিপাল	ক্ মিসনর গ	াণ বঃ আনিস্থদ্দিন	•••	49
ক্ৰ ক্ৰ	ঐ	ক্র	বঃ আমানতালী	•••	9 6
ক্র ক্র	ঞ	<u>ن</u> في	বঃ মাহামুদ আলি	• •	ల ప్ట
কার্গিল বঃ অপর	এক পক্ত	•••	•••	•••	Co
কাঞ্চন সিংহ	•••	•••	• •	•••	99
কান্তপ্রসাদ	••	•••	•••	•••	95
কাপ্তান বঃ জি, ও	৭ম্, স্মিথ	•••	•••	•••	8२
কাবিল কাজী	•••	•••	•••	•••	20
কাবিল মাঝি	••	•••	•••	•••	50
কারেমুদ্দীন বঃ আল্ল	াবক্স	•••	••	•••	90
কালীচরণ চন্দ	•••	•••	•••	•••	60
কালীচরণ মিশ্র	•••	•••	•••	•••	89
কালীনাথ বিশ্বাস	•••	•••	***	•••	99
কালীশঙ্কর সাত্তেল	• • •	•••	•••	•••	>¢
* কালী সরকার	• •	•••	***	•••	२¢
কাশীকিশোর রায় ৫	চাধুরী বঃ তারিণী	শক্ষর লাহিং	़ी .	•••	ર૭
কাশীচন্দ্ৰ দাস	•••	•••	•••	•••	es
কাশীচক্র সাহা ও	মহিমারঞ্জন রাজ	ম চৌধুরী	•••	•••	80
কাশ্মিরীলাল	•••	•••	• • •	•••	42
কু ছ্রতুলা	•••	•••	•••	•••	४२
कूत्र्पिनीकांख वटना	१भाषाम्य	•••	•••	•••	62
কুলতাণ সিং	• • •	•••	•••	•••	৬৩
ক্বঞানন্দ ভট্টাচাৰ্য্য	•••	•••	•••	•••	२०
কেশব লক্ষণ	•••	•••	•••	•••	<i>⊌</i> 8
কেদ্পার্য্য, এচ্, পি	t	•••	•••	•••	85
কোলা	***	•••		•••	२8
খাদেম সেখ	•••	•••	•••	•••	ર¢
গগালু মগালু	•••	•••	•••		२७

		300			
नाम ।					श्रुका ।
গঙ্গাধর ভূঞ	•••	•••	•••	•••	F-6
গৰুৱাজ	•••	• • •	•••	***	\$8
গজিকোম রাণু	•••	•••	•••	•••	4 6
গিরিশচক্র যোষ	•••	•••	•••	•••	8•
গুড় বক্স	•••	•••	• •	•••	66
গুরুচরণ চঙ্গ	••	• •	•••	• •	ve
গোপাল বর্ণওয়ার	• •	***	•••	••	>¢
গোবৰ্দ্ধন ভূঁইয়া	• •	•••	•••	• •	२१
গোবিন্দ	•••	••	••	• •	৬৯
গোবিক চক্ত ঘোষ	***	•••	•••	••	
গোলক সিংহ	••	• •	•••	• •	50
গোলাব খাঁ	***	***	•••		৩৩
গোলাম আরফিন	•••	•••	•••	•••	ঽ৬
গোলাম মহত্মদ	•••	• •	• •	•••	०
গোষ্ঠলাল দত্ত	••	••	• •	***	8 २ '
গৌড় পা বিন ভেকু গৌড়	• •	• •	• •	• •	b 9
গৌরমোহন সিংহ	•••	• • •	•••	***	8 0
গৌরমোহন দেন	• • •	***	•••	•••	>8
চন্দ্ৰকাম্ভ চক্ৰবৰ্ত্তী	•••	•••	•••	4+4	8
চদ্রশেথর রায়	•••	• • •	• • •	• • •	२৮
চন্মন সা	•••	•••	•••	•••	49
চারু নাইয়া	•••	***	***	•••	92
চিল্লি মবিগ ড়্	•••	•••	•••	•••	91
চৌধুরী গং	•••		•••	• • •	১২
ছত্ৰ সিং		•••	•••	•••	क २
জগচন্দ্ৰ চক্ৰবৰ্ত্তী		•••	•••	•••	৬৯
জগৎ মাল		•••	•••	•••	40
जन्मी (वनमात •		•••	•••	* ***	89
জমীরণ (মুসক্মৎ) .		•••	•••	•••	>
करक्ष भूरशंशिशांत्र			•••	•••	œ

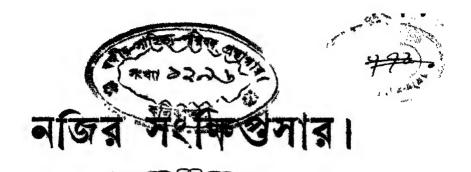
ं मांग ।				পৃষ্ঠা।
জহরদী বং হিশাতুলা	•••	***	•••	63
জান বক্স বঃ সরকার বাহাছর	***	•••	•••	90
জান মহম্মদ	, •••	***	100	२०
জুলফুকার ধাঁ	***	***	***	84
ठेक्त मत्रांग निः	•••	***	•••	b •
ঠাকুর প্রসাদ	•••	***	•••	৬৩
ष्ट तनी	•••	***	•••	96
ডোঙ্গজী আউদোজী	•••	•••	•••	৮৮
তকী মহম্মদ বঃ ক্ষঞ্নাথ রায়	•••	***	, • • •	82
তারকনাথ মুখোপাধ্যায়	•••	•••	•••	C 8
তুকাষ্য বিন তামানা	•••	•••	• • •	৬৫
जूननी (नामान	•••	•••	•••	२७
जूननी निः	•••	•••	•••	\$0
ত্রৈলোক্যনাথ চৌধুরী	•••	•••	•••	20
मग्नान व । छेत्री	•••	•••	• • •	25
निनात नत्कात		4, • •	***	9.3
দীননাথ ঘটক বঃ রাজকুমার সিংহ		•••	•••	৮৩
मीनवक् गत्र्यायाश्राव	•••	. •••	•••	84
দীনবন্ বিখাস	•••	•••	• • •	20
হুর্গাদাস ভট্টাচার্য্য	•••	•••	•••	83
ছ্লালী বেওয়া বঃ ভূবন সাহা	•••	•••	•••	25
মারিকানাথ চৌধুরী	•••	•••	• • •	93
স্বারিকানাথ হাজরা	•••	•••	•••	80
নকুড় সরক্ার	٧٠	***	•••	৩১
নগরদ্বী পরামাণিক	. •••	***	•••	૭
নবকুমার বন্দ্যোপাধ্যায়	,	•••	***	25
নবাব সিং	•••	•••	•••	>8
নয়নস্থ মেহ্তর	,		***	20
निक्ध देव्यानी	•••	:,	•••	৯৩
হুপুর আওরৎ বঃ জুড়াই	•••		•••	e e

नाम ।				পৃষ্ঠা !
মুরজান ও জগৎতারা		***	•••	99
নৈমত্লা বঃ গোপাল দাহা	•••	***	•••	98
পদ্মনাভবৈশ্	•••	•••	•••	b-0
পরশাপ মৃহাদেব পা	,	***	•••	90
পিটরসন	. •••	400		92
পিরাণ ওরফে গঞ্চাই ওরফে করিমন্	•••	•••	***	ลข
পীতাম্বর জিন		•••	•••	99
পুনাই ফতামা	•••	•••	•••	59
পূৰ্বচক্ৰ বন্দ্যোপাধ্যায়	•••	•••	•••	૨ 0
প্রতাপ ়	•••	•••	***	50
প্রাণকৃষ্ণ চক্র	•••	***	***	৩৪
ফটিক বিশ্বাস	•••	•••	***	Œ
ফর্বস ব: গিরিশচক্র ভট্টাচার্য্য	•••	•••	•••	99
वन जानि	. •••	***	•••	હ્ય
ব্রক্তুলা থাঁবঃ রেণী	•••	•••	•••	৬২
বলিয়ান খাঁ	, •••	•••	•••	96
বাজু (দেখ)	•••	•••	•••	2
व्कू नाक्	•••	•••	•••	95
বেট্স ও মহমদ ইদ্মাইল চৌধুরী	•••	•••	•••	৩২
বেলাতালী	•••	***	•••	Co
ভগাই দফাদার	. •••	•••	•••	ь
ভদ্রেশ্বরী চৌধুরাণী	•••	•••	•••	0b
७ वानी .	• • • • •	. •••	•••	re
ভূবনেশ্বর দত্ত	•	***	***	৮৬
टेज प्रमान निः	•••	***	•••	30
ভোলানাথ সেন	•••	•	•••	৬৮
মজফর থলিফা	•••	•••	•••	a >
মতি থোয়া	. •••	***	***	74
মথুরা ব: জুওয়াহের		•••	•••	95
মুদনমোহনু,	•	***	•••	సల

नाम ।					र्श ।
মনীকদ্দীন বঃ গৌরচক্র	সমক্ষার	•••	• • •	•••	e F
मित्रियम ((यारमक)		•••	•••	•••	9
মহমদ হুমায়ুন সা		•••	•••	•••	e۶
মহারাজ মিশ্র		***	•••	•••	80
মহিমাচক্র চক্রবর্তী (সা	কীর পরীকা)	•••	. •••	২৭
মহিমাচক্র চক্রবর্ত্তী (অ	ভিষোগের অং	ছ্মতি)	•••	•••	80
মহিমাচক্র সাহা		•••	***	•••	૭૪
মহেন্দ্রবারায়ণ বঙ্গভূষণ		•••	***	•••	8
মহেশচক্র বন্দ্যোপাধ্যায়	ī	•••	•••	• ••	२৫
मरहनठऋ थँ।		•••	•••	•••	58
মহেশ মিন্তী		•••	•••	***	৬৫
মাকৃতি দাদা		•••	•••	•••	৬২
মালিক		•••	•••	***	22
মিচু সরকার বঃ জে, এ	ह, द्रिटङम	•••	•••	•••	60
भिटिन वः यद्धियंत भूठी		•••	***	•••	bo
म्रायानी जानम		•••	•••	•	22
মেঘ		•••	•••	•••	bo
মেথন মিশ্র বঃ চম্মন তে	नी	•••	•••	•••	8
মোহন্ত ধনরাজ গিরীগে	विश्वामी वः 🔊	পতি গিরীগোষ	रांगी	• •	>>
রখু পাড়িয়া	•••	•••	***	•••	a a
রমজান দেখ	•••	•••	•••	•••	96
द्रस्य स्त्री	•••	•••	•••	•••	১২
রহিমত	***	•••	•••	•••	<i>e</i> 8
রাজকৃষ্ণ মিত্র	•••	•••	***	• •	৬
রাজকৃষ্ণ বিশ্বাস	•••	•••	***	•••	89
রাধু জানা	•••	•••	•••	•••	ર ર
রাধু সিংহ	***	***	•••	• • •	89
त्रामक्रक मान		•••	••••	***	82
রাসচন্দ্র মুখোপাধ্যার		•••	•••.	•••	२५
রামচরণ কয়রী		***	***	***	ર

	-10 ·			
ন্য।				পৃষ্ঠা ৷
রামটাদ	. •••	•••	•••	54
রামজয় মজুমদার	***	***	•••	99
রামঞ্জীয়	•••	•••	•••	54
রামটহল কাহার	•••	•••	•••	59
রামদয়াল তেওয়ারী বঃ শোভারামু	•••	•••	•••	9
রামদয়াল সিংহ	***	••	•••	90
রাম পা ঙা	•••	•••	•••	٤٤
রাম বিভগৌড়	••	•••	•••	25
রাম বিরাপা	••	•••	•••	\$?
রামমাণিক্য চক্রবর্ত্তীবঃ ধনঞ্জয় বরজ		•••	•••	bą
রামেশ্বর রায়	***	•••	•••	90
রামস্বামী পদয়াচী	•••	•••	•••	ده.
রপন রায়	•••	***	***	હર
লক্ষ গোবিন্দ	•••	•••	•••	હ્યર
লক্ষীপৎ সিংহ	•••	•••	***	y.
শভ সাহেব	•••	•••	***	e >
লুথী বেওয়া	•••	***	•••	>>
লোচা কালা	***	•••	•••	90
বন্ধবিহারী ঘোষ	•••	***	•••	٥.
বিশ্বনাথ পাল	•••	***	•••	319
বিশ্বস্তর দাস	•••	•••	•••	20
বৈকুণ্ঠনাথ সাহা	••	••	•••	C 13
देवनानाथ नाम	• •	••	••	bo
ব্ৰজনাথ দে ও যহ্নাথ দে		***	••	9.9
শভু বঘু	•••	•••	• •	90
শালিক		•••	***	93
শিব	. ***	•••	•••	65
শিবপ্রসাদ পাণ্ডা (নকক প্রাপ্তি)	***	•••	•••	13.9
শিবপ্রসাদ পাওা (অপ্রাদ)	•••	•••	• 60	20
ল্যাম বাগ্দী	•••	***	4	50

षांग ।		•				পৃষ্ঠা
শ্যামশঙ্কর মজুমদার			•••	•••	•••	65
শ্যামশঙ্কর বিশ্বাস ও	শ্যামচরণ	বিখাস	•••	***		٩
শ্যামস্থলর চৌধুরী			•••	••	••	\$
শ্ৰীকান্ত চাঁড়াল			•••	•••		b
সদরশন্ত, জে, ডি			•••	•••	•••	8৯
সফর ক্ষি	,	`	•••	•••	•••	5 0
সফেরদ্দী বঃ ইব্রাহিম			•••	•••	•••	৮৭
সমসের থাঁ	X 1		•••	•••	••	53
সমিয় কলান			•••	•••	•••	95
দৰ্ব ঐতাল			•••	•••	•••	93
সাদেৰ আলী			•••	•••	•••	00
সাহি রাহি			•••	•••	. • •	৮৬
সিয়ার বাহাত্ সাহির	বিক্লম্বে (.मदकशीव म	রখান্তে	•••	***	28
ञ्चान .			•••	•••	***	89
ऋदब्बनाथः तात्र	***		***	***		₹₩
স্টিধর পাড়ুই		4 + >	•••	***	•••	e۶
সেওতা ভগতা			•••	•••	•••	৬১
নেকায়েত আলী			***	•••	•••	٠ ৯
रूप्य			•••	•••	•••	98
इत्रशीविल पख मत्रक	ার		• •	•••	•••	89
হরগোবিন পাল			•••	•••		89
इत्रमत्रांग .	• •		•••	•••		26
इतनयान नाम	. •		•••	• •	***	8¢
रवञ्चन ती. की धूता भी			•••	***	***	٥٥
হ রিগিরী			• • •	••• ,	•••	8
হরিদয়াল কর্মকার			***	***	•••	b'à
হলধর পাড়ুই	* 1 *		• •	•••	•••	وه .
হাতু খাঁ			***	***	•••	eb
হারাণ মওল	. 2		•••	· •••	• • •	٠
হাদন আলী	***		•••	•••	•••	85
হিক্স			•••			ee



বেঙ্গল ল রিপোর্ট অতিরিক্ত ভাগ—২য় খণ্ড।

कुनरवकः।

শ্রীমতী মহারাণী বঃ এলাহি বর — ৪৫৯ পৃঃ।

সহাপরাধীর সাক্ষ্য — পোবকভা—১৮৬১ খৃঃ ২৫ আঃ ৪১৯,*

৪২৬ † ধারা। — নিশ্বতি রহিতকরণ।

এক কি ততোধিক সহাপরাধীর সাক্ষ্যের পোষক প্রমাণ ন্য় থাকিলেও দোষ নির্বর পক্ষে উক্ত সাক্ষ্য আইনতঃ প্রচুর প্রমাণ বিলিয়া গণ্য হইতে পারে। কিন্তু জুবীর প্রতি উক্ত সাক্ষ্য সমর্পন কালে জজের কর্ত্ব্য যে পোষক প্রমাণ না থাকিলে সহাপরাধীর সাক্ষ্য বিশ্বাস করায় আশস্ক্যা আছে, ইহা উল্লেখ করিয়া মোকদমার অবস্থাবাগ্য উপদেশ ও ব্যাখ্যা করেন। জুবীর প্রতি মোকদমার অবস্থা সংক্ষিপ্ররূপে বির্ভ করা কালে জজ উহা ক্রটি করিলে আইন-সংক্রেন্ত অম হয়, এবং আপীলে যদি আপীল-আদালভ বিষেচনা করেন যে উক্ত ক্রটি দ্বারা আসামীর অনিই হইয়াছে এবং সন্ধিচারের ব্যাখাত জন্মিয়াছে, তাহা হইলে উহা দোষনির্বয় রহিত করার একটী হেতু হইবে।

অঞ্জীমতী মহারাণী বঃ মুদমুৎ জমীরণ—৫২১ পৃঃ।

 মিশ্যা গাক্তা—জন্মতর অভিবাগ।

আসামী সাকীর্ষক্রপ মাজিটেটের সমক্ষে এক উক্তি করিয়া সেসদ আজের সমক্ষে ভাষার বিপরীত উক্তি করার, বিচার ব্ইরা জল

^{*} २৮१२ सृंद > • च्यांद्र राज्य सीता । † २৮१२ सृंद > • च्यांद्र २७ सीता ।

কিখা মাজিটের একভরের সমক্ষে মিখ্যা সাক্ষ্য প্রদানের অপরাধে দোষী সাব্যক্ত হয়। ধার্য হইয়াছিল যে ঐ দোষনির্ধয় আইন-সঙ্গত হইয়াছে। (নর্ম্মান ও ক্যাখেল জজ সন্দেহ্যুক্ত) আরও ধার্য হইয়াছিল যে (ক্যাখেল জজের অন্যমত) জজের সমক্ষে যে সাক্ষ্য গৃহীত হইয়াছে, তাহা মাজিট্রেটের সমক্ষে মিথ্যা সাক্ষ্য প্রদানের প্রমাণস্বরূপ গ্রাহ্য হইতে পারে।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বং রামচরণ কয়রা ও অপর এক ব্যক্তি (আপেলাণ্টগণ)—৪৮৮ পৃঃ।

मः विः ४६७, ४६१, ७৮० शाता ।--- श्रुकांत्रिजतार्ग शंतगृरह श्राटम ।

আসানী দণ্ডবিধির ৪৫৬ ও ৩৮০ ধারা মত দুইটা পৃথক পৃথক আপরাথে দোষী নির্ণীত হইরা মাজিট্রেট কর্তৃক উভয় অপরাধের জান্য দণ্ডিত হয়। আপীলে জজ সাহেব ৪৫৭ ধারার অপরাধ প্রামাণ ইইয়াছে বলিয়া ৪৫৭ ও ৩৮০ ধারার অপরাধের জান্য পুনর্কিচারের আদেশ বেন। ধার্যা হইয়াছিল যে পুনর্কিচার হওয়া উচিত নহে, কিন্তু ৩৮০ ধারাকুসারে অপরাধ নির্গা ও দণ্ডাজ্ঞারহিত হওয়া উচিত।

শ্রী মতী মহারাণী বঃ দেখ বাজু ওগয়রহ—৭৫০ পৃঃ।

হেলামালিপ্ত উভয়পকীয় আসামীগণকে একত্রে অভিযোগ করিয়।
সেসনে পাঠান মাজিপ্রেটের উচিত নহে; যেতেতু উভয় পক্ষের
লোকের সাধারণ উদ্দেশ্য থাকিতে পারে না। কিন্তু যেন্থলে একত্র
অভিযুক্ত বাক্তি ন্যাযারপে দোষী সাধ্যন্ত হইয়াছে, সেন্থলে ধার্য্য
হইয়াছিল যে, (ম্যাককরসন জজের অন্যয়ন্ত) মাজিপ্রেটের জন্ম
ভারা আসামীর কোন অনিক্র না হওয়ায় দেখিনির্ম রহিত করা
কিয়া পুনবিচারের আদেশ দেওয়ার উপযুক্ত কারণ নাই।

क अभावर संद अक्जांद २०७, २०१ मात्रा मृष्टि कंत्र ।

বেঙ্গল ল রিপোর্ট প্রথমভাগ।

कोजमात्री याशीन।

জী জীমতী মহারাণী বঃ নগরদ্দী পরামাণিক—০ পৃঃ।
১৮৬১ খঃ ২৫ আইন *৪১১ ধারা।—আপীল—পৃথক্ পৃথক্ অপরাধ।

কোন ব্যক্তি দণ্ডবিধির ১৪৩, ৪৪৭ এবং ২১১ ধারা অনুসারে অপরাধী সাব্যস্ত হইরা মাজিপ্রেট কর্তৃক প্রত্যেক অপরাধের জন্য এক এক মাসের কারাদণ্ড প্রাপ্ত হয়। ধার্য্য হইরাছিল যে ১৮৬১ খৃঃ ২৫ আইন ৪১১ ধারাক্রেমে আপীল চলিতে পারে না; পৃথক্ পৃথক্ দণ্ডাজ্ঞা যোগ করিয়া এক দণ্ডাজ্ঞা গণ্য করতঃ আপীল করার অধিকার নাই।

শ্রীশ্রীশতী মহারাণী বঃ যোদেক মরিয়ন—৫ পৃঃ।
বলাংকারের উল্যোগ।—শান্তি—দণ্ডাক্তা পরিবর্তন—দঃ বিঃ আইনের
৫৯, ৩৭৬, ৫১১ ধারা।

কোন ব্যক্তি বলাংকারের উছোগ অপরাথে দোষী সাব্যস্ত হইয়া
জজ সাহেব কর্তৃক সাত বংসরের জন্য কঠিন পরিশ্রমসহ কারাদণ্ড
প্রাপ্ত হয় এবং দণ্ডবিধির ৫৯ ধারার বিধানক্রমে উক্ত দণ্ডাক্তা তংপরিমাণ কালের জন্য দ্বীপান্তরবাসের আক্তায় পরিবর্তিত হয়;
ধার্য্য হইয়াছিল যে, দণ্ডবিধির ৩৭৬, ৫১১ ধারানুসারে উলিখিত
অপরাধে ৫ বংসরের অধিক কালের জন্য দণ্ডাক্তা হইতে পারে না,
মুক্তরাং ঐ দণ্ডাক্তা ৫৯ ধারার বিধানমতে ৫ বংসরের অধিক কালের
জন্য দ্বীপান্তর বাসেক্র দণ্ডাক্তায় পরিগত হইতে পারে না।

^{*} ১৮৭২ শৃঃ ১০ আঃ ২৭৩ ধারা।

প্রী এমতী মহারাণী বং মহেজনারায়ণ বঙ্গছ্মণ - ৭ পৃঃ।
১৮৬১ খৃঃ ২৫ আইন ৪১১, ৪৩৪, ৭৪৩৬ বারা। - অভিযুক্ত -

যদি কোন ব্যক্তি মাজিটে কর্তৃক এক মাসের কারাদণ্ডের আজ্ঞা প্রাপ্ত হয়, এবং যদি ঐ দংগাজ্ঞার বিকল্পে ১৮৬৫ খৃঃ ২৫ আইন ৪১১ ধারালুসারে আপীল না চলে, ভাহার মোকদ্দমা ৪৩৪ ধারার বিধানক্রমে হাইকোর্টের গোচরে অর্পিত হইলে উক্ত ব্যক্তি ৪৩৬ ধারার মর্মানুগত "অভিযুক্ত" ব্যাক্ত বলিয়া গণ্য হইতে পারে না, সুত্রাং সেসন আদালত ভাহার হাজির জামিন লইতে অক্ষম।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ চন্দ্রকান্ত চক্রবর্ত্তী—৮ পৃঃ।
১৮৫৫ খৃঃ ২ আইন ২৪ § ধারা।—মোক্রার ও মরাকেল—জুরির নিশ্বতি—
সংশোধনের কার্য্য-প্রণালী।

অভিযুক্ত ব্যক্তি ও সাক্ষী এই উভয়ের পরস্পরের মধ্যে যে কথা-বার্ত্তা হয় তাহা সংরক্ষিত কি না, এই প্রশ্ন জজের বিচার্য্য। যোজার ও ময়াক্লের মধ্যে পরস্পার যে কথাবার্ত্তা হয় তাহা ১৮৫৫ খৃঃ ২ আইন ২৪ ধারার অনুসারে সংরক্ষিত নহে।

জজ জুরির প্রতি ভ্রান্তিজনক উপদেশ দিয়াছেন এই হেতুবাদে হাইকোর্ট সংশোধনের আদালত স্বরূপ বসিয়া জুরিকর্তৃক যে নিরপরাধ সাব্যস্ত হইয়াছে ভাহা অন্যথা করিতে পারেন না 1

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ হরিগিরি—>> পৃঃ।
অপরাধন্দক নরহত্যা—ক্রোধান্ধতা—দঃ বিঃ ৩০০ থারা।

আত্ম-প্রভা-বিলোপী মনোবৈগের বশীভূত হইরা নরহত্যা করিয়াছে কেবল এইয়াত্র প্রমাণ করিলে হইরে না, কিছু ভাষার

^{*} ১৮৭२ गृह २० व्याह २१७ शाहा। ा २৮५२ गृह २० व्याह २७६ गीहा। इ. २५५२ गृह २० व्याह ७७० व्याहा। इ. ३५५३ गृह २ व्याह २२५ गाहा।

জরণ মনোবেগ হওয়ার উপযুক্ত কারণ বর্ডমান ছিল ইহা সপ্রমাণ না হওয়া পর্যান্ধ রাগান্ধভার বশীভুত হইয়া অপরাধয়ুক্ত নরহত্যা कतिरलं जाहा जानक यथ रिलश भगा बहरता

জীজীমতী মহারাণী বং ফটিক বিশ্বাস—১০ পৃং। মোকদ্মাষ্টিত কার্যান্তর্চানকালে মিথ্যা সাক্ষ্য প্রদান।--অভিযোগ পত্র--প্রমাণ-মাজিট্রেটের হন্তাক্ষর-দঃ বিঃ ১৯৩ ধারা।

मधिविधित ১৯৩ धातामा जाजियां जाजियां कार्यन कति इहेरन সপ্রমাণ করা আবশ্যক যে একটা মোকদমাঘটিত কার্যানুষ্ঠান চলিবার মধ্যে মিধ্যা উক্তি করা হইয়াছিল। উক্ত ধারানুসারে অভিযোগ প্রত্রে যে মোকদ্মাঘটিত কার্যানুষ্ঠান মধ্যে অভিযুক্ত ব্যক্তি মিথ্যা উক্তি করিয়াছে কেবল তাহা মাত্র নির্দেশ করিলে প্রচুর হইবে না, কিন্তু ঐ কার্য্যানুষ্ঠানের কোন বিশিষ্ট স্থলে অর্থাৎ প্রথম পরীক্ষা, জেরা কিষা পুনঃ পরীক্ষায় ঐ মিধ্যা উক্তি করিয়াছে ভাষাও নির্দেশ করিতে হইবে।

যে বিচারকের নিকট উক্তি করা হইয়াছে সেদন জজ ভাহার হস্তাকর জ্ঞাত আছেন বলিয়াই যে এ বিচারকের সমক্ষে এ উক্তি করিয়াছে এরপ প্রমাণ সিদ্ধ হইতে পারে না।

> হরিমোহন মালোর দরখান্তে, এী এীমতী মহারাণী বং জন্মকৃষ্ণ মুখোপাধ্যায়—২০ পৃঃ।

১৮৬১ বৃ ঃ ২৫ আহিন ৬২ * ও ৩০৮ + ধারা ৷—অনিটজনক বন্ত অপসারণ— অবরোধ নিবারণের আকা।

यथन काम याकसमा कादाविधित ७२ ७ ७०৮ এই উভয় शातात माबा পेए उपन माजिए हेर्ड श्रायकः धकवात कृष्ट बाखा श्रामन कतिराम ना ; श्रीकिशक्तक बाब्बात विकास कात्रन मर्माहेरा व्यवकाम দেওয়া ভাঁহার কর্তব্য ৷

^{# &}gt;৮१२ पुर २० व्यार देश्म श्राता । 📑 १४१२ पुर २० व्यार ६२५ श्राता ।

উক্ত ছই ধারার একভরের মধ্যেই হউক কিছা উভরের মধ্যেই হউক, কোন মোকদ্দমা পড়িলে মাজিট্রেট যে সকল ঘটনামূলে আজা প্রদান করিলেন তাহা সুস্পাইরপে বর্ণিত করিবেন।

কৌজদারীসংক্রীন্ত ওরিজিনাল বিভাগ ৷

শীশীমতী মহারাণী বঃ রাজকৃষ্ণ মিত্র—৩৭ পৃঃ।
জনির হত ভোলনবলী এবন—১৮৬৫ শঃ ১৩ ভাইন ৮ ধারা।

অপর এক যোকদ্যা শ্রবণকালে অভিযুক্ত ব্যক্তি উপস্থিত ছিল না। তাহাতে যে সাক্ষিণ সাক্ষ্য দিয়াছে আসামী উপস্থিত হইলে ভাহার বিচারকালে মাজিট্রেট ট্র সকল সাক্ষিগণের জোবানবন্দী ভাহাদের নিকট পড়িয়া শুনাইয়া সভাতা স্বীকার করাইয়া লন। যার্ঘ্য হইয়াছিল যে, এরপ জোবানবন্দী অবিহিত রূপে গৃহীত হইয়াছে, এবং ভাহার মূলে অভিযোগ সংস্থাপিত হইতে পারে না।

त्यांकस्यात नःकिश्च विवत्रव।

সম্পত্তি রক্ষার অধিকার।—দোষভাবে পরগৃহে প্রেশ।—৮ পৃঃ।
দোষভাবে পরগৃহে প্রবেশকারী ব্যক্তি শ্নাহন্তে গৃহ হইতে
পালায়ন করিয়া কিঞিৎ দূরে অবস্থিতি করা কালে সম্পত্তি রক্ষার
অধিকার ক্রমে ভাহার প্রাণনাশ করা,বাইতে পারে না।

काकियुक्त राक्तित भरोका->७ भृहे।

যেশ্বলে বাদীর সাক্ষ্য স্থারা অভিযুক্ত ব্যক্তির বিকল্পে কোন অপরাধ সংস্থাপনযোগ্য ঘটনা প্রকাশ হয় নাই ব্যক্তিটের এমত জন্বোধ হয়, সেম্বলে ভিনি অভিযুক্ত ব্যক্তিকে পরীকা না করিয়া ভাল করিয়াছেন। অভিযুক্তের পরীকা করা কি না করা, মাজিটেইটের সদ্বিবেচনার উপর নির্ভর করে।—(শ্যামশঙ্কর বিশ্বাস ও শ্যামাচরণ বিশ্বাস সংক্রাস্তঃ)

এক ডাকাইভি মোকদ্বনার জায়েন্ট মাজিট্রেট প্রমাণ নাই বলিরা আসামীগণকে ছাড়িয়া দেন, কিন্তু সেই সঙ্গে আসামীদিগের ৬ মাসের মধ্যে তলবমতে হাজির হইবার সর্ভে ২৫০ টাকার জ্বামিন দিতে হকুম দেন। ধার্যা হইরাছিল যে স্থদীর্ঘ ভদন্তের পর আসামী-গণকে ছাড়িয়া দিয়া জামিন তলব করা অন্যায়। (রামদয়াল তেওয়ারি বঃ সোভারাম।) ২৬ পৃঃ।

একটা শুক্ষনদীর জলদেশে হুটা বাঁধ দিরা কোন লোক পুক্রিণী নির্মাণ করিয়াছিল। ঐ পুক্রিণী বর্ষাকালে সাধারণের নদীর জল ব্যবহারের প্রতিবন্ধক এবং ভাহার বাঁধ জল অবকল্প রাখিয়া দেশের জল নির্গমের ব্যাঘাত করতঃ চতুঃপার্যস্থ আমের লোকদিগের স্থাস্থ্যের অনিষ্টকর ও শস্যের হানিজনক হইয়া জমির মূল্য হাসকরিতেছে বলিয়া মাজিট্রেট পুক্রিণীর অধিকারীকে বাঁধ ভাঙ্কিয়া দিভে আদেশ করেন। উক্ত পুক্রিণীর অধিকারীকে বাঁধ ভাঙ্কিয়া দিভে আদেশ করেন। উক্ত পুক্রিণী ৬ বংসর ঐ ভাবে বর্ত্ত-মান ছিল এমত প্রকাশ হয়। মাজিট্রেট কার্য্যবিধির ৬২ ধারার প্রতি বিশেষ লক্ষ্য করিয়া উক্ত আদেশ প্রচার করেন। হাইকোর্ট ধার্য্য করিলেন যে মাজিট্রেট ৬২ ধারাক্রমে উল্লিখিত আদেশ দিতে পারেন না।

विन न तिर्शिष्ठे विनेष्ठ जान ।

क्लादक।

শ্রী শ্রী মতী মহারাণী বা ভগাই দকাদার—২১ পৃঃ।
দেওরানী আনালভের পরওয়ারা আরীর প্রতিবন্ধকা—দভবিনির
১৮৬ যারা।—কোজদারী আনালভের এলাকা।

দেওয়ানী আদালতের পরওয়ানা জারীর প্রতিবন্ধকতা জ্বপ-রাধ কোজদারী কার্যাবিধি আইনারুসারে কোজদারী জাদালত কর্তৃক দতার্হ।

প্রীমতী মহারাণী বঃ শ্রীকাস্ত চাঁড়াল—২৩ পৃঃ।
১৮৬১ ধৃঃ ২৫ আইন ৩৬২ * ও ৩৬০ + ধারা।—অপরাধ
বীকার—আনেদর।

আসেরগণের অনুপদ্ধিতিকালে অপরাধ শীকার বুনিরাধে অভিযুক্ত ব্যক্তিকে সেসৰ আদালত দোবী সাব্যস্ত করিলে ঐ আজ্ঞা প্রবল থাকিবে।

कोकराही जाशीन।

হারাণ মণ্ডলের দরখান্তে—> পৃঃ।
দঃবিঃ ১৯১ ও ১৯২ ধারা।—দিখার পাক্তা-সক্তা পার্চ-১৮৬৫ পৃঃ
১১ আইন ২১ ধারা।

কোন ব্যক্তি ১৮৬৫ খৃঃ ১১ আইনের ২১ রারায়তে পুনর্কিচারের প্রার্থনা করে । ঐ ব্যক্তি সর্থান্তখরণ হেতৃর বুর্নাপত্র সভ্যপাঠ সম্বলিত দাখিল করে ও ভাষাতে জ্ঞানপূর্কক মিশ্যা উজি লিখে। বার্য্য হইরাছিল, (গ্লোভার জ্ঞান জ্ঞান্ত), বে ঐ ব্যক্তি দও-

^{*} ১৮१२ युः ১० व्याः २७१ स्थाः । † ३४१२ सृह ३० व्याः २७४ स्वाहाः

বিধির ১৯১ ও ১৯২ ধারামতে অপরাধ করে নাই, কারণ উক্ত বর্ণনাপত্তে সভ্যু পাঠ লিখিতে সে আইনত বাধ্য ছিল না।

মেথন মিশ্র বঃ চম্মন তেলী—৭ পৃঃ।
শান্তিরক্ষার জামিন—১৮৬১ খৃঃ ২৫ আং ২৮২ * ধারা।

শান্তিরক্ষার জন্য কোন ব্যক্তিকে নিবন্ধন পত্র লিখিয়া দিতে চূড়ান্ত আদেশ প্রচারের পূর্ব্বে অভিযুক্ত ব্যক্তি কিন্তা ভাহার প্রতিনিধির সমক্ষে মূল প্রমাণ গ্রহণ করা মাজিঞ্জেটের কর্ত্ব্যা।

শ্রী শ্রীমতী মহারাণী বঃ শ্যামস্থলর চৌধুরী—১১ পৃঃ।
শান্তিরকার মুচলিকা—এলাকা—১৮৬১ খৃঃ ২৫ আইন ২৯৩ + ধারা।

ক খর প্রতি শান্তিরক্ষার মুচলিকা দেয়। ঐ মুচলিকা ত জিলায় দেওয়া হয়। পরে স জিলায় ক খর প্রতি আক্রমণ অপরাধে অপরাধী সাব্যস্ত হয়। ধার্য্য হইল য়ে, কর মুচলিকার সর্ত্ত জব্দ হইতে পারে এবং ত জিলার মাজিপ্রেট ফোজদারী কার্য্যবিধির ২৯৩ ধারার বিধানমতে কর বিহুদ্ধে কার্য্যানুষ্ঠান করিতে পারেন।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বং সেকায়েত আলী—১২ পৃঃ।
ভালিয়ৎ—দঃ বিঃ—৫, ২৯ ও ৪৬৩ ধারা : — ক্রিম দলিল।

জালিয়ৎ অপরাধ স্থাপন করিতে কেবল ক্তিম দলিল-প্রস্তত প্রমাণ হইলেই যথেষ্ট : ঐ দলিল প্রচার করা হইয়াছে কিম্বা তাহা কোন বর্ত্তমান প্রাকৃত ব্যাক্তর নামে কি না ইহা প্রমাণ করা অনাবশ্যক !

ষে ব্যক্তি কোন লিপি প্রস্তুত করে সে যদি ঐ লিপি তদন্তর্গত বিষয়ের প্রমাণস্বরূপ পরিগণিত হইবে এমত বিশ্বাস করে কিয়া

১৮৭২ খঃ ১০ আরাঃ ৪৯১ ধারা। † ১৮৭২ খৃঃ ১০ আরি ৫০২ ধারা।

প্রমাণস্বরূপ পরিগণিত করার অভিপ্রায় করে, তবে উক্ত লিপি (তদন্তর্গত বিষয়ের প্রমাণস্বরূপ আইনত গ্রাছ্ম না হইলেও,) দঃ বিধির ২৯ ধারার মন্মানুগত দলিল বলিয়া গণ্য হইবে।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ তুলদী সিং—১৬ পৃঃ। আত্মরকার অধিকার।

যদি কোন ব্যক্তি বলপূর্বক ভূমির প্রকৃত দখলকারিকে বেদখল করিতে চেফা করে তবে দখলকারী ব্যক্তি উহার বিরুদ্ধে আপন দখল রক্ষা করিতে ক্ষমভাবান হইবে।

বঙ্কবিহারী ঘোষ সংক্রান্তে->৭ পৃঃ।

টোল অর্থাৎ কুত-বাকী খান্ধানা-বে আইনী গ্রেপ্তার।

সরকার বাহাছরের নিকট কোন কুতের ইজারাদারের খাজানা বাকী পড়িয়াছিল। মাজিট্রেট ভাহার নামে এই মর্ম্মে সমন বাহির করেন,—"ইজারাদারের বিকদ্ধে ২৬২ টাকা বাকী খাজানা আদার না করা অপরাধের নালিশ হইয়াছে; অভএব সে উক্ত অভিযোগের জবাব দিবার জন্য মাজিট্রেটের নিকট হাজির হয়।" নির্দিষ্ট দিনে ইজারদার হাজির না হইয়া দরখান্ত দ্বারা কোন কোন হেতু মূলে বাকী খাজনার দাবী মূলতুবী রাখিতে প্রার্থনা করে। পরদিবস মাজিট্রেট নিম্নলিখিত হুকুম প্রকাশ করিলেন,—"যেহেতু দারিক প্র ভিবাদী স্বয়ং হাজির না হইয়া সমন অবজ্ঞা করিয়াছে অভএব হুকুম হইল যে, তাহাকে গ্রেপ্তার জন্য ওয়ারেন্ট বাহির হয়।" পরে ওয়ারেন্টের উপর কার্য্যানুষ্ঠান হইল। ধার্য্য হইল যে মাজিট্রেটের সমুদ্র কার্য্যানুষ্ঠান অনিয়্মিত হইয়াছে স্কুতরাং রহিও হওয়াউচিত।

শীশীমতী মহারাণী বঃ কাবিল মাঝি ওগয়রহ—২৩ পৃঃ।
নোকা গমনের পথ অবরোধ—১৮৬৪ খৃঃ ৫ (বঙ্গার্ম) আইন।

কোন বক্তিকে ১৮৬৪ খৃঃ ৫ আইনের ১৬ ধারা মতে সরকারী খালে নৌকা গ্যনাগ্যনের পথ অবরোধ করা অপরাধে দণ্ডার্হ করিতে হইলে প্রমাণ করিতে হইবে যে সে স্বেচ্ছাপূর্বক প্রতিবন্ধক জন্মাইয়াছে।

জীতীমতী মহারাণী বঃ লুথী বেওয়া ওগয়রহ — ২৫ পৃঃ। অন্য ব্যক্তি রূপে পরিচয় প্রদান—রেজিটরি আইন।

বিক্রেত্রী অপের তিন ব্যক্তির সমভিব্যাহারে তাহার বিক্রয় কওলা রেজিইটরী করিয়া দেওয়ার জ্বা ঢাকা যাইতেছিল। পথিমধ্যে পীড়িত হওয়ায় সঙ্গীর অপের তিন ব্যক্তি রেজিইটরী আফিনে যায়। তাহাদের মধ্যে একজন বিক্রেত্রীর নাম ধরিয়া দলিল রেজিইটরী করিয়া দেয়, তাহাতে ঐ ব্যক্তি অন্য ব্যক্তির রূপ ধরিয়া বঞ্চনাকরণ ও আর ছই ব্যক্তি তাহার সহকারিতা অপরাধে অপরাধী নির্ণীত

ধার্য্য হইল যে, অভিযুক্ত ব্যক্তিগণ অন্য কোন ব্যক্তির অনিষ্ট কি অপকার করিতে অভিপ্রায় করিয়াছিল এমত প্রকাশ নাই, অতএব দশুবিধির ৪১৯ ধারা মতে না হইয়া ১৮৬৬ খৃঃ ২০ আইনের ১৩ * ও ১৪ * ধারা মতে দোব সাব্যস্ত করা উচিত ছিল।

মোহন্ত ধনরাজ গিরি গোস্বামী বঃ শীপতি গিরি গোস্বামী—২৭ পূঃ।

मधन—नार्कि किटकर्छ-->৮৬• শৃঃ २१ আইন--কাঃ বিঃ ৩১৮ + ধারা।

কোন মঠ लहेशा क এবং थ উভয়ের মধ্যে পরস্পর বিরোধ ছিল; কোজদারী কার্যাবিধির ৩১৮ ধারাকুসারে মাজিষ্ট্রেট ককে দখলিকার সাব্যস্ত করেন, পরে থ ১৮৬০ খৃঃ ২৭ আইনাকুসারে সাটি ফিকেট গ্রহণ করিয়া মাজিষ্ট্রেটের নিকট দরখাস্ত করায় তিনি ভাহাকে দখল দেওয়ান।

^{*} ১৮৭৭ শৃঃ ও আরি ৮২ ধারা। 🕴 ১৮৭২ শৃঃ ১০ আঃ ৫৩০ ধারা।

ধার্য্য হইল যে, মাজিট্রেট খকে দখল দেওয়ার ত্রুম আইনসঙ্গত নহে স্করাং রহিত হওয়া উচিত।

পরিশিষ্ট।

শীমতী মহারাণী বঃ রস্তলনশী ওগয়রহ—৯ পৃঃ।
পথ অবরোধ—১৮৬১ শৃঃ ২৫ আইন ৩২০ * ধারা।

যখন ক মাজি ট্রেটের নিকট কেবল এই মাত্র অভিযোগ করিয়াছে যে খ ও অন্যান্য ব্যক্তি কোন পথ অবরোধ করিয়াছে, ধার্য্য হইল যে এমত স্থলে মাজিট্রেট ১৮৬১ খ্বঃ ২৫ আইনের ৩২০ ধারামতে তদস্ত করিতে বাধ্য নহেন।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ চৌধুরী ওগয়রহ—২৮ পৃঃ।
১৮৬১ খৃঃ ২৫ আঃ ২৮৩ + ধারা—শাভিরকার মুচলিকা।

অপরাধজনক অনধিকার প্রবেশ ও অপকারের অভিযোগ ডিস্মিস্ করিয়া মাজিট্টে উভয় পক্ষের বর্ত্তমানে এই ত্কুম লিপিবদ্ধ করেন যে, কেন ভাহারা শান্তিরক্ষার মুচলিকায় আবদ্ধ না হইবে কোন নির্দ্ধিট দিনে ভাহার কারণ দর্শায়। থার্য্য হইল যে ১৮৬১ খৃঃ ২৫ আইনের ২৮৩ ধারামতে সমনজারির আবেশ্যক করেনা।

[🔹] ১৮৭২ খৃঃ ১০ আরি ৫৩২ ধারা। 👚 ১৮৭২ খৃঃ ১০ আরি ৪৯২ ধারা।

বেঙ্গল ল রিপোট' তৃতীয় ভাগ।

कोजुनाती जाशीन।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ কাবিলকাজী ওগয়রহ—> পৃঃ ।
বেআইনী জনতা—সাধারণ উদ্দেশ্য—জানকত বধ।

একদল লোক রাস্তার পার্শ্বে প্রাক্তরভাবে লুকাইয়া বিপক্ষদল রাস্তা দিয়া চলিয়া যাওয়ার কালে ভাহাদিগকে আক্রমণ করায় পরস্পার মারামারি আরম্ভ হয়। প্রথম দলের এক ব্যক্তি আহত হইয়া রাস্তার এক পার্শ্বে সরিয়া গিয়া দাঙ্গাহেঙ্গামা হইতে অবসর হইলে পর অপর পক্ষের এক ব্যক্তি খুন হয়। নর্মান জন্টিস্ (যাহার মত প্রবল রহিয়াছিল) ধার্য্য করিলেন যে, প্রথম আহত ব্যক্তি আঘাত প্রাপ্ত হইয়া যখন বিবাদক্ষেত্র হইতে সরিয়া যায় তখন হইতে সে বেআইনী জনভার লোক বলিয়া গণ্য হইতে পারে না, স্থতরাং পরে যে খুন হইয়াছিল ভাহার জন্য উক্ত ব্যক্তি দঃ বিঃ ১৪৯ ধারানুসারে দণ্ডনীয় হইতে পারেন না।

ইঃ জ্যাকসন জর্ফিস্ ধার্য্য করিলেন যে উক্ত ব্যক্তি তথনও বেআইনী জনতার ব্যক্তি বলিয়া গণ্য হইবে।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ ভৈরদয়াল সিং ওগয়রহ—৪ পৃঃ।

• ১৮৬১ শৃঃ ২৫ আং * ৬২ ধারা—কার্যপ্রণালী।

কৌজনারী কার্য্যবিধি আইনের ৬২ ধারার এমত মর্ম্ম নছে যে মাজিঙ্কেট পুলিশ কর্মচারির রিপোর্ট মাত্র শুনিয়া উক্ত ধারানুসারে আজ্ঞা প্রচার করিতে পারেন।

^{*} ১৮१२ ष्ट ३० जार ४১৮ साता।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ গোরমোহন সেন ওগয়রহ—৬ পুঃ। কার্যপ্রণালী—ইষ্টাম্প আইনামুসারে কালেক্টরের এলাকা।

১৮৬२ थुंः ১० আং ৫० शा २ अश्म मण्ड धकथानि अकर्मगा ইফাম্পের পরিবর্তে মুতন ইফাম্প পাওয়ার জন্য কালেক্টরের নিকট এক দরখান্ত করা হয়। কালেক্টর সাহেব দেখিলেন প্রভারণা উদ্দেশ্যে ঐ ইফাম্পকে জাল করিবার চেফা করিয়াছিল। পরে দরখান্তকারি-शंगक विठातार्थ को जनाती मार्गक कतिलन ।

ধাৰ্য্য হইয়াছিল যে, উক্ত দলিল আদালতে কোন কাৰ্য্যানুষ্ঠান সময়ে প্রমাণস্বরূপ দাখিল হয় নাই অতথব কালেক্টর ফেজিদারী कार्याविधित ১७२ † ७ ১৭১ ‡ शातानूमाति कार्या कति ए वाथा नरहन ।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ নবাব সিংহ ওগয়রহ—৯ পুঃ।

বিশেষ রেজিইরিযুক্ত দলিল জাল করা—অভিযোগের অনুসতি।

১৮৬৬ খৃঃ ২০ আং ৫৩ ধারানুসারে এক ব্যক্তি একখানি বিশেষ রেজেফুরিযুক্ত থত জারির জন্য ছোট আদালতের জজ সাহেবের সমীপে দরখাস্ত করিয়াছিল এবং রীতিমত তাহার উপর ডিক্রীর ত্রুম হইয়াছিল। পরে রেজিফুার উক্ত খত জাল জানিয়া ডিক্রী-দারের নামে ফোজদারী অভিযোগের অনুমতি দিলেন ৷ তথন ছোট আদালভের জজ কেবল মাত্র একখান দরখান্তের মূলে, অন্য কোন প্রমাণ না লইয়া অথবা আর কোন তদন্ত না করিয়াই পূর্কোক্ত ডিক্রী রহিত করিয়া ফোজদারী কার্যাবিধির ১৭০ ও ধারা অনুসারে क्षिमात्री अख्रियात्रात अनुमण्डि थानान कतिरलन। '

ধার্য হইল যে তিনি ফৌজদারী অভিযোগের অনুমতি দিতে পারেন বটে কিন্তু ডিক্রী রহিত্ করিতে সক্ষম নহেন্।

^{*} ১৮१२ शृह 5 खार १७ शहा।

१ ३४१२ थ ३ ३० व्यार १४४ शका।

[🗓] ১৮৭২ শৃঃ ১০ আহ ৪৭১ ধারা। 🔻 ১৮৭২ শৃঃ ১০ আইন ৪৬৯ ধারা।

শ্রী শ্রীমতী মহারাণী বং গোলক সিংহ ওগয়রহ—১০ পৃঃ। মিথ্যা সাক্ষ্য—কে) জনারী অভিযোগের অমুমতি।

যে আদালতের সমীপে মিথ্যা সাক্ষ্য দেওরা হইরাছে তিনি যে কোন সময়ে সাক্ষ্যদাতার বিৰুদ্ধে ফেজিদারী অভিযোগের অনুমতি দিতে পারেন, এমন কি আসামী সেসন আদালতে সোপর্দের পরেও দিতে সক্ষম।

গোপাল বর্ণওয়ার সংক্রান্তে—১০ পৃঃ।

১৮৬১ খৃঃ ২৫ আং ৩১৮ * ধারা—দঃ বিঃ ১৮৮ ধারা—ত্কুম অমান্য।

এক পক্ষে ক, অপর পক্ষে খ ও ভাহার প্রজাগণ—এই উভর পক্ষের মধ্যে বিবাদ হইলে ফোজদারী কার্য্যবিধির ৩১৮ ধারা অনু-সারে বিরোধীয় সম্পতিতে ককে দখিলকার সাব্যস্ত করিয়া মাজিপ্রেট হুকুম প্রাদান করেন।

ধার্য্য হইল যে মাজিট্রেটের সমীপে যে সকল ব্যক্তি প্রকৃত-প্রস্তাবে উপস্থিত ছিল উক্ত হুকুম কেবল তাহাদের উপরই প্রবল থাকিবে স্কুতরাং পরে যে সকল ব্যক্তি খর প্রজা হয় তাহারা উল্লিখিত হুকুম অমান্য করিলে ফৌজদারী মতে দণ্ডযোগ্য নহে।

শ্রীমতী মহারাণী বঃ কালীশঙ্কর সাণ্ডেল ওগয়রহ—১৪ পৃঃ। দওবিধি ২২৪, ২২৫ ও ৩৫৩ ধারা—সমন্ত্রীকৃত দও।

যেন্থলে বাস্তবিক একলিমাত্র অপরাধ করা হইয়াছে এবং যে কার্যাগুলি একটা অভিযোগের মূল সেইগুলিই অপর একটা অভিযোগেও আসমি দোষী নির্ণীত হওয়ার মূল, এমত স্থলে প্রত্যেক অভিযোগের দও একত্রিত করিয়া সমষ্ঠীকৃত দণ্ডাজ্ঞা হইতে পারে না।

অভিযুক্ত ব্যক্তিগণ ২২৪ ধারাকুসারে পলায়ন, ২২৫ ধারাকুসারে আইনমত কয়েদ হইতে মুক্ত করা এবং ৩৫৩ ধারাকুসারে মুক্ত করিবার

[#] ১৮৭২ খঃ ১০ আইন ৫৩০ ধারা।

কালে অপরাধযুক্ত বলপ্রকাশ অপরাধে অপরাধী সাব্যস্ত হইয়া প্রভ্যেক অপরাধের জন্য পৃথক্ পৃথক্ দণ্ডাজ্ঞা প্রাপ্ত হইয়াছিল। बार्श बहेल य जामारीगंग अविधी यां कार्या कतिशाहिल अवर ২২৫ ধারানুসারে ক্রমান্বয়ে অপরাধী এাণ্য হইয়া তদুর্যায়ী দণ্ডাজ্ঞা প্রাপ্ত হওয়ার যোগ্য।

> বাকর হালসানা বঃ দীনবন্ধুবিশ্বাস ওগয়রহ-->৭ পৃঃ। অপকার-দঃ বিঃ ৪২৫ ধাঃ অন্যায্য ক্ষতি-সজ্জের প্রমাণ।

বালী ও মহারাজপুরের জমিদারদিগের মধ্যে পরস্পর কোন জলকরের সত্ত্ব লইয়া বিরোধ হইয়াছিল। বালীর জমিদার দেওয়ানী আদালতে উক্ত জলকরে আপান সন্তু সাব্যস্তে ডিক্রী প্রাপ্ত হয়, কিন্তু ঐ মোকদ্দমায় মহারাজপুরের জমিদার কোন পক্ষ हिल न।। यए गा चारिकाहेवात छना यहाता छ शूरतत लारकता धक বাঁশের আডা বাঁধিয়াছিল তাহা বালীর জমিদারের চাকরগণ সরাইয়া ফেলে, একারণ ঐ সকল চাকর দওবিধি আইনের ৪২৫ ধারা মতে অপরাধী সাব্যস্ত হইয়া অর্থনতের আজ্ঞা প্রাপ্ত হয়।

ধার্য্য হইল যে, উক্ত অপরাধ নির্ণয় বাহাল থাকিতে পারে না, ষেহেতু মহারাজপুরের জমিদারেরা উক্ত জলকরে আইনত সত্ত্বান थाकात कान श्रंमान मर्मारे नारे, जर रेरां पृष्ठे रहा ना य প্রতিবাদিগণ (আপন মনিবের সত্ত্বের উপর আক্রমণ নিবারণ ক্রিভেছে এইরূপ) সরলভাবে বিশ্বাস ব্যতীত অন্য কোন ভাবে কার্য্য করিয়াছে।

বেহুলে (কোন পূর্ববর্তী বিচারে) আসামী অনুপদ্ধিতে সাকী-গণের যে সাক্ষ্য লওয়া হইয়াছিল ভাষা উক্ত আসামীর বিচারকালে

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ বিশ্বনাথ পাল (আপেলাণ্ট)—২০ পৃঃ। भून्दवर्की विहादत्रत्र मान्य-कार्यक्षणानी ।

माक्रीनंगरक नाक्षित स्राम एक, जनर गाक्रियन काराव गडाडा त्रीकात कतिरम केक जाका वर्षमात वर्षा विवत प्रतन स्वान स्वान स्वान प्रकृतिक एक ।

वार्या करेन हत. केंक्र कार्याहर्कात अगलक अनः जानामीत राक्त जनिकेक्यक । श्रेक्षण नीकीहरू जूनसीत बार्टनिक सेतीका कता केण्डि दिल, लेकार पूर्ववर्डी द्यानावक्की द्याक्कांश धार्व कता वार्रेटक गाहिक। किन्न ने क्यांनानवनी माकित मारका वाश व्हेटर না, ভাছার নাক্ষ্যের পোষকভা করিবে।

भूगर्विष्ठादात कारम्थ **एरेशाहिल ।**

 শ্রীশ্রীশতী শহারাণী বঃ পুনাই ফতামা ওগররহ—২৫ পৃঃ। मार्गुप्ति कर्तृक म्लू-अन्दादकरक मदश्का —सामकृष्ठ वद् ।

কডকঞাল সাপুড়িরা সর্পাষাত আরোগ্য করিতে পারে এইরপ প্রকাশ করিয়া অনেক ব্যক্তিকে আপন আপন শরীরে বিষয়র नर्भवाडा क्रमन क्डाक्ट श्रेड ख्याड । नर्भ-नर्भात छिन नाकित मृजा रहेशांदर ।

मार्च। रहेज्ञाहिम (य. यविन्त केंक व्यथनाथ मध्यविधित ७०० धातात क्ष वर्षिक क्यांत मध्या शहक मा, क्यांशि के बातात २ ७ ७ भर्म्त गर्ड कानकृष्ठ वय स्ट्रेट्र ।

কিছু বৰি অভিভূক ব্যক্তিগৰ ৰাক্তৰিক দৰ্শাঘাত আরোগ্য क्रिक्टि शास्त्र धरेक्या महत्र विचारम मुख वाक्तिगंगरक धर्फ महर्ष কাৰ্য্য দ্বীকার করিতে প্রাবর্তিত করিয়া থাকে ভাষা বইলে জানহত मर्भन्न कुन्। मर्क् व्यापन्नाबक्षमक मन्नक्ता। व्यापनाथ गणा स्टेर्स ।

জিজিগতী মহারাশী বঃ রামট্ডল কাহার—২৩ পৃঃ। श्कारक त्यांच-मान्य लववन मान्यिक मान्यान-व्यानमानक यक्ष नरवर-कानकृत नरवड कूना भटक जानवांश्वनक महरूका।

व्यक्तिक महिका की कार्यांक मुख वाकित शृंद नी व बहेना-हिन । पृष्ठवार्षि क्रिकिश्वा वायनात्री, त्य विनयाहिन त्य कान गतु- मिकित समा एक बीर्व दर्शक्त नामी खेरतास्मीय। अध्यक्त वांकि के कामाना केन किन्नी द्वारान क्षान क्रिक খীর জীর সভীত্ব দক্ত করিভেছে দেখিয়া উপর হইতে দক্ষ শ্রেকার कत्रियों উরোরাল देशि एक दाक्तित भेत्रीरहेत व्यक्ति देशिन विश्वाप करत के जावारिक नेतिएनरेंच के बीते नेका देत ।

बार्वी क्रेन रव क्लानंत्रक वर्षत क्लाताब मावाच क्रेडक लारेब मा; जीमक् व श्रदत जूना मटने अन्तारमूक नहें व्हार वेहें त्रार ।

> শ্রীপ্রিমতী মহারাণী বঁট হর্ময়াল — ৩৫ পৃচ। (সসন কাজের ক্ষমতা—যিখা। সাক্ষ্য-মন্ত্রিধি ১৯.৯.১৯৪ বারা।

बाक्षित छेटित मन्द्रक विष्या माक्या श्रीमान करात क्रमा प्रमन क्षक क्लिक्साजी त्रीशक कतिएंड शादाम ना। किंखु डीशा निक ज्यानाना विश्वा मोको निटने किकारी मिर्गि कितिए शांदान । জ্ঞানকভ বধের অপারাধে কোন আসামীর বিটারকালে এক সাকী मर्राथ कतिया (जनन जारानाइत नमत्क वर्ग य जेनां के दाकि উक कानक छ वर्ष केवितार छ। किंखु शूर्वि माकिर देखेत नगरक त्म विनेताहिन व अधियुक्ते चीकिर वर्ष कतिताह । याहा माजित्वे हिंत मग्राक वनियाष्ट्रिल ভारारे वाखविक यहेंना ।

बार्या करेबाहिन य छेकं नाकी मा वि:-- > इठ बाबाब जनवाब क्तिशाह्य, >३४ धार्तीत व्यवतीय करते नाहें; (यहिंदुं ते क्यानिंदें ना य ভाষাতে अभन्न योकि खीनक दियम अभने निर्देश मध भी है वि ।

জী শ্রীমতী মহারাণী বং মতি খোরা—৩৬ পৃঃ। क् कि निवान कियानदेशके क्यो वर्षा में हैं। (ना नर्क क्यो क्यका-विधा। नाका।

जुजितिशन क्यिमनद कोक्सादी कार्यादियित ३१३ बाहाजूमारत क्यान वाल्टिक चानिकार्क कविनानरहेत नगरके विदेश नोका छाना-त्वत क्रमा (कोक्रमाती त्यांशक कडिएक लादवर मी ।

কোন কেরাণী জুডিসিয়েন করিলাময়ের সমকে এই মর্ঘে সাক্য रमग्र,-" धक्षक प्रमिन साहा गोकीटक प्रके क्यांम बन्न छावा चानि-कांके कविमानतात मनत्क शृहीक क्षाताबनको नहीं, सेवा वर्षातः श्रीिका करारेश निरंगिक स्ता नवंश करेंशाक बनः केशाक चानिकाक कविनानत नाटक्षत चाक्कं मुक्के क्वेटक्टक् । " एक्का-ণীর উলিখিত লাক্য অভিযুক্ত ব্যক্তি বে বথারীতি জোবাৰকতী मित्राटक छाकात यथक ध्रमान मटक।

অত্রীমতী মহারাণী বঃ গজরাজ ওগররহ—৪০পঃ।

অভিযুক্ত ব্যক্তি কোন বিশেষ ভারিখে পার্চনায় ছিল ভাছার প্রমাণ বরূপ এক দলিল দাখিল কর। হয়। ঐ দলিলে অভিযুক্ত ব্যক্তি সভা পাঠ লিখিয়াছে এইরপ কথিত হয়। কিছু এ দলিল অভিযুক্ত ব্যক্তির যে সাক্রিড ভাহা প্রমানীকৃত হর নাই। ধার্য্য रहेशाहिल (य फेक पिलल প্রমাণস্করণ আহা নতে।

व्यामितकी अभवतर मःकारख—8৫ शः। स्र विः क्र शंश-क्रीजनात्री काशाविक्षकर बाता

क्रांन माजिएके है, श्लीरमयोनित अधिकात्रिश्न थे नकल जहत উচিত यक मल्क्जा नहेर्द, छुकूम व्यनाथा किया व्यशाना कतिल चारेनमा प्र पारेर- धरेत्रा धर हुक्य श्रांत कतिहा छारा-बिगंदक पश्चिवित्र ३४४ बाता मांछ मछ श्रामान करतम ।

शार्षा इरेन त्य त्कीव्यनांती कार्गाविधित ७२ धातानूमारत माजिरके हे अमल इक्न अनीन कंतिएक शादान ना। केक बातालूमारन त्य त्य इक्न मिश्रा यादेख लाहा खादा कान विलाब वाकित थाछ कान विलाव কার্যের জন্য হইবে, স্করাং মাজিকে,টের ঐ আজা আইনসঙ্গত नरह: जोतं नः वि: ১৮৮ बात्राञ्चनारत य माय नावाल वहेतारह जाश बाहेनविक्का

अभिवर्श महातानी वः कान महत्त्वन—89 शृः। विकाश मांका-काविक काका-अक्के क दे देश कादिन ५ के व वांता ।

कान मूट्यक थक शाक्तिक मधनिधित ১৯० थाता मट्ड मिथा। नाकार्शनात्मत व्यक्तिमार्था व्यक्तिय छम्छ कत्रात क्षमा माकिरके हित निक्र ल्यान क्रान ; वाक्षिक् हे उन्छ ना कतित्रा पूर्वाकत निक्र মোকন্ত্রা ক্ষেত্র পাঠান; মুক্তেক অবশেষে আসায়ীকে সেসনে माणकं करतन। धार्या इरेड़ाहिल त्य यपि पूर्णक क्लिकाडी कार्याविधित ১৭७ धाता अञ्चलादत्र आलागीतक मास्त्रिकी हैं नगीला विधा माकाश्रीमान व्यवसाद व्यक्तिय उपत्यत क्रमा ना शांठीहेता यहर ভাহাকে সেসনে সোপৰ্ক কৰিছে পারেন, তথাপি মাজিইটে ভদত্ত चन्नः मण्युर्व ना कतित्रा अनित्रयिखन्नाथ कार्या कतित्रारह्न । याकक्या यांकि छे , र्छत्र ममीरण (कत्र ज्यात्र ।

নয়নহাথ মেহতর শংক্রান্তে—৪৯ পৃঃ। क्ष विद १७ ७ १४ श्राहा-निक्ट्रिय कांत्रांचीन ।

कान वाकि वर्ज मिन कातावाम कतित जाहात मयस काम नित्रव-চিছারণে নির্জ্ঞান বাস করিবার জন্য তাহাকে দণ্ডাজা দেওয়া উচিত নহে। দ: বিঃ বঁ৪ বার। মতে নির্জ্ঞন কারাবাস কিছু দিন অস্তর অস্তর হওর। উচিত।

क्र्यानक क्रोंगिश मःकारस-८० शृः। मधीका विनय करा।

বে সময় দণ্ডাজ্ঞা প্রদন্ত হয় ভাহার কিছু দিন পারে এই দণ্ডভোগ चात्रल रहेत, धरे क्रम चार्रामंत्र चारेनमण कात्रन ना चाकिला, ख ভারিখে দথাজা দেওরা হর সেই ভারিখ হইভেই কারাদও আরম্ভ

^{*} ५५-१२म्: >० व्यक्ति ६९८ श्रामा (

ছওরা উচিত। কোজনারী কার্য্যবিধির ক্লা, 84, 1 ও ৪৮‡ থারার বে সকল ছলের উল্লেখ আছে ভড়ির জন্য ছলে মাজিটেট নিজ প্রান্ত বেতাজা কোন ভবিবাৎ তারিখ হইতে আরম্ভ হইবে এরপ আদেশ করিতে জক্ষা, এবং কোজবারী কার্য্যবিধির ৪২১§ বারার লিখিত ছল ভিন্ন জ্বাত্র বে ইউজ্লো ডৎক্ষণাৎ সন্পাণিত হওরা উচিত এমত আজা ছণিত রাখা বাইতে পারে না।

ছলালী বেওয়া বঃ ভ্বন সাহা—৫৩ পৃঃ। কোজনারী কাঃ বিঃ ৬৮, ১৮০ ধাঃ॥—সাক্ষ্য লিপিবছ বা করিক্স নালিব ডিসমিস।

আপিন জাতাকে অন্যার মতে করেদ রাখা বলিয়া ক খর বিক্ছে
অতিবাস করে । মাজিটেটুটের সমক্ষে দরখান্ত করার পূর্বের পোলিশ তদন্ত করিয়া মোকক্ষা মিখ্যা বলিয়া রিপোর্ট দিয়াছে । মাজিট্টেট কৌজদারী কার্য্যবিধি ৬৬ ধারানুসারে বাদির এজাহার না লইয়া পোলিসের কাগজ তলব দিয়া উক্ত আইনের ১৮০ ধারা অনুসারে মোকক্ষা ডিস্মিস্ করেন । ধার্য্য হইল যে মাজিট্টের কার্য্য আইনবিক্ছা; ১৮০ ধারানুসারে নালিশ ডিস্মিস্ করার পুর্বের বাদির পরীক্ষা লিপিবছা করা কর্ত্ব্য ছিল ।

জী জীমতী মহারাণী বঃ দয়াল বাউরী—৫৫ পৃঃ।

#ঃ বিঃ ৪১১ ও ৪৬৬ ধারা—অপরাধের উল্যোগ।

জাতিস গ্লেভার ধার্য্য করিলেন—বধন কোন প্রায়ে জনেক বার কাপড়ের গোলার ভিডর জ্বলম্ভ একথও করলাদারা গৃহদাহ কার্য্য ঘটিরাছিল ও জাসামী এক দিন সন্ধ্যাকালে ঐরপ জ্বলম্ভ করলা সহিত কাপড়ের গোলা ধৃতির মধ্যে লুকাইয়া লইয়া বাইডে

[#] ১৮११ मृद > श्वांट ०३ व भावा ।

[🕇] ३४१२ मृह > • व्यक्ति ७>७ श्राहा ।

^{‡ 35-42} म द 50 माद **७५**५ सामा।

[§] २৮१२ मृद्ध २० काहि २৮८ माता ।

[।] ১৮৭% ब्राट क ब्याद ५८८, ३८७, ३८५ वात्रः स्वर

দৃষ্ঠ হইরাছিল, তখন দঃ বিঃ ৫২২ বারাস্ক্রণারে আসাবী অগ্নিবারা আপকারের উদ্যোগ অপরাধে অপরাধী হইরাছে। কোল ব্যক্তি অগ্নির হারা অপাকার করার যন্ত্র গঙ্গে করিয়া লইয়া ইতক্ততঃ গখনাগমন করিভেছে দৃষ্ঠ হইলেই ঐ ব্যক্তি যে অপাকার করিবার বনস্ক্রিয়াছে এবং ভারা সম্পাদন করিবার জন্য অপ্রসর হইরাছে এইরূপ অসুমান করার ব্যেষ্ঠ কারণ হইরাছে; উদ্যোগ সাব্যস্ত করিতে উল্লিখিত কার্য্যুক্তি প্রচুর হইরাছে।

জন্তিদ মিত্র ধার্য্য করিলেন বে অগ্নিমর গোলা লংরা ইতন্ততঃ
গমনাগদন করিলেই দং বিং ৫১১ ও ৪৩৬ ধারার অপরাধ সাব্যন্ত
হৈতে পারে না; এই সকল কার্যন্তারা মনুষ্যের বাসবোগ্য কোন গৃহ
দাহ করিবার মনস্থ করিরাছে নিংসন্দেইরূপে এমড সিদ্ধান্ত করা যার
না। দণ্ডবিধির ৫১১ ধারা অনুসারে অপরাধ সাব্যন্ত করিতে হইলে
অভিযুক্ত ব্যক্তি কোন অপরাধ সম্পাদন উদ্দেশ্যে কোন প্রকাশ্য করিরাছে ইছা প্রমাণ করিলেই বধেন্ট হইবে না, ঐ প্রকাশ্য
কার্য্য অপরাধ করার উদ্যোগে সম্পাদিত হওয়া ইহাও প্রমাণ
করিতে হইবে:

শ্রীমতী মহারাণী বং রাখুজানা ওগররহ—৫৯ পৃঃ ।
১৮৬১ খৃঃ ২৫ আং ২৮৫, * ৩৯৬, † ৩৬৭ই ধারা।—আসাধীর পরীকা—থাজিট্রেট
কর্ত্তক স্বাক্তর—সাকী জোবানবক্ষী জন্য বিচার মূলতবী রাধা। *

কোন ভেপুটা ষাজিপ্তেট ডাকাইতি অভিযোগে আসাধীগণকে বিচারার্থে সেন্দ্র নোপর্ক করেন। করেক জন আসাধী ভেপুটা মাজিপ্তেটের সমক্ষে অপরাধ স্বীকার করিয়াছিল কিন্তু ভেপ্টা মাজিপ্তেট আসাধীর পারীকা লিপিবল্প করেন নাই অপ্তবা উহা কোজদারী কার্যাবিধির ২০৫ থারাত্রসারে আক্ষরিত করেন নাই।

[&]quot;১৮৭২ ধৃঃ ১০ আঃ ৩৪৬ বারা। ' 📑 ১৮৭২ খৃঃ ১০ আ' খণ্ডদ বাসা।

I अध्यक्ष के के का विश्व के के मात्रा ।

সেন জন তেপুটা মাজিটেট আসামীর বে পরীকা করিয়াছেন ভাষা প্রমাণ স্বরূপ গ্রাহ্য করিতে চাহিলেন না এবং বিচার মূলভবী রাথিয়া তেপুটি যাজিটেটেকে সমন হারা আনাইয়া ঐ সহদ্ধে তাঁহার সাক্ষ্য লইতে অস্বীকার করিলেন।

ধার্য্য হইরাছিল বে, প্রথমতঃ আসামীগণের পরীক্ষা প্রমাণ স্বরূপ গ্রাহ্য নহে, দ্বিতীয়তঃ বিচার মুলতবি রাখা কিয়া কোন সাক্ষিকে সাক্ষ্য দিবার জন্য তলব দেওয়া জজের সম্পূর্ণ স্বেচ্ছাধীন, হাই-কোর্ট সংশোধনের আদালত স্বরূপে উহাতে হস্তক্ষেপ কিয়া বিচা-রের আদেশ করিতে পারেন না।

জী জীমতী মহারাণী বং তুলশী দোশাদ—৬৬ পৃঃ।

কেবলমাত্র সহাপরাধির সাক্ষ্যে কোন অভিযুক্ত ব্যক্তির দোষ সাব্যস্ত হইতে পারে না।

কাশীকিশোর রায় চৌধুরী বঃ তারিণী শঙ্কর লাহিড়ি—৭৬ পৃঁঃ।
১৮৬১ গৃঃ ২৫ আইন ৩১৮ * ধারা – মাজিট্রেটের ক্মতা—শান্তিভক্কের সম্ভাবনা।

কোন দখল সম্পর্কীয় বিবাদে শান্তিভঙ্গের সন্তাবনা আছে, মাজিট্রেট যে হেতুবাদে এইরূপ বিশ্বাস করেন তাহা বর্ণনা করিয়া একটা কার্যাসুন্টান লিপিবদ্ধ না করা পর্যান্ত ১৮৬১ খৃঃ ২৫ আইনের ৩১৮ ধারাসুসারে দখলের বিচার করিতে পারেন না।

 ^{* &}gt; ४००२ थ् > + क्यांड ८:०० शांता ।

विक्न न त्रित्ना के क्षूर्य जाता।

कोकरात्री जाशीन।

শ্ৰীশ্ৰীমতী মহারাণী বঃ কোলা—৪ পৃঃ।
বিধ্যা দাক্য প্রধান –সাকীর পরপার বিরোধি উক্তি।

মাজিটেট ও সেদন আদালতের সমক্ষে পরল্পর বিরোধী উজি করার মিখ্যা সাক্ষ্য প্রদানের অভিযোগ হইলে থার্য হইরাছিল বে, মিখ্যা সাক্ষ্যের অপরাধ সাব্যস্ত করিতে হইলে এক আদালভের সমকে যে উক্তি করিরাছে ভাষা অপর আদালভের সমকে কত বিপরীত উক্তির অসভ্যভার প্রমাণ নহে। আরও ধার্য্য হইরাছিল যে জুরী কিয়া জজের এমত অনুমান করার অধিকার নাই যে উভার উক্তির সহিত সংক্ত কোন ব্যাখ্যা দেওয়া বাইতে পারিত না।

প্রীপ্রীমতী মহারাণী বং উদয় পাটনায়েক, ক্ষেত্র গৈতাল ও বিপ্র গৈতাল—৫ পৃঃ।

১৮৬৪ শৃঃ—৬ আইনের ৪ ধারা—বেত্রাঘাত — বিত্যারবার দোধ নির্ণার।
১৮৬৪ শৃঃ—৬ আইনের ৪ ধারা মতে প্রথম একবার দোধী
সাব্যস্ত হইয়া কারাবাস ভোগ করার পার বিতীয়বার দোধী সাব্যস্ত

रहेल विज्ञाचांक पक्ष प्रकृता केंक्जिं।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বং এয়াচিন সেথ—৬ পৃঃ।
ভানতবং—অপরাংজনক নরংড্যা—ওরুতর ও আক্ষিক ক্রোধ।
বখন কেহ গুক্তর ও আক্ষিক ক্রোধের দ্বারা আত্মসদরণপঞ্জি
রহিত হইয়া কোন ব্যক্তির প্রাণনাশ করে ভখন জ্ঞানকত ধ্রের

তুল্য নহে অপ্রাধ্যনক নরহত্যা হয়। কিন্ত যদি প্রথম মনোবেগের নির্ভি হইরা ছির হওয়ার সময় হইয়া থাকে তাহা হইলে জ্ঞান-ফুড বধ গণ্য হইবে।

প্রীমতী মহারাণী বঃ খাদেম সেখ-৭ পৃঃ।
অপরাধের সহারতা অপরাধ ঘটনার সংবাদ না দেওরা।
১৮৬০ খূ-৪৫ আইন ১০৭, ২০২, ৩৮২ ধারা।

অপরাধ ঘটনার সংবাদ দিতে ত্রুটী করিলে যদি ঐ ক্রেটীর দ্বারা আইনঘটিত কোন কর্ত্তব্য ভঙ্গ না হয় তাহা হইলে দঃ বিধির ১০৭ ধারানুসারে উক্ত ক্রেটি অপরাধের সহায়তা বলিয়া গণ্য হইতে পারে না।

পরিশিষ্ট।

মহেশচক্র বন্যোপাধ্যায় সংক্রান্তে

আজীমতী মহারাণী বঃ পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় ওগয়রহ

জীজীমতী মহারাণী বঃ কালীদরকার ওগয়রহ—১ পৃঃ।
১৮৬১ খৃঃ ২৫ আইন—১৬, ৬৮, ৭৬, ১৮৮, ২০৭, ২২২, ২২৪, ৬৬৭, ৬৮০ ধারা*—
অভিযুক্ত ব্যক্তিও সাক্ষিকে মৃতকরণ ও অবক্রম্করণ।

গরবি ও গুপ্ত ব্যক্তির নিকট হইতে সংবাদ পাইয়া যে বিশ্বাস জ্বেষ কৌজদারী কার্যাবিধির ৬৮ ধারার লিখিত জ্ঞানশন্দ দ্বারা অমত বিশ্বাসকে বুঝার না। ৬৮ ধারালুসারে ওয়ারেন্ট যাহাকে ৭৬ ধারায় বর্নিত এেপ্রারী ওয়ারেন্ট বলা যায় উক্ত ওয়ারেন্ট কেবল জ্বভিযুক্ত ব্যক্তিকে মাজিটোটের সমীপে হাজির করিবার উদ্দেশে বাহির হয়; উহা সেসনে সোপদ্দ করায় ওয়ারেন্ট নহে। উক্ত ওয়া-রেন্টের বলে মাজিটোটের সমক্ষে আসামীকে হাজির করিতে যে

^{*} ১৮৭२ व्हा ५० व्यक्ति २८८, २८२, २६३, ७६२, ७७२, ७०४, ००४, ১৯৪, ७६১, २७১ ७ २৮৭, बाह्रा क्रमावरत्र ।

পরিমাণ সময়ের আবশাক ভডোধিক সময় অবকল রাখা বাইতে शादि ना। अधिक काल अवस्त्र द्राथिए इहेरल आंत्राचीत नमस्क भागभ किया धर्मा उ প্রতিজ্ঞা করাইয়া সাক্ষ্য গ্রহণপূর্বক আসামীকে কোন অপরাধের অভিযোগ দিয়া ২২২ ধারানুসারে ওয়ারেট বাহির করিতে হইবে ৷

বৰ্ষন কোন সাক্ষিকে ধৃত করিয়া না আনিলে সাক্ষ্য দিবে না এইরূপ বিশ্বাসের বিশিষ্ট কারণ থাকে, কেবল তথনই মাজিট্রেট ১৮৮ ধারাসুদারে উক্ত দাকিকে গুডকরণ জন্য ওয়ারেণ্ট বাহির করিতে পারেন। উল্লিখিত ধারার মাজিটে টকে সাকী সেসনে **(मार्शिक् कतात अधिकांत एम्स नाहै।**

২২৭ ধারানুসারে যে সকল সাফাই সাক্ষির তালিকা দিরাছে यि थे नकन नाकित्क जानायी याजिए द्वेरित नयीश शतीका ना कतिया तिमन जोगोना कि कति एक रेक्का करत, छाइ। इहेरन माजिएक है ২০৭ ধারাক্রমে উক্ত সাকিগণকে তলব দিয়া তাহাদের সাক্ষ্য গ্রহণ করিতে ক্ষমবান নছেন; কিন্তু ২২৮ ধারার বিধান মতে সেসন আলালতে राष्ट्रित रहेवात क्रमा थे मकल माक्तित श्रीक मध्य निष्ठ याथा।

> গোলাম আরফিন ওগয়রহ সংক্রান্তে—৪৭ প্রঃ। (व-आहेनी कनजांद्र वाक्कि-मध्विधित > 8 अधांता ।

মৃত ব্যক্তির মাতাকে হরণ করাই কোন বে-আইনী জনতার সাধারণ উদ্দেশ্য, উহা সাধন পক্ষে জনভার এক ব্যক্তি মৃতের প্রাণবধ করে। धार्य। इहेल य প্রাণবধ কালে यादाता बाहाता বে-আইনী জনভাভুক্ত ছিল সকলেই ভাহার প্রাণবধ অপরাধের (मायी गंगा इहेरव।

প্রীক্রীমতী মহারণী বঃ গগালু মগালু ওগয়রহ—৫০ পুঃ I गुक गाकित (जातामवन्ती।

মৃত সাক্ষীর জোবানবন্দী ব্যবহার কালে প্রতিপক্ষ ভাহার মৃত্যু चीकात ना कतिल धवर क्यांवानवन्यी वावशास जाशकि कतिल প্রথমতঃ ঐ সাক্ষির মৃত্যু সপ্রমাণ করিতে হইবে।

আপ্রীমতী মহারাণী বঃ মহিমাচন্দ্র চক্রবর্তী—৭৭ পৃঃ। আসামীর সাক্ষী—১৮৬১ ধৃঃ ২৫ আঃ ২৬৫ * ধারা।

কৌজনারী কার্যাবিধির ১৫ † অধ্যায় মতে বিচারকালে মাজি-থ্রেট আসামীর সাক্ষি পরীকা করিতে অধীকার করিয়া ভাহাকে দোষী সাব্যস্ত করেন এমত স্থলে উক্ত দোষ নির্বয় রহিত হইয়াছিল।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ গোবর্দ্ধন ভূঁইয়া—১০১ পৃঃ।
আত্তরকার অধিকার—দওবিধির ৯৭, ৯৯ ও ১০২ ধারা—আগাদী দোব স্বীকার
করার পর অভিবোগ পত্রের পবিবর্ত্তন।

দণ্ডনিবির ১৭ ধারার বর্ণিত আত্মরকার অধিকার ১১ ধারার বর্ণিত নিষেধ দারা সীমাবদ্ধ, অর্থাৎ মনুষ্যদেহের অপারাধের বিকল্পে কেবল নিজ অথবা অপার কোন ব্যক্তি শরীররকার জন্য উক্ত অধিকার চলিবেক। ১০২ ধারা মতে যখন অপারাধের উদ্যোগ কিয়া ভর প্রদর্শন হেতু শরীরের প্রতি কোন অনিই আশহার উপায়ুক্ত কারণ উপন্থিত হয়, তথন হইতে আত্মরকার অধিকার আয়ন্ত হইবে; আর ১১ ধারার ৪র্থ অংশ দ্বারা আত্মরকার জন্য বে পরিষাণ অপাকার করা আবশ্যক তাহার অধিক আত্মরকার অধিকার ক্রেমে করা বাইতে পারে না।

चित्रक वाकि श्रीय निर्मित् चित्रियां शिव्यत व्यवसाध चीकात किति तिन कि श्रीयां मृत्के छाहात शिव्यर्जन कि ति छ। शांत्र कि ति विव्यास विव्

১ 🕈 ১৮৭২ পুঃ ১০ আঃ ২০৬ ধারা। 👚 🕇 🌣 ১৬ অধ্যার (সমনের মোকদ্দমা)।

বেঙ্গল ল রিপোর্ট পঞ্চম ভাগ।

कोजरां वी वाशीन।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ চন্দ্রশেথর রায়—১০০ পৃঃ।
আদানত অবজ্ঞা।

নিম্ন শৌজিফেটুট আপন আদালতের বিরুদ্ধে কেছ দণ্ড-বিধির ১৭৪ ধারার অপরাধ করিলে স্বয়ং বিচার করিতে পারি-বেন নাঃ যদি ভিনি মোকদ্দমা ভদস্কযোগ্য বিবেচনা করেন ভবে,যে মাজিফেটুট উহা বিচার করিতে কিম্বা সেসনে সোপদ্ধ করিতে পারেন ভাঁহার নিকট মোকদ্দমা পাঠাইরা দিবেন ঃ

শ্রীমতী মহারাণী বঃ রামচন্দ্র মুখোপাধ্যায়—১০১ পৃঃ।
১৮৬১ শৃঃ—২৫ আইন ৬২ * ধারা—অনিইজনক বন্তর অপসারণ।
এক পক্ষ এজাহার করে (পুলিস রিপোর্ট ভাহার সমর্থন করে)
বে কতকগুলি বৃক্ষে সাধারণের অনিউ করিতেছে। মাজিপ্রেট ঐসকল
বৃক্ষ কাটিবার একতরকা অনুমতি দিতে পারেন না।

শ্রীশ্রীশতী মহারাণী বঃ স্থরেন্দ্রনাথ রায় ওগয়রহ—২৭৪ পৃঃ 1

শাজিট্রেট—গ্রভ করণ—ওরারেন্ট—নালিশ কেরভ পাঠান—সোপর্ধ করণ—

ভাষিন ১৮৬১ শৃঃ ২৫ আইনের ৬৮ † ও ৭৭ ‡ ধারা।

বেন্দ্রল ক্ষতিপ্রত ব্যক্তি স্ত্রং রীতিমত নালিশ করিতে অর্থ-সর না হর কেবল ঐরপ স্থলে কার্য্যবিধির ৬৮ ধারা খাটিবেক।

^{* &}gt; ५१२ भ् ३ ३० खां ६८५ श्राता।

१ अध्यय्हरु व्यक्ति । ३ अध्यक्ति । ३ अध्यक्ति । ३ अध्यक्ति ।

উক্ত ধারার উদ্দেশ্য এই যে বার্ত্তি কাভিএক ব্যক্তি বারং অভিযোগ জানাইতে অনিজুক কিয়া অসমর্থ হয়, তথাপি মাজিট্রেট বাহাতে সদ্বিচার রক্ষিত্ত হয় তৎপ্রতি যয় করিছে পারিবেন। এরপা অবস্থাতেও একটা অপরাধ যে ঘটিয়াছে এমত জ্ঞান পাকা, ও ঐ জ্ঞান নিজের প্রত্যক্ষ কিয়া আইন সম্বন্ধীয় প্রমাণ ঘটিত হওয়া আবশ্যক, তাহা হইলেই মাজিট্রেটের ধৃত করিবার অধিকার জন্মিবে। মাজিট্রেটের ওয়ারেণ্ট বাহির করার অধিকার হওয়ার পক্ষে বাস্তবিক রীতিমত অভিযোগ অথবা শপথ পূর্বাক এজাহার আবশ্যক, তাহার ক্যান প্রাকার উক্তি কি পুলিস রিপোর্ট আইনত প্রচুর নহে।

বেছলে উপযুক্ত পুলিস কর্মচারির সাহায্য পাওয়া না যায়
আমাচ নিভান্ত প্রয়েজনীয় কার্য্য এমত হল ব্যতীত আর কোন
সময়ে ক্ষেজনারী কার্য্যবিধির ৭৭ ধারা অনুসারে সরকারী লোক
ভিন্ন অপর লোকের প্রতি ওয়ারেণ্ট জারির ভার অর্পণ করা উচিত
নহে। ধৃত করণের ওয়ারেণ্টের শক্তি আসামী মাজিফ্রেটের সমীপে
আনীত হওয়া মাত্র শেষ হইবে, এবং উপযুক্ত কারণ ব্যতীত আসামীকে আইনসন্থত রূপে জেলে কিয়া হাজতে দেওয়া যাইতে
পারে না; আর যেহলে প্রমাণ নাই সেধানে কোন প্রকার কারণও
থাকিতে পারে না। এই মোকদ্বনায় মাজিফ্রেট যদিও প্রমাণ লিপিরন্ধ করার পূর্কে আইনবিফল্প কার্য্য করিয়াছেন এবং মোকদ্বনায়
কোন কোন অবস্থায় সন্থিবেচনার অভাব দেখাইয়াছেন তথাপি
হাইকোর্ট আসামীসণকে সাফাই দাখিল করিবার জন্য মাজিট্রেট
বে আজ্ঞা দিয়াছেন ভাহা রহিত করিতে অন্বীকার করিলেন, যেহেত্
থ আদেশ একটী উপযুক্ত কর্মচারী বিচারকালে লিপিবন্ধ প্রমাণ
মূলে প্রকাশ করিয়াছেন।

शहिनिष्ठे ।

নবকুমার বন্দ্যোপাধ্যায়ের দরখাত্তে—৪৫ পৃঃ।

১৮৬১ শৃঃ—২৫ আইন ৩৬ * ধার। মাজিট্রেট কর্ত্ক নিম্নারেণী মাজিট্রটের
নিকট হইতে ঘোকদ্বয়া উঠাইরা লওরা।

উপযুক্ত কারণ না থাকিলে এবং যে সকল কারণ আছে ভাছা লিপিবদ্ধ না করিয়া কোন যাজিট্রেট নিম্নপ্রেণীর মাজিট্রেটের সৈয়েভা হইভে যোকদ্যা উঠাইরা লইবেন না।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বং রায় লক্ষীপৎ সিংহ—৮১ পৃঃ।
১৮৬১ শৃঃ ২৫ আইন ৬২ শরা—নিবেধপ্তক আজা।

কৌজদারী কার্যাবিধির ৬২ ধারানুসারে মাজিট্রেট নিষেধস্চক আজ্ঞা প্রচারের পূর্কে, কেন ঐরপ আজ্ঞা প্রচার হইবে না ভাষার কারণ দর্শাইবার আদেশ দিতে বাধ্য।

রামদয়াল সিংহ সংক্রোন্তে—৮৯ পৃঃ।
১৮৬৫ খৃঃ ২০ আঃ ৩৪ ধাঃ—গার্টিকিকেট না নইরা রেভিনিউ আদানতে
স্বোক্তারের কার্য করার জন্য অপরাধ।

উক্ত ধারাসুদারে মাজিট্রেট কর্তৃক অর্থদণ্ডের আক্তা আইন-বিকল্প। উল্লিখিত অপরাধ রেভিনিউ আদালভের বিচার্য্য

^{*} २४१२ थ ३ ३० व्यक्ति ६१ श्राह्मी ।

विक्न न दिला है यह जाग।

कूनदिशः।

শ্রীপ্রীমতী মহারাণী বঃ আববাস আলী চৌধুরী—৭৪ পূঃ।

৬২ ধারা মত মাজিকৌট যে নিষেধস্থচক আজা প্রদান করেন তাহা মোকদ্বমা ঘটিত আজা নহে; অতএব ৪০৪ ধারানুসারে উক্ত আজা হাইকোর্টের সংশোধনযোগ্য নহে।

জাইন কিয়ারের মতে—৬২ ধারায় যে ক্ষমতা দেওরা হইরাছে তাইা মোকদ্দমা বটিত এবং ৪০৪ ধারার "মোকদ্দমা বটিত" শব্দের অন্তর্গত। উক্ত ক্ষমতা ক্রমে মাজিপ্রেট যে ত্কুম দিবেন তাহা ব্যক্তিবিশেষকে কার্য্যবিশেষ করিবার জন্য আদেশ শ্বরূপ, স্করাং ৪০৪ ধারালুসারে হাইকোর্টের দ্বারা সংশোধনযোগ্য।

क्लोकपांत्री अतिकिनान।

শ্রীমতী মহারাণী বং নকুড় সরকার—৭২৯ পৃঃ।
প্রধান এবন বোগ্জ-কলিকাতা ছোট আদালতে কার্যান্তানের কানত।
বদিও কলিকাতার ছোট আদালতের সমনবহী অধিবিক্ত জজের
বাক্ষরমুক্ত না হয় তথাপি তাহা প্রমাণ বরূপ গ্রাহ্য হইবে।

कोकरादी वाशीन।

শ্রীমতী মহারাণী বঃ ওফাতুলা ওগররহ—৩৮১ পৃঃ।

লবণ কম—রওয়ানা ১৮৬৪ পৃঃ ৭ (বলীয়) আং ১৬ ধারা।
উক্ত আইনের ১২ ধারার লিখিত সীমার মধ্যে ৫ সেরের অধিক
বে লবণ পাওয়া যায় ভাহা বিজ্ঞায়া এবং ধৃত করণ যোগ্য বে সকল

ৰ্ব ১৮৭২ শৃঃ ২০ আঃ ৫১৮ ধারা। 📑 ১৮৭২ শৃঃ ১০ আঃ ২৯৭ ধারা।

ব্যক্তি ভাহা স্থানান্তরিত করিভেছিল ভাহারা ১৬ ধারাসুসারে দতার্হ। বিক্রের করিবার উদ্যোগ কিয়া অভিপ্রার প্রমাণ করা অনাবশ্যক।

> জী জীমতী মহারাণী বঃ রূপন রায়—২৯৬ পৃঃ। আনাধীর ক্তি পুরণ—১৮৬১ খৃঃ ইং আং ১৫ শ অধ্যার।

বেশ্বলে বাদী পরস্পার রিরোধী উক্তি করিয়া আপন অভিযোগ সংস্থাপন করিতে পারে নাই তথন মাজিকৌট তাহাকে মিথ্যা সাক্ষ্য প্রদান অভিযোগে কৌজদারী সোপদ্ধ করিলেও অভিযুক্তকে কার্য্যবিধির ১৫ অধ্যায় অনুসারে ক্তিপুরণ দেওয়াইতে পারেন।

পরিশিষ্ট ৷

অভয় চৌধুরী বং টি, ত্রে সাহেব — ১৪৮ পৃঃ। শান্তিরকা মুচসিকা—মোকদ্মাষ্টিত তদত—প্রমাণ—পোলিশের রিপোর্ট।

শান্তিভঙ্গ করণ যোগ্য বিবাদের অন্তিত্বসম্বন্ধে মাজিঙ্রেট আইনসঙ্গত প্রমাণ না লইয়া কোন পক্ষকে শান্তিরক্ষার জন্য মুচলিকার আবস্ক করিতে পারেন না।

শান্তিভক্ষের সম্ভাবনা আছে বলিয়া পোলিস যে রিপোর্ট দেয় ভাহা শান্তিভক্ষোপযোগী বিবাদের অভিত্যের আইনসক্ষত প্রমাণ নহে ৷

বেট্স ও মহম্মদ ইসমাইল চৌধুরীর দরখাত্তে — ৮৩ পৃঃ।

অপর এক মোকদ্বনায় আলামীর অবর্ত্তমানে বে লাক্ষ্য কওরা হইয়াছে ভাহার-বুনিয়াদে আলামীকে দঃ বিঃ ১৫৪ মারার অপ-রাথে দোবী লাব্যস্ত করা হইল উক্ত দোষ নির্বিয় রহিত ইইয়াছিল।

^{*} ১৮१२ थृः ১० जाः ১৬ व्यशोत्र (नगरनत्र (सांकक्सा)।

মেজর ফর্বেস বঃ সিরিশচন্দ্র ভটাচাহ্য— ত পৃঃ। দঃ বিঃ ৪২৫ ধারা—গোমেবাদির ছারা ভ্রুক্রপাত।

বাহাতে গোমেষাদি ক্ষেত্রের মধ্যে যাইতে না পারে তৎপক্ষে অধিকারির সাবধানতার ক্রেটী মাত্র হইলেই দঃ বিঃ ৪২৫ ধারার মর্মানুগত ক্ষেত্রের মধ্যে গোঞ্চ প্রবেশ করাইয়া দেওয়া গণ্য হইতে পারে না। প্রধারা মতে অধিকারির দোষ সাব্যক্ত করিতে হইলে ইহা সপ্রমাণ করিতে হইবে যে অপরের ক্ষতির সম্ভব জানিয়া সেবান্তবিক গোমেষাদি প্রবেশ করাইয়া দিয়াছে।

গোলাব খাঁর দরখান্তে—৮০ পৃঃ।

যোক্তার-১৮৬৫ খু ২০ আইন ১৬ ধারা-মোক্তার সম্পণ্ড করণ।

উক্ত ধারামতে কার্য্য করিতে হইলে মাজিট্রেটের কর্ত্ব্য যে মোজারের নিকট অভিযোগ পত্তের একধানি নকল প্রেরণ ক্রিয়া অভিযোগ প্রবর্গের দিবস ধার্য্য করত নোটিস প্রদান করেন।

জাঁহা বকস বঃ সরকার বাহাত্র—৬৬ পৃঃ।
মুচনিকার সর্প্ত জন্ম-শান্তিরকার জন্ম মুচনিকা দেওরা।

কর দরখান্ত ক্রেমে খর নিকট হইতে ছয় মাস শান্তিরক্ষার জন্য ৫০০ টাকার মুচলিকা লওরা হর, উক্ত কাল গভ হওয়ার পূর্কেই থ গকে আক্রেমণ করে।

ধার্যা হইরাছিল বে মুচলিকার সর্ভাজক হইতে পারে।

কায়েমুদ্দীন বঃ আল্লা বকস—১৩৩ পৃঃ।

তোহা—দঃ বিঃ ৩৭৮ ধারা।

थियान ७ कमा थता हिनांव श्रेष्ट मांकात्नत करत्रकथानि वर्षे हाए कित्रा कारत्रकृतीन हार्ष वामान छ स्टें कि वाहित हरेता वामिए कित्रा कारत्रकृतीन हार्ष वामान छ स्टें का वाह्यावकनं कारत- यूकीत्नत मथल हरेए वर्षे छिल मरेता कारत्रकृतीत्नत व्यन्तिश्रीत्त व्यन्तिश्रीत्त वाह्या वाह्या कारत्रकृतीत्नत व्यन्तिश्रीत्त व्यन्तिश्रीत्त व्यन्तिश्रीत्त व्यन्तिश्रीत्त व्यन्तिश्रीत्त व्यन्तिश्रीत्त व्यन्ति व्यव्या वर्षे वर्षे

क्षना उपस मुगडवी तारथन।

সকল সরিকানের এজমালী দখলে থাকা সম্পত্তি একজন সরিক বিজ খাসদখলে লইলে ৩৭৮ বারায় বর্ণিত চৌর্যা অপারাধ হয় না।

মহিমাচন্দ্র সাহার দরখান্তে—৭৮ পৃঃ।
প্রমাণ-আসানীর সান্দিগণকে সমন করা—১৮৬০ গৃঃ ২৫ আইন ২৫০ * ধারা।
মোকভ্ষার অবস্থা অবগত আসামীর পাক্ষে সান্ধিকে মাজিট্রেটের
সমন করা কর্ত্তা। ভাহাদের সান্ধ্য কভদূর বিশাস্যোগ্য ভাহা
পুর্কেই সিদ্ধান্ত করা অনুচিত।

त्मिष्ट्ना वः त्शिशान माहा—७ शृः।

১৮৬১ বাং ২৫ আইন ও ১৮৬৯ বৃং ৮ আইন ২৪৪, ১৮০ ও ৩০৮ ধারা †।
দও বিঃ ৪৩১ ধারা মতে এক ব্যক্তি ডেপুটী মাজিপ্রেটের সমক্ষে
অভিযুক্ত হয়। ডেপুটী মাজিফেটুট বাদীর এজাহার লইয়া আসামীর হাজির জামিন লয়েন। যদিও বাদীর সাক্ষা উপস্থিত ছিল ভেথাপি ভাহাদিগকে পরীক্ষা না করিয়া তিনি অকারণ দীর্ঘকানের

জেলার মাজিটেট নথী তলব দিয়া এবং কাগজ দৃষ্ট করিয়া বিবেচনা করিলেন যে ফোজদারী আদালতের হস্তক্ষেপ করিবার যোগ্য মোকক্ষা নহে, ও আসামীকে খালাস দেন। ধার্য্য হইয়াছিল যে কোন অপরাধ সাব্যস্ত হয় নাই মাজিটেটের এই অনুমান যদি যথার্থ হয় তাহা হইলে তিনি আসামীকে ছাড়িয়া দিতে কেবল ক্ষমবান এমত নহে বয়ং বাধ্য।

প্রাণকৃষ্ণ চন্দ্র ও অপর এক ব্যক্তির দরখান্তে—৮০ পৃঃ।
দঃবিঃ ৬৮০, ৪৪৭ বারা—অপরাধয়ক্ত অন্যকার প্রবেশ।

একারত্ত , হিন্দু পরিবারক্ এক ব্যক্তি সাধারণের বাঁশগুহে প্রবেশ করিলে অথবা ভাহার অনুমতিক্রমে কোন অপরিচিত ব্যক্তি গুহে প্রবেশ করিলে অপরাবযুক্ত অনধিকার প্রবেশ হর না 1

^{*} ১৮৭२ सूं ३ २० जांद २५७ बांता । † ५৮१६ सूं ६ २० जांद इहर,२८५ छ ५८१, ४३० बांता ।

প্রিক্তির মহারাশী বঃ বন্দমালী—১৫ পৃঃ। দত রন্ধিনত পরিবর্তন-বেরন্ত-১টন পরিবাদন কারান্ত।

পরস্থেই প্রবেশ অপরাধে কোন ডেপুটী মাজিট্রেট আসামীকে ছর মাস কারানও ও তৎসঙ্গে বেত্রাঘাতের আজ্ঞা দেন। আসামীর উহা প্রথম অপরাধ বিধায় অভিরিক্ত বেত্রনও বেআইনী ব্রির করিয়া জভ্জ তাহা রহিত করিয়া পরিবর্ত্তে আরও তিন মাস কঠিন পরিপ্রথম সহ কারাদতের আদেশ দেন। ধার্য্য হইল যে উক্ত দণ্ডাজ্ঞা পরিবর্ত্তন আইনসন্থত নহে।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ বিশ্বস্তর দাস—১২২ পৃঃ।
১৮৬১ শৃঃ ২৫ আইন ৩৭০* ধারা—কেমিকেল এক্জামিনরের রিপোর্ট।
কেমিকেল এক্জামিনরের আসল রিপোর্ট প্রমাণস্থলে দাখিল
ক্রিতে হইবে।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ গুরুচরণ চঙ্গ ওগয়রহ—৯ পৃঃ।
হাছামা—অপ্রাধ্তনক নরহত্যা—দঃ বিঃ ১৪৮ ও ৩০৪।

কতকগুলি লোক আসামীদিগের শস্ত্য কাটিয়া লইবার উদ্দেশ্তে হঠাৎ ভাহাদিগকে আক্রমণ করে। তখন পোলিসে নালিস করিবার সময় ছিল না। আসামীগণ আক্রমণ প্রতিরোধ করিবার জন্য এক খণ্ড বাঁশের দ্বারা এক ব্যক্তির উপার আঘাত করে। ঐ আঘাতে আহত মাজির পরিশেষে মৃত্যু হয়। সেসন জজ আসামীগণকে দঃ বিঃ ১৪৮ ও ৩-৪ ধারানুসারে দোষী সাবাস্ত করেন।

হাইকোর্ট আসামীগণকে নির্দ্দোষী সাব্যস্ত করিয়া ছাড়িয়া দেন এবং বলেন যে আসামীগণ যে বল প্রকাশ অথবা অনিষ্ট করিয়াছিল ভাহা ভাহাদিগ্রের সম্পত্তি রক্ষার অধিকার অভিক্রেম করে নাই।

সাক্ষী সাক্ষ্য প্রদানযোগ্য হইলে, মান্যকারী কোন প্রশ্ন জিজ্ঞাসা না ক্ষানেও, বিপক্ষ ভাষাকে জেরা করিছে পারে।

[&]quot; শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বং ঈশান দত্ত ওগয়রহ—৮৮ পৃঃ। প্রমাণ—বেরা।

^{*} अभ्वय थ ६ ३० जाः भरद शता।

প্রি প্রীমন্ত্রী মহারাণী বঃ কালীনাথ বিখাস->>৩ পৃঃ। >১৮৬২ পৃঃ ২৫ আইন ২৯৮ শ বারা-শান্তিরপার মুচনিকা।

ক এক বংশরের জন্য শান্তিরক্ষার মুচলিকার আবিদ্ধা হইরা কাশ গভ না হইতেই জন্যান্য লোকের সহিত বিবাহে লিপ্ত হইরাছিল। ভেপুটা যাজিট্রেট যোকদায়া কোজদারী কার্য্যবিধির ২৯৮ বারা অনুসারে সেসনে অর্পণ না করিয়া ককে পুনর্মার আর এক বংসরের জন্য মুচলিকা দিতে আদেশ করেন।

शार्या इहेग्राहिल त्व थहे जाका जाहेनिविकत ।

প্রীপ্রীমতী মহারাণী বঃ কুরজান ও জগৎতারা—৩৪ পৃঃ।
দঃ বিঃ ৩৭২,৩৭৩ ধারা।

স একটা ১৬ বৎসরের হ্যানবরকা বিবাহিতা মুসলমান বালিক।
আপন পিতামহী নর নিকট বাস করিত এবং স্বামীর অবর্ত্তমানে ছই জন হিন্দুর সহিত ব্যাভিচারিণী হইয়াছিল। ন তাহা
ভাত ছিল। উক্ত হিন্দুরা স ও ন উভয়কে গ্রামান্তরে উঠিয়া যাইতে
পরামর্শ দেয়। তথায় জ নামক এক বেশ্যার সহিত তাহাদের দেখা
হইলে উহার বালিতে বাস করিতে যায়। যে সকল ব্যক্তি মর
নিকট আসিত জ তাহাদের নিকট টাকা লইত এবং স ও নকে যে
বাস করিবার জ্বান ও আহার যোগাইত তাহার পরিবর্তে ঐ টাকা
গ্রহণ করিত। ন দঃ বিঃ ৩৭২ ধারা অনুসারে এবং জ উক্ত আইনের
ত্বত ধারানুসারে দোষী সাব্যক্ত হইয়াছিল।

জ্যাকসন জজ-দশুবিধি মতে কোন অপারাধ কৃত হয় নাই। গ্লোভার—ন ও জ ক্রমান্বয় ৩৭২ ও ৩৭৩ ধারার অপারাধ করিয়াছে।

শুরবর্গী অপরাধ দাব্যক্তের প্রমাণ।

क शृद्ध (मायी मादाख वरेत्राट्ड, यहारक्ष्यक वरेत्रश दिक्कित्र शृद्धवर्जी (माय मादारखन श्रेयान नरह।

^{*} ১৮१६ ब्रंड > • च्यांड ब०१ श्रोहा ।

बांबलय बज्यमाद्यत मत्रबादल --७१ गृह । ১৮৬১ थ १-- २४ आदिन छ ১৮৬৯ भ १ ४ आदिन छ।, २२४, ८०४, ८०४ शातां । ছাড়িছা দেওবার পার পুনব্দার কার্যাস্থান।

यथन कान अचित्रक वाकित्क एजूनी मालिए के किनाती कार्याविधित २२४ शाता अञ्चलद्भ अधिम जनत्सन शत छाड़िया तन क्लात माजिद्धे के बार्त्वत अर बातानूनादत शूनकात जारात विकास क्लांजनाती जावेन मा कार्यतानूकान कतिएक शादान । वार्ववी काल करवन, ১৮৯৯ थुः ৮ जाः ८०१ शाहागरक व कार्यानुकान चात्रच ब्हेबाट्ड जाहात मरामाधानत विधान चार्ट्ड। ३४७० प्र ७৮ शातात जूजन कतिता कार्याजूष्ठीन कतियात विशाम आहर ।

> निवश्रमाम शांखांत मत्रशांत्य— ৫৯ %। প্রমাণ-দলিল-আনামীর অবিকার ৷

আসাৰী আশৰ দাকাইর জন্য আদালতে দাখিলী কোন কোন पनित्तत्र नकल हाटि। धार्या इहेन त्य माजिए देवे डेक प्रतथाल অগ্রাহ্য করিয়া এম করিয়াছেন।

नक ज्रजा जागारी त्र नकन पनित्तत्र नकन চাহে এবং বাহা সে স্বীর সাক্ষাইর জন্য প্রায়েজনীয় বোধ করে ভাহার নকল পাইতে ভাৰার অধিকার আছে। যাজিএই কিয়া জল বিনি र्याकक्षात्र विष्ठात्र कतिरवन, याकक्ष्मा ध्वंतनकारण विधिरवन स् आंत्रामीत माधिनी मनिन श्रमां यत्रणं आंद्य इटें जात कि मा।

[•] ১৮१२ बृह ३० जाइ ३हरू, ১৯৫, २৯१, २৯५ थाता ।

विक्रम न दिएशा में मक्षत्र जागा।

क्वातक।

মনীরকীন বঃ পোরচন্দ্র সমঙ্গার—১৬৫ পৃঃ।
বেজ্বদত্ত—১৮৬১ শৃঃ ২৫ আইন ৪৬ * ধারা।

আসামী তিনটা পৃথক পৃথক অপরাথে দোষী সাব্যস্ত হইরা দওবিধির ৩২৫ থারা মত ইক্ষা পূর্বাক পীড়াজমান অপরাথে এক মাস কারাদ্রা, ৩৭৮ থারা মতে চৌর্য্য অপরাথে ২০ বেত্রাঘাত দত্তের আজা পাইয়াছিল। থার্য্য হইয়াছিল (কেলা ও ক্লিরার জজের অন্যমত) যে এ দওাজা আইনসঙ্গতঃ যে স্থলে কোন ব্যক্তি এককালে ছই কি তভোধিক অপরাথে দোষী নির্ণীত হয় সেম্বানে থার্য্য হইয়াছিল (কেলা ও কিয়ার জজের অন্যমত) যে দওবিধি আইনের বিহিত মতের অভিরিক্ত বেত্রনত দেওয়া আইনসঙ্গতঃ

क्लेकमां वाशीन।

ভদেশরী চৌধুর। গীর দরখান্ত সংক্রান্তে।

১৮৬১ খঃ—২৫ আইন ৩১৮ ধারা—পোলিন রিপোর্ট—লাভিভন।
কৌজনারী কার্যাবিধির ৬১৮ ধারানুসারে মাজিটেট কার্যানুষ্ঠান
করিবার পূর্বে প্রমাণ ঘারা জৃদ্বোধ হওয়া উচিত বে শান্তিভনযোগ্য বিবাদ বর্তমান আছে। পোলিন-রিপোর্ট প্রমাণ নহে।

কলিকাতার উপনগরের মিউনিসিপল কমিশ্যনরগণ বঃ আমানত আলী ওগয়রহ্ (প্রতিবাদিগণ)—৫১৬ পৃঃ।
১৮৬২ ধুঃ ২৫ আইন ৩০৮, ৩১০, ৩১১, ৩১০ ধারা ‡ কলাইশাদা।

যধন কোন মাজিট্রেট কোজদারী কার্য্যবিধির ৩০৮ ধারংমতে সাধারণের খান্ধ্যের অনিউজনক বলিয়া কোন ব্যবসা ও কারমার

১৮৭২ পূর ১০ আরও ৬১৪ বারা। † ১৮৭২ পূর ১০ আর ৫০০ বারা।
 ১৮৭২ পূর ১০ আরি ৫২০, ৫২০, ৫২৫, ৫২৭ বারা।

বন্ধ করিতে আজা যেন: তখন নিম্নাধিত স্থল ক্রিন্টাইকোট হত-কেপ করিবেন না । প্রথমতঃ ঐ ব্যবসার সাধারণের স্বাস্থ্য ও হ্থ-স্বক্ষভার অনিউজনক এই বিষয়ে মাজিট্রেটের সমক্ষে উপায়ুক্ত প্রমাণ না থাকে ৷ বিভীরভঃ বে সকল কারণ প্রদর্শিত হয় ভাহাতে মাজিট্রেটের হাদবোধ হওয়া উচিত ছিল যে উক্ত ব্যবসা বন্ধ করার হতুম ন্যায়সঙ্গত নহে।

কলিকাতার উপনগরের মিউনিসিপল কমিশ্যনরগণ বঃ
মাহাযুদ আলী ও অপর এক ব্যক্তি—৪৯৯ পৃঃ।
১৮৬১ খৃঃ ২৫ আইন ৩০৮,৩১১, ৩১১,৩১৩ ধারা — কসাইধানা।

একটা পুরাতন কসাইখানার অবস্থা ও তাহার কার্যপ্রশালী নাজনিক অনিউজনক ও প্রতিবাসিগণের স্বাস্থ্যের ব্যাঘাতজনক ছিল, ইহা সপ্রমাণ হইয়াছে। কিছু ঐ কসাইখানা স্থাপনের সময় হইতে বেরপ অবস্থার ছিল তাহা অপেকা একণে মন্দ অবস্থা হইয়াছে এমত প্রমাণ নাই। কসাইখানার অধিকারিগণকে তলব দিয়া আনাইলে তাহারা ক্ষেত্রদারী কার্যবিধির ৩১০ ধারামতে পঞ্চায়তের প্রার্থনা করিল না।

ধার্য্য হইরাছিল যে মাজিট্রেট ৩০৮ ধারানুসারে ঐ ব্যবসায় কিয়া কারবার বন্ধ করিবার ত্রুম দিতে ক্ষমবান ছিলেন। যত দীর্ঘ-কাল ভোগা কৰক না কেন ভাছাতে সাধারণের অনিউজনক বিষয় আইনসিদ্ধ হইতে পারে না।

প্রী এ মহারাণী বং আমিরুদ্দীন—৬০ পৃঃ।

দিলন—প্রমাণ।

" ভারতবর্ষীর গেজেটে কিয়া কলিকাতা গেজেটে ত্রিটিস রাজ্যের সীমাবর্জী মুসলমান ধর্মোমাদ ব্যক্তিগণের সহিত যুদ্ধ সম্পর্কীয় যে সকল সরকারী চিটা প্রচারিত হয় তাহা ১৮৫৫ খৃঃ ২ আঃ ৬ ও ৮

[#] ३৮१२ थुड ७० जार ६२०, ४२७, ४२४, ६२१ शहा ।

वातार बट्ड डेक वृद्ध चातक, क्या व व्यय ब्रंक्ता मवट्ड व्ययोगतटन প্রাহ্য হইবে। আর ভত্তপ উক্ত ৬ বারাতুসারে পঞ্জাব গবর্ণবেটের লেক্রেরীর নিকট হইতে ভারতবর্ষীর গবর্ধমেন্টের নেক্রেটরীর নিক্ট cella प्रशासिक किंठी चामालक कर्कक क्याम विवासन शतिकारनम क्या निम चन्नभ प्रकोठ करेए भारत है के नक्स विस्त काराबीरक वृक्षादेश (मण्डा व्यावनाक करत ना। कि छेटमान के मनिन शृदीक হইয়াছে ভাহা বুৰাইয়া দিলেই বৰ্ষেট হইবে।

জ্ঞিজানতী মহারাণী বঃ গিরিশচন্দ্র ঘোষ ওপররহ—৫১৩ প্রঃ। श्चीकम्बा केंग्रीया मध्य ।

शार्या इरेग्नाहिल त्य माजिद्धि कान त्यांकक्रमा त्क्रभूति बाजि-**ट्रि**टिंड निक्टे मार्शक कतिया श्रवसात क्लेखवाती कार्याविधित ७७ ने शताजूनात्त्र त्रीजियक कार्याजुकीन निर्णियक ना कतित्रा चत्रर के साक्ष्ममात्र विषात कतिएक शास्त्रम ना ।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ কাশীচন্ত সাহা ও মহিমারঞ্জন রায় क्रीश्रुती- १२२ शः।

১৮৬১ बृह--०১৮ I--अन्य शृक्तक शाका--श्रक्तक प्रथम ।

श्रीकृष्ठ मथालव अधिकात नावास कत्रण केरमान क्रिकाती कार्याविधित ७>৮ शाता अनुमादत कार्याञ्चीम कारम अश्र कहाहेश्रा সাক্ষা এছৰ করা উচিত।

> জীত্রীমতী মহারাণী বঃ মহিমাচক্র চক্রবর্ত্তী —২৬ পুঃ। अन्धे के इ. ३६ कांड ३१०, १६ § शांदा !

क ১০০ টাকার অধিক বাকী খাজানার নালিশ করার খ গ ও ষর বিৰুদ্ধে ডিক্রী হয়। এ মোকদ্মায় থ প্রভৃতির দাখিলী কভক-श्रील मिलन कान बिलिया बार्या क्वेटल क राज्यूमी कांत्रक्राद्वतत

^{* :} ৮९२ में ६० क्यांड ६९ शांता । t अध्यय भ हअ । क्यां 84 व्यासी ।

শ ২৮৭২ পূচ ২ আছি ৫৭ ধারা। শ ২৮৭২ পূচ ২০ আছে ৪৭ ধারা। ই ২৮৭২ পূচ ২০ আছি ৫৩০ ধারা। টু ২৮৭২ পূচ ২০ আছি ৪৬৯, ২৮৩ ধারা।

निकि हे हे एक थे ७ शब नास कि जा मान एक जा स्वारा का निकि है है एक थे ७ शब नास कि जा मान एक जा मान एक जा मान एक जा मान है इत जा मान के लिया के जा मान के लिया के लिया

প্রী প্রীমতী মহারাণী বঃ রামকৃষ্ণ দাস—৪৪৬ পৃঃ।
দণ্ডবিধি ১৬১ ধারা—সরকারী চাকর—অন্যাব্য পারিভোষিক।

কালেক্টরী কাছারীর এক পেয়াদা সরকার হইতে কোন নির্দ্ধিট বেতন পাইত না কিন্তু যথন কোন পরোয়ানা জারি করিত তথন ভাহার ফীস্ পাইত এবং ভাহার নাম অতিরিক্ত পেয়াদার রেজিফিরীভুক্ত ছিল। মাজিট্রেট উক্ত পেয়াদাকে একদিন স্পেসিয়াল সব রেজিগ্রারের কাছারীতে কার্য্য করিতে ছকুম দিয়াছিলেন। তথায় কোন ব্যক্তির নিকট একটী আধুলী লওয়ায় অন্যায্য পারিভোষিক গ্রহণ অপরাধে অভিযুক্ত হয়।

ধার্য্য হইল যে উক্ত পেরাদা দঃ বিধির ২১ ধারা ৯ম অংশের সংজ্ঞানুসারে সরকারী চাকর বলিয়া গণ্য হইবে এবং তাহার বিকদ্ধে অভিযোগ চলিতে পারে।

তকি মহম্মদ বঃ কৃষ্ণনাথ রায় ওগয়রহ— ৭ পৃঃ।
বাদী গরহাজিরে অভিবোগ ডিক্মিন্ এমাণাভাবে
আসামীকে ছাড়িয়া দেওয়।।

্থাষ্য হইয়াছিল যে আসামী সমন দ্বারা তলব কিষা ওয়ারেণ্ট দ্বারা ধৃত হইয়া কোন অভিযোগের জবাব দিতে হাজির হইলে यनि बामी ও ভাষার সাক্ষীগণ শোখন্য ক্রমে হাজির হইছে ক্রচী करतं छरव २२८ बात्रा विवानमर्फ के बाककमा मूलख्वी द्वाथात বিশেষ কারণ না দেখাইলে অভিযুক্ত ব্যক্তিকে ছাড়িয়া দেওয়া कर्द्धवा ।

পরিশিষ্ট ।

কাপ্তান বঃ জি এম্ স্মিথ—২৫ পঃ। আক্রমণ-পীড়া জন্মান-দঃ বিঃ ৩৫২-১৮৬১ খৃঃ ২৫ আঃ ৫৫ ধারা*।

मः वि: ७६२ भारतंत्र व्यश्ततात्थत विठान वहेहा मूक्ति हहेला, **छे**क নালিশে পুনর্কার পীড়া জন্মান অপরাধে বিচার হইতে পারে না।

> 🖻 🕮 মতী মহারাণী বং তুর্গাদাস ভউচোর্য্য—৩৭ পৃঃ। **श्रक्-गृ**हिनको ।

এক ব্যক্তি আসামীর প্রতিভূ হইয়া নির্দারিত দিবদে তাহাকে राजित कतिए ना भातात, एज्यूषी गाजिए देवे जागिनीत मञ्जू जक করিবার হুকুম দিয়া প্রথমতঃ আসামী, দ্বিতীয়তঃ প্রতিভূর অস্থাবর সম্পতি ক্রোক ও বিক্রয়ের আদেশ প্রদান করিলেন। আসামী মুচলিকাপত্র বাক্ষরিত করে নাই এবং প্রতিভূর প্রতি কারণ দশাইবার কোন নোটিস জারি হয় নাই।

ए शू मि या जि द दे हिंद एकू या देन दिक का विश्व विश्व

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ গোষ্ঠলাল দত্ত—৬২ পৃঃ। १४७३ थड २६ कार्रिन २०६ । श्रीता-चाकत ।

আসামীর পরীক্ষার মধ্যে ভাহাকে যে যে প্রশ্ন করা হইয়াছিল ও সে যে যে উত্তর প্রদান করিয়াছে তৎসমুদয় বর্ণিত আছে এবং ভাহার উত্তরের অর্থ করিতে কিছা ভাহাতে অন্য কথা যোগ করিতে

व्यानामीत यांधीत्र छ। हिल, अर नकल कथा मालि हिए छैत लिथिए ए रेंद क्षिण मात्री कार्य दिश्व २०६ धातात गर्य अग्र नर्द । भेतीकात निम्न जारा यांकत थाकि लाहे क्षेठ्र करेला। किन्यू मत्म क्रिल कार्या-क्रुष्ठान यथानित्रम हरेता हि कि ना अठ९ मद्य क्षिक माका अवन कता गारे छ भारत।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ হরগোবিন্দ পাল—৫৭ পৃঃ।
১৮৬৯ খৃঃ—৮ আইন ৩১০ * ধারা—ছুরার নিম্পত্তি—ছুরীর নিমোগ।

নির্দিষ্ট দিবদের বহুদিন পরে জুরীর প্রান্ত নিষ্পত্তি যাজিষ্টেট এইণ কিম্বা বলবৎ রাখিতে পারেন না। যে জুরীর মুখ্য ব্যক্তিকে যাজিষ্টেট মনোনীত করিয়াছেন এবং আর সকল ব্যক্তিকে উভয় পক্ষে মনোনীত করিয়াছে এমত জুরী ৩১০ ধারানুসারে উচিত মত নিযুক্ত হয় নাই।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ কালীচরণ মিশ্র ওগয়রহ—৫৫ পৃঃ।
মোকদ্বমার অনুসন্ধান—চৌধ্য—সাকাই— ডিস্মিন্দ্ করণ।

অভিযোগ ডিদ্মিদ্ করার অথ্রে তৎসাপক্ষে প্রমাণ প্রবণ করা মাজিপ্রেটের কর্ত্ব্য। চৌর্য্য অপরাধে অভিযুক্ত ব্যক্তি অপ-হৃত বস্তুতে মালিকী সত্ব দাবী করিলেই অভিযোগ অথ্যাহ্যের কারণ হয় না।

জীজীমতী মহারাণী বং মহারাজ মিশ্র ওগয়য়হ—৬৬ পৃঃ।

দঃ বিঃ ১৯৩ ধারা। মিথ্যা দাক্ষ্য প্রদানের অভিযোগণতের আকার।

এক অভিযোগ পত্তে ৬ ব্যক্তি নিম্ন-লিখিত রূপে অভিযুক্ত হইয়াছিল—"ভোমরা জুন মাসের তারিখে তাজপুরে মোকদ্দমাঘটিত কার্যানুষ্ঠানের মধ্যে ইচ্ছাপুর্বক মিথ্যা সাক্ষ্য দিয়াছ স্কতরাং দঃ বিঃ ১৯৩ ধারার অপরাধ করিয়াছ।"

ধার্য্য হইরাছিল বে উক্ত অভিযোগ পত্র অভদ্ধ ও অসম্পূর্ন। প্রথমতঃ—বেহেতু উহাতে ৬ ব্যক্তিকে এক যোগে মিথ্যা সাক্ষ্যের অভিযোগ করা হইরাছে। ২রত:—কোন উক্তি আসামীগণ মিথ্যা বলিয়াছে তাহার উল্লেখ নাই। ৩য়ত:—অপরাধ করার তারিখ ও বংসরের উল্লেখ নাই। ৪র্থতঃ—কোন আদালত কিয়া কর্মচারীর সমকে মিথ্যা সাক্ষ্য দেওয়া হইয়াছে ভাহা প্রকাশ নাই।

১৯৩ ধারানুসারে মিখ্যা সাক্ষ্য প্রদানের অপরাধ সাব্যস্ত করিতে - হইলে প্রমাণ করিতে হইবে যে অভিযুক্ত ভাহার জ্ঞানতঃ ইচ্ছা-পূর্বক বিশেষ একটা উক্তি মিখ্যা বলিয়াছে।

বেঙ্গল ল রিপোর্ট অফ্টম ভাগ।

कुलदबक्ष ।

প্রীপ্রীমতী মহারাণী বঃ হরলাল দাস ওগয়রহ বঙ্গদেশীয় গবর্ণমেণ্টের দরখাস্তে—৪২২ পৃঃ।

মাজিট্রেট সব রেজিষ্ট্রার রূপে বে অভিযোগ রুজু করিয়াছেন ভাষার বিচার শ্বয়ং করা—১৮৬৬ থূঃ ২০ আঃ।

কোন ব্যক্তি ১৮৬৬ খৃঃ ২০ আঃ ৯০ এবং ৯৪ খারা মতে অপরাধ করে। উপরিস্থ রেজিঞ্জারের অনুমতিক্রমে সব রেজিঞ্জারের পদে থাকিরা বিচার-কারী মাজিঞ্জেট তাহা স্বয়ং কজু করিয়াছিলেন বলিয়া তাহার কার্য্যানুষ্ঠান আইনবিকদ্ধ এবং এলাকাবহিভূতি কিছা অন্য কোন রূপে অভদ্ধ হইবে না। কিছু এমত স্থলে অপর মাজিস্ট্রেটের দ্বারা মোকদ্দমার বিচার হইলে ভাল হয়।

পরিশিষ্ট ৷

গোরমোহন সিংহের দরখাত্তে—>> পৃঃ।
১৮৬৯ শৃঃ৮ আইন ২৪৯ * ধারা—দঃবিঃ ২১১ ধারা।

এই মোকদ্দমার বাদী কতকগুলি ব্যক্তির নামে ডাকাইতির অভি-যোগ করে। পোলিস তদন্ত কালে বাদী পোলিসের কার্য্যানুষ্ঠানে অসম্ভই হইরা, ডেপুটী মাজিইটুটের সমীপে পোলিসের নামে পক্ষ-পাতিত্বের অভিযোগ করিয়া, তাঁহাকে বৃরং ঘটনান্থলে গিয়া অভি-যোগ সাপেক্ষ দাক্ষ্য গ্রহণ করিতে প্রার্থনা করে। ডেপুটী মাজিইটুট ঐ সম্বন্ধে কোন্ কার্য্য না করিয়া পোলিস রিপোর্টের অপেক্ষা করিতে লাগিলেন্। পোলিস মোকদ্দমা মিথ্যা বলিয়া রিপোর্ট দেয়।

^{*} ১৮৭२ थः ১० कार २५८ शहा ।

ভেপুটী মাজিটোট আর কোন প্রমাণ গ্রহণ কিয়া তদস্ত না করিয়াই ২১১ ধারার অপরাধ জন্য বাদীকে বিচার করিবার আদেশ দেন। আমরা (হাইকোর্ট) বিবেচনা করি যে যদিও ১৮০ ধারা মতে মাজিটোটের বিবেচনায় কার্যালুষ্ঠানের উচিত কারণ না থাকা মনে করিয়া তিনি নালিশ ডিস্মিস্ করিতে ক্ষমবান, তথাপি এই মোক-দ্নমার বাদীকে ২১১ ধারালুসারে অভিযোগ করার পূর্কে ভাঁহার স্বরংতদস্ত করিয়া দেখা উচিত ছিল যে পোলিসের কার্য্য বাদীর বর্ণনালুরূপ পক্ষপাতমুক্ত ছিল কি না।

প্রী প্রীমতী মহারাণী বঃ হরগোবিন্দ দত্ত সরকার—১২ পৃঃ।
রবিবারে বিচার—১৮৬১ খৃঃ ২৫ আইন ১৭১ * ধার।।

রবিবারে মোকদ্মার বিচারের দিন ধার্য্য করা অন্যায়। রবিবার প্রসিদ্ধ ছুটীর দিবস, সাক্ষী হাজির না হইতে পারে।

জী শীমতী মহারাণী বা দারিকানাথ হাজ্রা—৯ পৃঃ।
১৮৬৪ খ্রস্বীর ৩ আইন ৬৭ † ধারা। বাটাতে মরদা রাধার জন্য অর্থনও।
বাটার নিকট ময়লা রাখিলে স্থানের প্রকৃত বাসকারী মাত্র দণ্ডযোগ্য ৷ অনুপত্তি মালিক দণ্ডার্ছ নহে।

জ্ঞ জ্ঞীমতী মহারাণী বঃ হাসান আলী—২৫ পৃঃ।

মিখ্যা সাক্ষ্য—পরন্পর বিরোধী উক্তি।

বেন্দ্রলে আসামী পরস্পর বিরোধী ছুইটী বাক্য সম্বন্ধে মিথ্যা সাক্ষ্য দেওয়ার জন্য পৃথক্ পৃথক্রপে অভিযুক্ত ছইয়াছে তখন একটী অপরাধ স্বীকার করিলেই অন্যটীতে মুক্তি লাভ করিবে এমত নছে। সেসম জজ্জ ঐ অভিযোগে তাহাকে মুক্তি দেওয়ার পূর্ন্বে সাক্ষ্য গ্রহণ পূর্বক বিচার করিতে বাধ্য।

[«] ১৮৭২ খৃঃ ১০ আঃ ৪৭১ ধারা। † ১৮৭৬ খৃঃ ৫ (বঞ্জীর) আইনের ১৯৮ ধারা।

শ্রীশীমতী মহারাণী বং জঙ্গলী বেলদার—৪৭ পৃঃ।
১৮৫৬ খৃঃ ২১ আঃ (আবকারী)—১৮৬১ খৃঃ ২৫ আঃ ও ১৮৬৯ খৃঃ
৮ আঃ ৬১ধারা *—জরিমানা আদার।

১৮৫৬ খৃঃ—২১ আইন মতে যে অর্থনও হর তাহাতে ফোঞ-দারী কার্য্যবিধির ৬১ ধারা ঋটে না; ঐ রূপ অর্থনতের টাকা অপরাধী ব্যক্তির সম্পত্তি ক্রোক ও বিক্রের ছারা আদার হইতে পারে না।

> জীজীমতী মহারাণী বঃ রাধু সিংহ—৬০ পৃঃ। পোলিদ কর্মচারীর অপরাধ—১৮৬১ শৃঃ ৫ আইনের ২৯ ধারা।

এক মোকদ্দমা ভদস্তকালে যদি কোন পোলিস কর্মচারী আর এক মোকদ্দমা লইভে অস্বীকার করে ভাহা হইলে সে২৯ ধারা মভে অপরাধী হয় না।

জীজীমতী মহারাণী বঃ রাজরুফ বিশ্বাস—১ পৃঃ।

দঃ বিঃ ৪০৬ ধারা—১৮৭১ শৃঃ ১ আইন।

কোন পোলিস কর্মচারী খোয়াড়ে আবদ্ধ পশু ক্রেয় করিলে দঃ বিঃ ৪০৬ ধারাকুসারে দোষী হইতে পারে না। ভাহার নামে জীরাৎ প্রমালী আইন মতে অভিযোগ করিতে হইবে।

> প্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ উজীর ওগয়রহ—৬০ পৃঃ। ১৮৬০ খৃঃ ৪৫ আঃ ৪৯৮ ধারা—বিবাহের অনুমান—প্রমাণের ভার।

৪৯৮ ধারার অভিযোগে কোন দ্রী ও এক পুরুষ উভয়ে একত্র বাস করিত ইহা দেখাইলেই ভাহার। যে পরস্পর দ্রী ও স্বামী নহে ইহার প্রমাণের ভার অভিযুক্তের উপর পড়িবে। মাজিফৌটের সমক্ষে যে সাক্ষ্য গৃহীত হইরাছে কিন্তু বিচারকালে যাহা ব্যবস্থাত হয় নাই এমত প্রমাণ আপীলে দৃষ্ট হইবে না।

^{*} ১৮৭২ শৃঃ ১০ আঃ ৩০৭ ধারা।

শ্রিশীমতী মহারাণী বঃ জলফুকার থাঁ—২১ পৃঃ। প্রয়াগ-মজন্তা।

এक आगागीत विषातकारन य माका निशिवक इहेताए जाहा অন্য আসামীর বিচারকালে এহণ করা উচিত নহে। মততা অপ-রাখকে গুৰুতর করে এমত বিবেচনা করা আসকত।

প্রীপ্রীমতী মহারাণী বঃ দীনবন্ধু গঙ্গোপাধ্যায়—৫৮ পৃঃ। পোলিস কর্মচারীর অপরাধ-১৮৬১ খ্, ৫ আঃ ৮, ২৯ ধারা।

পোলিস কর্মচারী সম্পুত অবস্থায় কোন কার্য্যের জন্য পোলিস चाहेरनत २५ शांताजुमारत कर्खवा कर्या व्यवह्ना व्यवतारंथ पांची গণ্য হইতে পারে না। সম্পুণ্ড অবস্থায় ভাহাকে উক্ত আইনের यचीवृश्ड " (शानिमहाती " वना यात्र ना।

বেঙ্গল ল রিপোর্ট নবম ভাগ।

क्षिमात्री वाशीन।

জে ডি সদারলাগু ও অপর একজনের দরখান্তে—২২৯ পৃঃ। প্রকৃত দখদ—১৮৬১ সালের ২৫ আইন ২৮২ * ও ৩১৮ † ধারা—শান্তিভঙ্গ।

উক্ত আইনের ৩১৮ ধারার প্রকৃত দখল অর্থে বেতনভোগী কর্মচারির দ্বারা দখল, মধ্যবর্তী প্রজার দ্বারা দখল (যে প্রজা
রীতিমত খাজানা দিতেছে) ও সম্পত্তির স্বড্বোপভোগী বন্ধক
গৃহীতার দখল বুঝাইবে । উহার অর্থ কেবলই সাক্ষাৎ দুমাধিকারির
নহে । কিন্তু যেস্থলে সাক্ষাৎ দখলকারী প্রজাগণ ভূমাধিকারির
হল্তে খাজানা না দিয়া কেবল কোন মধ্যবর্তী স্বড্বাধিকারিকে খাজানা
দেয়, তখন ঐ ভূমাধিকারিকে এই ধারামতে "প্রকৃত দখলকারী"
বলা যাইতে পারে না ।

ঐ আইনের ৩১৮ ধারামত কার্য্য করিবার সময় কার্য্যপ্রণালী নিয়মশুদ্ধ করিতে হইলে প্রকৃতপিক্ষে যে একটা বিবাদ চলিতেছে এই বিষয়ে মাজিপ্রেটের হৃদ্বোধ হইলে সেই হৃদ্বোধের হেতু লিপি-বদ্ধ করিবেন।

অবস্থানুসারে প্রয়োজন বোধ করিলে ২৮২ ধারামত মুচলিকা লওয়া হইলেও মাজিট্রেট ৩১৮ ধারামত কার্য্য করিতে পারেন।

এচ্ পি কেদ্পার্য্য—৩৩৭ পৃঃ।

১৮৬১ সালের ২৫ আইন ৪৩৫ ‡ ধারা—সেসন জজের মোকদ্দমা ওয়াপেজ করিবার ক্ষমতা।

তদন্তের পর মাজি থ্রেট ২৫০ § ধারামত আসামী ছাড়িয়া দিলে সেসন জজ পুনরায় তদন্ত জন্য ৪৩৫ ধারামত মোকদ্দমা ওয়াপেজ দিতে পারেন না গ

^{* †} ১৮৭২ সালের ১০ আইনের ৪৯৭ ও ৫৩০ ধারা। ‡১৮৭২ সালের ১০ আইনের ২৯৬ ধারা। § ১৮৭২ সালের ১০ আইনের ২১৫ ধার! ঃ

এঞ্জেলো বঃ অপর এক পক্ষ এবং কার্গিল বঃ অপর এক পক্ষ—৪১৭ পুঃ।

সাধারণের গমনাগমনের পথ—অবরুদ্ধ করণ—মাজিট্রেটের ক্ষমতা—১৮৬১ খৃষ্টাব্দের ২৫ আইন ৩০৮, ৪০৪, ৪৩৪ ধারা *।

পুরাতন কার্য্যবিধির ৩০৪ ধারার মোকদমার আসামী উপস্থিত হইয়া কারণ দর্শাইলে ফলতঃ সেই পথ সাধারণের গম্য কি না ও উহা অবৰুদ্ধ হইয়াছে কি না ভাহা দেখা মাজিপ্রেটের কর্ত্ব্য। যদি তিনি তৎকালীন উপস্থিত প্রমাণ লইয়া তদন্ত করেন তবে তিনি ক্ষমতার বহিত্ত কিয়া অতিরিক্ত কার্য্য করেন না। আইননের ভ্রান্তি কিয়া ক্ষমতার অতিরিক্ত কার্য্য না করিলে হাইকোর্ট হস্তক্ষেপ করিতে পারেন না। উপস্থিত প্রমাণে মাজিট্রেট ভ্রান্তিজনক বিচার করিয়াছেন বলিয়া হাইকোর্ট হস্তক্ষেপ করিতে পারেন না।

পরিশিষ্ট।

গোবিন্দচন্দ্র ঘোষ ও অপর একজনের দরখান্তে—৩৯ পৃঃ।
১৮৬১ খৃঃ ২৫ আইনের ৩১৮ ধাঃ—কাছাকে নোটিস দিতে হইবে—সাক্ষ্য
তদব করাইবার অধিকার।

বিরোধী সম্পত্তির সকল সরিকগণকে নোটিস দিতে মাজিফে ট বাধ্য নছেন; কেবল প্রকৃত বিবাদিগণ নোটিস পাইবে। যথাকালে প্রমাণ ভলব না করাইলে মোকদ্মার শ্রেষভাগে তলবের দাবী থাকে না।

কালীচরণ চন্দের দরখান্তে—১৮ পৃঃ।

১৮৬৫ খৃঃ ২২ আইনের ১১ ও ১৩ ধাঃ—মোক্তারের কার্য্যকরণ।

কোন মোকদ্মাকারীর দরখান্ত লিখিয়া দিলেই এ আইনের ১১ ধারা মত মোক্তারের কার্য্য করা হয় না, স্কুতরাং কোন স্নদ-শুন্য ব্যক্তি উহা লিখিলে ১৩ ধারা মত দওনীয় নহে।

^{*} क्रमोब्रात २७१२ थ :--> क्राइटनत ४२>, २৯१, २৯৫ शाता ।

লভ সাহেবের দ্রখান্তে—৩৫ পৃঃ। মিউনিসপাল উপনিরম—প্রাত্তহিক জরিমানা।

মিউনিসিপাল উপনিয়ম ভঙ্ককরণ অপরাধে প্রাত্যহিক জরিমানা আইন-নিষিদ্ধ।

এ এ মহারাণী বং ঈশ্বরীপ্রসাদ সিংহ—88 পৃঃ।
শান্তিরকার মুচলিকা—মাজেইটের কম্ভা।

সমনে লিখিত সর্ত্ত অভিক্রম করিয়া অধিকতর পরিমাণে কিমা দীর্ঘতর কালের জন্য, জামিন লাইতে মাজিষ্টেট পারেন না।

শী শী মহারাণী বঃ কুমুদিনীকান্ত বন্দ্যোপাধ্যায়—৩০ পৃঃ।

শাভিরক্ষার মুচলিকা—পুরাতন কার্যাবিধির ২৯০ ধাঃ।

একটী শান্তিরক্ষার মুচলিকার কাল অভীত না হইতেই পুনর্বার মুতন মুচলিকা তলব করণ উক্ত ধার।মত অবৈধ।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বং মজফর থলিফা—৩৬ পং।
১৮৬২ খৃঃ ২৫ আইন—৬২ † ধাঃ—ছাড়া পশু সমন্ধে হুকুন—অবজ্ঞা।

স্থানবিশেষে গোৰু, ছাগল প্রভৃতি পশু চরিবার জন্য ছাড়িয়া দেওয়া সম্বন্ধে মাজিপ্রেটের নিষেধ আজ্ঞা উক্ত আইনের ৬২ ধারা অনুযায়ী তুকুম নহে, স্কুতরাং কেহ সেই নিষেধ আজ্ঞা পালন না করিলে দণ্ডবিধির ২৮৯ ধারামত দণ্ডার্হ ইইবেক না।

শ্যামশঙ্কর মজুমদারের দরথাত্তে—৪৫ পৃঃ।
১৮৬১ গৃঃ ২৫ আইন ৩১৮ ‡ ধারা।

উক্ত ধারামতে উভয়পক্ষের সাক্ষ্য তলব করা আবশ্যক।

স্ষ্টিধর পাড়ুইয়ের দরখাক্তে—১৯ পৃঃ।
দণ্ডবিধির ৪৪১ ধার,—অভিপ্রার।

ভয়প্রদর্শন, অ্বমানকরণ কিমা অনিষ্ট করণের অভিপ্রায় না থাকিলে অপ্রাধজনক অন্ধিকার প্রবেশ হইতে পারে না। যখন

[#] ১৮৭২ খৃঃ ১০ আইনের ৪৯৯ ধারা। † ১৭৮২ খৃঃ ১০ আইনের ৫১৮ ধারা। ‡ ১৮৭২ খৃঃ ১০ আইন ৫৩০ ধারা।

কোন ব্যক্তি বহুকাল দখলসভূত স্বত্বের উপর নির্ভর করিয়া অধিক-কাল জলকর সত্ব ভোগ করিয়া আসিতেছে, তাহাকে নিষেধ করিয়া मार्टिन जाती कतिवात शांत अवि यनि त्र क्षेत्रश कार्या वित्र ना इत তথাপি তাহার অপরাধজনক অন্ধিকার প্রবেশ রূপ দোষ হইবে না।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ রামপাণ্ডা-১৬ পুঃ। দশুবিধি ১০৮, ১০৯ ও ২১১ ধারা-মিথ্যা মোকদ্মার সহায়তা। মিথ্যা অভিযোগের পোষকভায় সাক্ষ্য দেওয়া মাত্র হেতুভেই উহার সহায়তা করা অপরাধ সাব্যস্ত হইতে পারে না।

বেঙ্গল ল রিপোর্ট দশম ভাগ।

कूनरवकः।

বৈকুণ্ঠনাথ সাহার দর্থাক্তে—৪৩৪ পৃঃ। ১৮৬১ গৃঃ ২৫ আইনের ৬২ * ধারা—বিরোধী ঘটি—মাজিট্রেটের ক্ষ্মভা।

যুক্তিমূলক কারণে যদি মাজিট্রেটের এমন হান্বোধ হয় যে তাঁহার ছকুমে দাঙ্গা হাঙ্গামা নিবারণ হইতে পারে কিয়া হইবার সম্ভব, ভাহা হইলে ভিনি উক্ত আইনের ৬২ ধারামত কোন বিরোধী হাটের মালিককে কোন বিশেষ স্থানে ও বিশেষ বারে হাট মিলাইডে, অস্ততঃ অপ্পকালের জন্য নিষেধ করিতে পারেন।

(म्ख्यांनी वालीन।

কাশীচন্দ্র দাসের দরখান্তে—৪৪১ পৃঃ। ১৮৬১ খৃঃ ২৫ আঃ ৬২, ২৮২ † ধারা—শান্তিভঙ্গ—মান্ধিট্রেটের ক্ষমতা।

র্থ আইনের ২৮২ ধারার অনুবলে মাজিট্রেট অন্যায্য কার্য্য নিষেধ করিতে পারেন, কিন্তু ন্যায্য কার্য্য নহে। আইনের এমন উদ্দেশ্য নহে যে পাছে অপর একজন শান্তিভঙ্গ করে সেই কারণ তিনি আর এক জনকে সম্পতিসমুত ক্ষমতা সঞ্চালন করিতে নিষেধ করিতে পারিবেন।

कोक्रमात्री यांशीन।

শ্রী মতী মহারাণী বঃ বেলাত আলি গং—৪৫০ পৃঃ।
১৮৭২ খৃঃ ১ আইনের ৩০ ধারা। সংগ্রাধির স্বাকার বাক্য কখন প্রাসন্ধিন।
একত্রে বিচারে আনীত কয়েক আসামীর মধ্যে কেহ অপরাধ
স্বীকার করিলে সেই স্বীকার বাক্য অপর আসামীদের বিক্জে
গ্রাহ্ম করিতে গেলে দেখিতে হইবে যে ঐ স্বীকার বাক্য স্বীকার-

^{• †} क्रमांच्टत > १२ थृः ১ • आः—६२৮ ७ ৪৯১ शाता ।

কারিকে অপর আসামীদিগের সহিত তুল্য পরিমাণে সেই অপরাধে লিপ্ত করিতেছে।

প্রী জীমতী মহারাণী বঃ স্থবজান—৩৩২ পৃঃ।
সাক্ষ্য—অপরাধ দ্বীকার থাক্যের বিশ্বাসবোগ্যভা।

যখন এইরপ বলা হইভেছে যে আসামী অপরাধ স্বীকার করিয়াছিল, তখন আসামী কি কি বাক্য ব্যবহার করিয়াছিল ভাহা নির্দ্ধারণ করা আবশ্যক। ঐ স্বীকার বাক্য সম্বন্ধে সাক্ষ্যদাভা সাক্ষীগণ
আসামীকে প্রশ্ন করিয়া আসামীর উত্তর শুনিয়া আপনি আপনি
যে মর্ম্ম নংগ্রহ করিয়াছে কেবল সেই মর্ম্ম মাত্রই লওয়া আদালভের
উচিত নহে। যখন আসামী ঘুই প্রকার পৃথক্ উক্তি করিভেছে—
এক উক্তি দ্বারা আপনার দোষ স্বীকার করিভেছে ও অপর চীর দ্বারা
ভাহা অস্বীকার করে, সেই স্থলে যদি প্রথম উক্তিটী আসামীর
বিকল্পে লওয়া হয় ভবে অপর চী ভাহার যথাযোগ্য মূল্যে আসামীর
সাপক্ষে লইভে হইবে। ঐ ঘুই উক্তির মধ্যে কোন একটীকে গ্রাহ্ম
করিবার অগ্রে উভয়ের বিশ্বাসযোগ্যভা পরিমাণ করা আদালভের
কর্ত্ব্য।

মাজি ট্রেটের প্রেরিত নথীস্থ দলিল যাহা সেসন জজের সমক্ষে প্রানাণস্ক্রপ অর্পিত হয় নাই, আসামীর সাপক্ষে বলিয়া হাইকোর্ট সেই দলিল দৃষ্টি করিলেন।

শ্রী শ্রী মহারাণী বং তারকনাথ মুখোপাধ্যায় — ২৮৫ পৃঃ।
কার্যবিধি (১৮৭২ খৃঃ ১০ আইন) ২৯৬ ধাঃ—মাজিট্রেট কর্তৃক ছাড়িয়া দেওয়া
আসামীকে সেসন সোপর্দ্ধ করিবার আদৃশে করিবার সেসন জজের ক্ষযত.।

অগ্রিম প্রমাণ লইরা মাজিট্রেট কোন আসামী ছাড়িরা দিলে যদি জজ ঐ আসামীকে সেনন সোপদ্দ করিতে আদেশ দেন তবে আসামীর কোন কোন কার্য্যে ঐ অভিযুক্ত অপরাধ হইরাছে তাহা বিশেষ করিয়া নির্দারণ করিয়া দিবেন। পূর্কে অসমী যে অপ্রাধে অভিযুক্ত হয় নাই এমন কোন অপরাধ করণ হেতু আসামীকে সোপদ্দ করিতে জজ আদেশ করিতে পারেন না।

কের পরে বাধ্য নছে।

পরিশিষ্ট।

নিপুর আওরৎ বঃ জুড়াই – ৩০ পৃঃ।

ভরণপোষণের হকুম—১৮৭২ খৃঃ—১০ আইনে ৫৩৬ ধারা। তালাকের ফল।
কোন ব্যক্তি মাজিপ্টেট কর্তৃক জ্রীকে খোরপোষ দিতে আদিষ্ট হয় ও কতক কাল তাহা না দিয়া যদি আদালতের সমক্ষে উপস্থিত হইয়া ঐ জ্রীকে ভালাক দেয়, ভবে পূর্ব্ব হুকুম ও ভালাকের মধ্য-বর্ত্তী কালের জন্য ভরণপোষণের ব্যয় দিতে সে বাধ্য, কিন্তু ভালা-

প্রী শ্রী মহারাণী বঃ হিক্স। — ১ পৃঃ।
১৮৭২ খৃঃ ১ আইন—২৪ ধার।।

অপরাধ স্বীকার ব্যতীত যদি অন্য কোন উদ্দেশ্যেও আসামীকে ভয় প্রদর্শন করা যায় ও সেই অবস্থায় সে অপরাধ স্বীকার করিয়া কেলে তবে ঐ স্বীকার বাক্য গ্রাহ্য হইবে না।

> রঘু পাড়িয়ার দরখাত্তে —২৬ পৃঃ। ১৮৬১ খঃ ২৫ আঃ—৬৭ * ধাঃ। বিনা প্রমাণে খারিজ।

যথন মাজিষ্টে আসামীর বিকল্পে ওয়ারেন্ট জারী করিয়াছেন তখন কার্যাবিধির প্রস্তাবিত কার্যাপ্রণালী অনুসরণ করা উচিত। কিন্তু যদি ইতিমধ্যে এমন কোন অবস্থা ঘটে যাহাতে তাঁহার প্রতীতি হয় যে প্রথমে তাঁহার বিবেচনার ক্রটী হইয়াছিল, ভাহা হইলে পূর্ব্যোক্ত নিয়মের ব্যতিক্রম করিতে পারেন।

^{*} ১৮৭২ * ১ ত আ- : ৪৭ধাঃ,

८वक्रन न ब्रिट्शा है अकाम्य जाता।

* মিচুচন্দ্র সরকার বঃ জে এচ্ রেভেন্স—৯ পৃঃ ।

মালিট্রেটের আজ্ঞাস্নারে বাটাভাঙ্গা—কভিপূরণের নালিস—দেওরানী আদালভের

এলাকা। ১৮৬১ খৃঃ ২৫ আঃ—৬৯ খৃঃ ৮ আঃ ০০৮,

৬১০ ও ৬১১ ধারা †।

কোন মাজিপ্রেট ১৮৬৯ খৃঃ ৮ আইনের ৩০৮ ধারামতে ক নামক ব্যক্তিকে সরকারী রাস্তার অবরোধ জনক একটী ঘর ভাঙ্গিতে ত্কুম দেন। ৩১০ ধারামত ক জুরি স্থাপন প্রার্থনা করে। জুরির অধিকাণ লোক মাজিপ্রেটের আজ্ঞা যুক্তিযুক্ত বিবেচনা করিয়া ভাষাতে মত দেন। ক মাজিপ্রেটের আজ্ঞা পালন না করায় ৩১১ ধারামতে ভাষার ঘর উঠাইয়া দেওয়া হয়। ক মাজিপ্রেটের বিকল্পে ক্ষতিপূরণের নালিস করিল। ধার্য্য হইল যে ক্ষতিপূরণের নালিস চলিতে পারে না; যেহেতু মাজিপ্রেট আইনের লিখিত কার্য্য-প্রণালীর ব্যতিক্রম করেন নাই।

किं जमाती वाशीन।

. শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ সাবেদ আলি গং—৩৪৭ পৃঃ।
দণ্ডবিধি—১৪৯ ও ৩০০ ধারা—বে-আইনী জনতা—সাধারণ উদ্যোশ্য—জ্ঞানক্লুবধ।

এক খণ্ড বিরোধীয় জমি হইতে কভকগুলি লোককে ভাড়াইয়া দিবার জুন্য অপর কয়েকজনে বে-আইনী জনতায় মিলিত হয় ও ভাহাদের মধ্যে একজন প্রথম পক্ষের প্রতি বন্দুক ছাড়িয়া এক ব্যক্তিকে বধ করে। ধার্য্য হইল যে যেহেতু ঐ ক্রিয়া হঠাৎ ও বিনা পূর্ব্বমনস্থ হইয়াছিল, তখন জনতার অপর সকল লোকের বিক্জে জানকতবধের অপরাধ বর্জিতে পারে না।

^{*} দেওয়ানী বিভাগে বিচার হয়।

ተ क्रमाञ्चल ১৮৭২ খুঃ ১০ আঃ ৫২১, ৫২৩, ৫২৫ ধারা।

दिक्व न तिर्थार्छ दान्य जागा

পরিশিষ্ট।

কলিকাতার উপনগরের মিউনিসিপাল কমিশনরদিগের সভাপতি বঃ আনিস্লদ্দিন—২ পৃঃ।

প্রাভ্যহিক জরিমানা আইন-বিৰুদ্ধ।

শ্রীমতি মহারাণী বঃ আরমানুলা—১৫ পৃঃ। ১৮৭২ খৃঃ ১০ আঃ –২৪৯ ধাঃ—গোপর্দ্দকারী কর্মচারীর সমক্ষে সাক্ষির সাক্ষ্য।

আপন স্ত্রী ও শিশুসন্তানকে বধ করা অপরাধে কোন ব্যক্তি সেসনে বিচারে আনীত হয়। অভিযোগ সাপেক্ষ স ক্ষিপণ প্রথমে মাজিপ্রেটের সমক্ষে যে সাক্ষ্য দিয়াছিল ভাহার ব্যতিক্রম করিয়া সেসনে জোবানবন্দি দেয়।

সেনন জজ ২৪৯ ধারার মূলে স্বীয় সমক্ষের প্রমাণ অগ্রোছ্ করিয়া মাজিষ্টেটের সমক্ষের প্রমাণের উপর নির্ভির করিয়া আসা-মীকে অপরাধী সাব্যস্ত করিয়া তাহার ফাঁসির ত্রুম দেন।

কিয়ার জজ—মাজি ট্রেটের সমক্ষে জোবানবন্দী স্থান বিশেষে উক্ত জজ সাহেব আহ্য করিয়া লইতে পারেন, কিন্তু সে কারণ তিনি আপন সমক্ষের সমুদায় সাক্ষ্য অপ্রাহ্য করিতে পারেন না। ২৪৯ ধারার "যদি তিনি উচিত বিবেচনা করেন" এই বাক্যে অনুমান কি কম্পানা বুঝায় না, যুক্তিমূলক কারণ আবশ্যক করে।

মরিস জজ—আমার মতে ২৭৯ গারার মর্ম এই যে, যখন
নিম্ন আদালতের সমক্ষের সাক্ষ্য বিশাস-যোগ্য ও সরল বিবেচনা
করিবার বিশেষ যুক্তিসকত কারণ থাকে ও সেই প্রমাণ নিজ
সমক্ষে স্বাধীন প্রমাণের দ্বারা কিয়ৎপরিমাণে দৃঢ়ীভূত হয়, তখনই
কেবল সেসন জজ সেই প্রমাণ ব্যবহার করিতে পারেন ৷

এী এীমতী মহারাণী বং হাতু খাঁ—২২ পৃঃ।

১৮৭२ थः ३० जाः--२৯१ धात'--निर्धायी मावाटख थानाम-- शहेरकाटित क्यां। উক্ত মোকদমায় ডেপুটী মাজিট্রেট বাদীর পক্ষে ছুইটী মাত্র সাক্ষির জোবানবন্দী শইয়া দরখান্তে লিখিত বাকি সাক্ষির (যাহা-দের মধ্যে তুই জন আদালতে উপস্থিত ছিল) সাক্ষ্য না লইয়া **এবং বাদীকে পরীক্ষা না করিয়া আসামীকে ২১১ ধারা মত নির্দ্ধোষী** সাবাজে খালাস দেন ৷

मार्कवी জজ-यनि उ एः माजि द्वि हित कार्या श्रेमानी निःमत्मर আইনবিৰুদ্ধ, তথাপি ২৯৭ ধারামতে, নির্দ্ধোষী সাব্যক্তে খালাসে হস্তক্ষেপ করা যায় না। যদি অসক তরূপে আসামীকে শুদ্ধ ছাডিয়া দেওয়া হইত তাহা হইলে হাইকোর্ট হস্তক্ষেপ করিতে পারিতেন।

(तक्व व तिरुपार्छ जिर्माम्भ जाग।

कुनरवकः ।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ অক্ষয়কুসার সাহা এবং নগেন্দ্রলাল
চটোপাধ্যায়ের দরখান্তে—৩০৭ পৃঃ।
দশুবিধি ৪০৫ ধারা প্রীক্ত্রাবিহিত্রপে ব্যবহার।

বিশ্বাস পূর্ব্বক ন্যন্ত কিল্ল। যাহার উপার প্রভুত্ব আছে এমন সরীকি সম্পত্তি অবৈধ রূপে ব্যবহার কি স্বীয় ব্যবহারে পরিণত করিলে দেওবিধির ৪০৫ ধারার অপারাধ (বিশ্বাস্থাতক্তা) হয়।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ মহম্মদ হুমায়ুন সা—৩২৪ পৃঃ। অন্যত্তর অভিযোগ—নিম্পত্তি—মিথ্যা সাক্ষ্য—পরম্পর বিরোধী উক্তি—কাধ্যবিধি (১৮৭২ খৃঃ১০ আইন) ৪৫৫ ধার।—দ্রুনিধি—১৯০ ধারা।

মিধ্যাসাক্ষ্য দেওয়। অপরাধে কোন লোক অন্যতর অভিযোগে অপরাধী সাব্যস্ত হয়। অধিকাংশ জজ ধার্য্য করিলেন যে ঐ অপ-রাধ-নির্বর্গ সকত হইয়াছে, যদিও ছই অভিযুক্ত উক্তির মধ্যে কোনটী মিথ্যা তাহা জুরি নির্বর্গ করে নাই। (জ্যাকসন ও ফিয়ার ঐ ধার্য্যে অসম্বত ছিলেন।)

পরিশিষ্ট ়া

এ জীমতী মহারাণী বঃ পিরান ওরফে গঞ্জাই ওরফে করীমন—৪ পৃঃ।

১৮৭২ শৃঃ ১০ আইন—৬৭ ধারা—(ক) উনাহরণ—দণ্ডবিধি ৪৯৯ ও ৫০৩ ধারা।
বোশ্বাই হইডে কলিকাতা যাত্রাকালে অপারাধ ক্ত হইয়াছে এইরূপ ব্যক্ত হয়। কিন্তু বাস্তবিক বোশ্বাই ও এলাহাবাদের মধ্যে
উহা ঘটিরাছিল। উপারোক্ত স্থানে বাদী ও আসামী নামিয়া পৃথক
পৃথক ট্রেণে কলিকাতায় আসে। ধার্য্য হইল যে এ অপারাধ বিচার

করিতে হাওড়ার মাজিথ্রেটের কোন ক্ষমতা নাই। কিন্তু যদি উভর পক্ষ যাত্র৷ ভঙ্ক না করিয়া একাধিক্রমে কলিকাভায় আসিত ভাষা হইলে ঐ অপরাধ হাওডার মাজিঙেটের এলাকাধীন হইত।

> শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ শ্যাম বাগদী গং—১৯ পৃঃ। ১৮৭২ খুঃ ১০ আইনের ২৬৩ ধারা !

যদি বিশ্বাস হয় তবে কেবল মাত্র বাদীর উক্তিই যথেষ্ট, জুরিগণ ভাছারই উপর নির্ভর করিয়া নিষ্পত্তি করিতে পারেন।

এত্রীমতী মহারাণী বঃ সফরদি গং—২০ পৃঃ। ১৮৭২ খৃঃ ১০ আইনের ২৮০ ধারা—দণ্ডর্দ্ধি।

যদি এমন প্রমাণ হয় যে আসামী ইচ্ছাপুর্বক বধ করিয়াছে ভবে মৃত দেহ পাওয়া যায় নাই কেবল মাত্র এই কারণেই ঐ অপরাধ গুরুতর পীডা বলিয়া গণ্য হইতে পারে না। হাইকোর্ট আসামীকে জ্ঞানকত বধের অপরাধে অপরাধী করিলেন ৷

বেঙ্গল न तिर्পार्छ हजूर्मभ जाग।

क्लदिकः ।

প্রীমতী মহারাণী বং দেওয়া ভগতা—২৯৪ পৃঃ।
১৮৭৩ খৃঃ ১০ আইন ১৩ ধারা—শপথ বা ধর্মতঃ প্রতিক্রা করাইতে ক্রটা।
উক্ত ধারায় "ক্রটী" শব্দে কেবল মাত্র অনবধানতা প্রযুক্ত
বা আকস্মিক ক্রটী বুঝাইবে না, সর্বপ্রকার ক্রটী বুঝাইবে।

कोजमात्री जाशीन।

্রীপ্রীমতী মহারাণী বঃ মুসম্মৎ এতোয়ারী—৫৪ পৃঃ। বালকের সাক্ষ্য,-১৮৭০ খৃঃ১০ আঃ ৫ ও ১৩ ধারা-কার্যাবিধি ২৫ অধ্যার। ধ ও গকে কুয়ায় ফেলিয়া দেওয়া অপরাধে আগামীর নামে নালিস হয়। থকে বধ করা অপারাধে দওবিধির ৩১২ ধারামত তাহার নামে অভিযোগ হয়, কিন্তু বিচারে সে নির্দ্ধোষী সাব্যস্ত হইয়া খালাস পায়। তদনস্তর জয়েণ্ট মাজিপ্রেট তাহাকে দণ্ডবিধির ৩০৭ धातामा गत्क वध कति एक উদ্যোগ করা অপারাধে, পূর্ববর্তী ভদস্ত না করিয়া, একেবারে সেসনে গোপর্দ্দ করেন। সেসন জভের মতে এই অপরাধসম্বন্ধে কেবল একটা বালিকা মাত্র চাক্ষস সাক্ষী ছিল। ধর্মতঃ প্রতিজ্ঞা বা শপথের মর্ম সে বুমিত না, কেবল সামান্য প্রতি-জ্ঞাতে ভাহার সাক্ষ্য লওয়া হয় ট জুরি আসামীকে দোষী সাধ্যস্ত করে। ধার্য্য হইল যে শপথ বা ধর্মতঃ প্রতিজ্ঞা দিতে ক্রটী হেতু (যদিচ ঐ ক্রেটী জ্ঞানত হইয়াছে) ঐ বালিকার সাক্ষ্য অথাছ হইতে পারেনা। আরোধার্য হইল যে পূর্ববর্তী তদন্ত ন। করা হেতু ক্রটী জাসামীর সাফাইয়ের পক্ষে অনিউজনক হওয়ায় যাবভীয় কার্য্যা-নুষ্ঠান রহিত ও নুতন বিচার হওয়া উচিত।

रेखियान न तिर्पार्ट-१४१७ श्कांका

कोজमात्री ञाशील।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বং মারুতি দাদা।
" সহায়ত।" একটা বতন্ত্র অপরাধ।

প্রধান অপরাধী খালাস পাইলেই যে সহায়তাকারী শাস্তি পাইবে না এমন নহে। একের খালাসের সহিত অন্যের সংস্থাব নাই। সহায়তার শাস্তি, প্রধান আসামীর শাস্তির উপর কোন প্রকারে নির্ভর করে না।—>বো—১৫ পৃঃ।

कूनरवकः ।

বরকতুলা খাঁ বঃ রেণী গং।

১৮৭২ ধৃঃ ১০ আইন ৪৬৮, ৪৬৯ ধারা—অভিযোগের অনুমতি।

উপযুক্ত আদালত অভিযোগের অনুমতি দিলে, উপরিস্থ আদালত ভাহাতে হস্তক্ষেপ করিতে পারেন না। কিন্তু নিম্ন আদালত
অনুমতি দিতে অসীকার করিলে, উপরিস্থ আদালত ভাহা দিতে
পারেন।—১এলা—১৭ পৃঃ।

প্রীপ্রীমতী মহারাণী বঃ লক্ষ গোবিন্দ গং। ১৮৭২ খৃঃ ১০ আইন ৬৭ ধারা। এলাকা।

মহারাজ গৈকোয়াড়ের অধিকারভুক্ত ভেলনপুর প্রামে ডাকাতী হওয়ায় কতক মাল ত্রিটিস্ অধিকারে পাওয়া যায়। ধার্য হইল যে, আসামীদের বিৰুদ্ধে ডাকাতীর অভিযোগ হইতে পারে না, যেহেতু ডাকাতী একটী স্বতম্ত্র অপরাধ, যথনই সংঘটিত হয় তথনই সম্পূর্ণ হইয়াছিল। কিন্তু ভেলনপুর যদি ত্রিটিস্ অধিকারত্ব হইত তাহা হইতে মাল লইয়া যাওয়া প্রভৃতি পরবর্ত্তী কার্যসমূহ প্রধান অপারাধের সহিত সন্মিলিত হইয়া, ৬৭ ধারামতে যে যে জেলার ঐ মাল আনীত হইত সেই সেই জেলার বিচার অধিকারে আদিত। বর্ত্তমান অবস্থার কেবলমাত্র জ্ঞানপূর্কক চোরা মাল দখলে রাখা অপারাধে আসামীর দও হইতে পারে, যেহেতু মাল ত্রিটিস্ অধিকারে সংরক্ষিত হইয়াছিল।—১ বো—৫০ পৃঃ।

শীশীমতী মহারাণী বঃঠাকুরপ্রসাদ।

১৮৭২ ^খৃঃ ১০ আঃ ৩৯০ ধারা।—অপরাধ নির্ণীত ব্যক্তি—সেদন জজের জামিন লইবার ক্ষমতা।

উল্লিখিত আইনের ৩৯০ ধারার অন্তর্গত "অভিযুক্ত ব্যক্তি" অর্থে অপরাধ নির্ণীত ব্যক্তিকে বুঝায় না। যে ব্যক্তির অপরাধ সাব্যস্ত হইয়া দও পাইয়াছে, উল্লিখিত ধারামত সেমন জজ ভাহাকে জামিনে ছাড়িতে পারেন না।—১এলা—১৫১ পৃঃ।

कोজमां वाशील।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ সমসের থাঁ।

১৮৭২ শৃঃ ১০ আঃ—২১৫, ২৯৬ ধারা :—ওয়ারেটের মোকদ্মাভিস্মিস্—পুনঃভাপন।

কোন ওয়ারেণ্টের মোকদ্দমা দণ্ডবিধির ২১৪ ধারামত রকা নিষ্পত্তির অযোগ্য হইলেও পক্ষগণ তাহা আপোষে নিষ্পত্তি করার মাজিঙ্কেট তাহা ডিস্মিস্ করেন। ধার্ষ্য হইল যে ঐ "ডিস্মিস্ করণ" ২১৫ ধারার অন্তর্গত "ছাড়িয়া দেওয়ার" তুল্য এবং ঐ আপোষ নিষ্পত্তিতে মোকদ্দমা পুনক্রখাপনের ব্যাখাত জন্মে নাই। ১ বো—৬৪ পৃঃ।

জীজীমতী মহারাণী বঃ কুলত্রাণ সিং।

১৮৭২ খ্: ১০ আঃ ৪৬৮, ৪৭১, ৪৭২, ৪৭৩ ধারা—সাধারণের ন্যায্য বিচারের বাধাজনক অপরাধ—আদালত অবজ্ঞা—অভিযোগ—কাহ্যপ্রণালী।

সাধারণের ন্যায্য বিচারের বাধাজনক অপরাধ কার্য্যবিধির ৪৭৩ ধারার অন্তর্গত আদালত অবজ্ঞাস্থচক অপরাধ নছে। কিন্তু তথাপি কোন দেওয়ানী বা ফোজদারী আদালতের যদি এমন বিবে-চনা হয় যে ১৮৭২ খৃঃ ১০ আইনের ৪৬৭, ৪৬৮, ৪৬৯ থারার লিখিত কোন অপরাথে তদস্ত আবশ্যক, তবে আসামীকে স্বয়ং বিচার না করিয়া অন্য আদালতের নিকট অর্পণ করিবেন। উল্লিখিত বিধান ৪৭২ ধারার কার্য্যপ্রণালীতে খাটিবে না। ১এলা—১২৯ পৃঃ।

এ শীমতী মহারাণী বঃ রহিমত।

অপরাধ আপোষ নিপাতি—দঃ বিঃ ২১৪ ধারা।—১৮২২ খৃঃ ১০ আঃ ২১০ ধারা।
যে কোন অপরাধের সংজ্ঞায় ইচ্ছাপূর্ব্বক, অভিপ্রায়পূর্ব্বক,
বঞ্চনাপূর্ব্বক, শঠতাপূর্ব্বক প্রভৃতি বিশেষ অভিপ্রায়স্থচক গুণবাচক
সংযুক্ত কার্য্য লক্ষিত হয়, এবং যদি সেই কার্য্যে অভিপ্রায়ের সংস্রব
না থাকিলে অপরাধ হইতে না পারে, তবে ঐ অপরাধ আপোষ
নিপাতির যোগ্য নহে। কিন্তু যে ক্রিয়া অপরাধির অভিপ্রায়ের
সংস্রব বিনাও অপরাধ বলিয়া গণ্য হইতে পারে ও যাহার জন্য
ক্ষতিগ্রস্ত ব্যক্তি দেওয়ানী আদালতে নালিশ করিতে পারে, সেই ক্রিয়াসম্ভূত অপরাধ আপোষে নিপাত্তি হইতে পারে। ১ বো—১৪৭ পৃঃ।

কেশব লক্ষ্মণ সংক্রান্তে। ১৮৭২ খুঃ ২০৯ ধারা-ন্যাদী।

কোন দেওয়ানী আদালতৈর কারকুন আসামীর মাল ক্রোক করিতে গিয়াছিল। সে ফিরিয়া আসিয়া রিপোর্ট করে যে আসামী ভাষাকে বাধা জন্মাইয়াছে। ঐ আসামী ফোজদারী সোপদ হইয়া বিচারে আনীত হইলে মাজিপ্রেট তাহাকে নির্দোষী সাব্যস্তে খালাস দিয়া ক্ষতিপূরণের জন্য ২০৯ ধারামতে আসামীকে টাকা দিবার জন্য কারকুনের প্রতি আদেশ করেন। ধার্য্য হইল যে কারকুন ঐ মোকদ্দমার বাদী নহে, স্ক্রোং ক্ষতিপূরণের স্তুক্ম আইনসঙ্গত হয় নাই। এইরপা মোকদ্দমায় যে কর্ম্চারী মোকদ্দমা ক্ষতু করেন ভাঁছাকে বাদী বলিয়া গণ্য করিতে হইবে। ১ বো—১৭৫ পৃঃ।

মহেশ মিস্ত্রী ওগয়রহের দরখাস্তে।

১৮৭২ খৃঃ ১০ আইন—২৯৪, ২৯৫, ২৯৬ ও ২৯৭ ধারা—২১৫ ধারামতে ছাড়িরা দেওরা—কার্যানুষ্ঠান পুনরুত্থাপন।

প্রমাণ লইয়া ২১৫ ধারামত আসামী ছাড়িয়া দেওয়া হইলে জেলার মাজিপ্রেট সেই মোকদ্দমা পুনক্তাপন করিতে পারে না। য্দি অনিয়মিত রূপে আসামীকে ছাড়িয়া দেওয়া হয় তবে মোক-দ্দমা পুনক্তাপন সম্বন্ধে ২৯৭ ধারামতে হাইকোটের হুকুম আবশ্যক। ১ কলি—২৮২ পৃঃ।

🕮 🕮 মতী মহারাণী বঃ জগৎমাল।

১৮৭২ খ[্] ১০ আইন—৪৬৮, ৪৭১, ৪৭৩ ধারা—সাধারণৈর ন্যায্য বিচার ব'াঘাত-জনক অপরাধ—আদালত অবজ্ঞা।

সাধারণের ন্যায্য বিচারের ব্যাঘাতজনক অপরাধ ৪৭৩ ধারার মর্মানুসারে আদালত অবজ্ঞা নছে।

দেওয়ানী কি কোজদারী আদালতের যদি এমন বিবেচনা হয়
যে কার্য্যবিধির ৪৬৭, ৪৬৮ ও ৪৬৯ ধারায় লিখিত অভিযোগে
তদন্তের বিশেষ কারণ আছে তবে ঐ আদালতের ঐ অপরাধ স্বয়ং
বিচার করিতে ৪৭১ ধারা মতে নিষিদ্ধ নহে।—১ এলা—১৬২ পৃঃ।

জ্ঞীমতী মহারাণী বঃ তুকাষ্য বিন তামানা। ১৮৭২ খৃঃ ১০ আইনের ২২০, ৩১৪ ও ৪৫৪ ধারা ও দণ্ডবিধি ৪৫৭, ৩৮০ ধারা— নানা অপরাধের এককালিক শান্তি—দণ্ড।

দশুবিধির ৪৫৭ ধারা মতে চুরি করণার্থ রাত্রিযোগে দোষভাবে
, পরগৃহে প্রবেশ করণ ও ৩৮০ ধারামত গৃহ-চুরি এই ছই ধারায়
এককালে অপরাধ সাব্যস্ত হইলে আসামীর একটিমাত্র দশুজ্ঞা হইতে
পারে। কিন্তু উভয় অপরাধে আসামীকে পৃথক্ পৃথক্ শাস্তি
দিতে হইলে ঐ ছই দশু একত্র করিলে, উভয় অপরাধের মধ্যে গুরুতর অপরাধের নিষিত্ত যে শাস্তি নিরূপিত আছে, ভাহার অধিক
হইতে পারিবে না 1—১ বো—২১৪ পৃঃ।

জ্ঞী জ্ঞীমতী মহারাণী বঃ শিব গং। অপরাধ স্থীকারোক্তি লিপিবদ্ধ করণ প্রণালী।

কার্যাবিধির ১২২ ধারারুযায়ী লিখিত অপরাধ স্বীকার বাক্য প্রমাণস্বরূপ আদালতের গ্রাহ্য করিতে হইলে আসামী উহা স্বেচ্ছা-ক্রেমে বলিয়াছে কেবলমাত্র এই পাঠ লেখা প্রচুর নহে। কার্যাবিধির ৬৪৬ ধারার প্রস্তাবিত পাঠ, অর্থাৎ উহা যে মাজিট্রেটের সমক্ষে ও প্রেভিগোচরে লওয়া হইল এবং আসামী বাহা বলিয়াছিল ভাহা সমস্ত বিশুদ্ধরূপে লিপিবদ্ধ হইল, ইহাও লেখা আবশ্যক। অপ-রাধ স্বীকার বাক্যই আদালতের অগ্রাহ্য হইলে, আসামী যে বস্তুতঃ স্বীকার করিয়াছিল ইহা সপ্রমাণ করণার্থ কোন বাচনিক সাক্ষ্য লওয়া যাইতে পারে না 1—১ বো—২১৯ পৃঃ।

> শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ রামবিভগোড়। ১৮৭২ খৃঃ ১• আইন –৩১৪ ও ২১৮ ধারা—বহু অপরাধের সমষ্ট্রীকৃত দণ্ডাক্তা–আপীল।

যখন অনেক অপরাথে এক সময়ে আসামী দোষী সাব্যস্ত হইয়া সমষ্টীকৃত দণ্ডাজ্ঞা পায়, ঐ দণ্ডাজ্ঞা আপীল বা নিষ্পত্তি দৃঢ়ীকরণ পক্ষে একটী দণ্ডাজ্ঞা বলিয়া পরিগণিত হইবে।—> বো—২২৩ পৃঃ।

শ্রীশীমতী মহারাণী বঃ গুড় বক্স গং।
১৮৭২ খঃ ১০ আইন ৪৬৭, ৪৬৮, ৪৬৯ ও ৪৭১ ধার!—অভিযোগ
কাধ্যপ্রণালী।

৪৬৭—৬৮—৬৯ ধারার লিখিত অপরাধ সমূহ বিচার করিবার বাঁহার ক্ষমতা আছে এমন আদালতের সমক্ষে সেই সকল অপরাধ করা হইলে কার্য্যবিধির ৪৭১ ধারায় তাঁহাকে উহা বিচার করিতে নিষেধ করে না।—১ এলা—১৯৩ পৃঃ।

সাদি কৌজদারী বিভাগ।

অভিমতী মহারাণী বঃ উপেন্দ্রনাথ দাস গং।

দণ্ডবিধির ১৯২, ১৯৪ ধারা—বিশিষ্ট অভিযোগ—কাব্যপ্রণালী।

উদ্ধিত দুই ধারামতে ক্লুভিযোগ প্রস্তুত করিতে হইলে কোন কোন বাক্য বা নিদর্শন অপ্লাল হইয়াছিল ও আসামী উচ্চারণ করিয়াছিল বা সাধারণের দৃষ্টিগোচর করাইয়াছিল ভাহা বিশিষ্ট-রূপে অভিযোগ পত্রে নির্দিষ্ট করিতে হইবে। যে যে বাক্য বা নিদর্শন আসামী কর্ত্বক উচ্চারিত বা সাধারণের দৃষ্টিগোচরে আনীত হওয়া প্রমাণ দ্বারা সাব্যস্ত হইল এবং যাহা মাজিট্রেট অপ্লাল বলিয়া ধার্য্য করিলেন, ভাহা রায়ে লিখিতে হইবে।—১ কলি—৩৫৬ পৃ:।

ইভিয়ান ল রিপোর্ট ১৮৭৭ খৃষ্টাব্দ।

कोজদারী আপীল।

শ্রী মতী মহারাণী বঃ ভোলানাথ সেন।
বিচার করিবার প্রতিবন্ধকতা—বিচারকর্তার সাক্ষ্য দেওন।

কোন স্থানের জেল দারগা সরকারী টাকা তছরপ করায়,
বেকের সমক্ষে বিচারে আনীত হয়। ঐ বেঞ্চে জেলা মাজিষ্টেট
ও তত্ততা জেল স্থারিণ্টেণ্ডেণ্টও অধিবিষ্ট ছিলেন। আসামী
আপন সাকাইয়ের জন্য কতকগুলি সাক্ষীর নাম করায় অধিবিষ্ট
মাজিষ্টেটগণ জেল স্থারিণ্টেণ্ডেণ্টকে উহাদের মধ্যে কতকগুলির
সাক্ষ্য লিপিবন্ধ করিতে জেল মধ্যে প্রেরণ করেন। পাছে তাহারা
উপদেশ পাইয়া সত্যের বিপর্যায়ে বলে, এই কারণ অত্যে তাহাদের
সাক্ষ্য লিপিবন্ধ শ্রেয় বিবেচনা হয়। ধার্য্য হইল যে ঐ প্রকার
সাক্ষীর জোবানবন্দী করা অসক্ষত।

আরো ধার্য্য হইল যে ঐ মোকদ্দমার জেল স্থপারিন্টেণ্ডেন্টের বিশেষ স্বার্থ থাকায়, অধিবিষ্ট মাজিট্রেটগণের সঙ্গে ভাঁহার বসা আইনবিৰুদ্ধ।—২ কলি—২৩ পৃঃ।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ গজিকোম রাণুর।
১৮৭২ খৃঃ—১০ আইন—১৯৭, ৪৭২, ৪৭৩ ধারা—উপযুক্ত আদালত
মিথা। সাঁক্যা।

১৮৭২ খৃঃ ১০ আইনের ৪৭৩ ধারার অন্তর্গত "আদালত অবজ্ঞা" অর্থে মিথ্যা সাক্ষ্য দেওয়া অবধি বুঝায়।

সেন জজের সমক্ষে মিধ্যা সাক্ষ্য দেওন অপরাধে যখন কোন আসামী কোন প্রথম শ্রেণী মাজি ট্রেটের সমক্ষে বিচারে আনীত হয়, আর যদি সেই স্থানে ঐ জজ ভিন্ন অন্য আসিফাণ্ট বা জয়েণ্ট জজ না থাকেন, তবে ঐ আসামীকে সেসন সোপদ্ধ না করিয়া মাজিটেট স্বয়ং বিচার করিয়া দণ্ড দিবেন। যদি ঐ দণ্ড লঘু বলিয়া বিবেচনা হয় তবে বৃদ্ধির জন্য জজ হাইকোর্টে লিখিতে পারেন।—

১ বো—৩১১ পৃঃ।

জগচ্চত্র চক্রবর্ত্তির বিষয়ে। ১৮৭২ খঃ ১০ আঃ ১৯৪, ১৯৭ ধারা।

কোন শান্তিভকের মোকদ্দমায় মাজি থ্রেট ৬০০০ কি ততাধিক টাকায় উভয় পক্ষকে আবদ্ধ করে। ঐ ভ্কুম যুক্তিসঙ্গত নহে বলিয়া হাইকোর্ট ভাহা রহিত করেন।

মাজিঙ্কৈটের কার্যানুষ্ঠান স্পষ্টতঃ যুক্তিবিবৰ্জ্জিত বলিয়া প্রতীয়-মান হইলে, হাইকোর্ট হস্তক্ষেপ করিতে পারেন। কার্যাবিধির ২৯৪, ২৯৭ ধারায় তাঁহাদের ক্ষমতা প্রতিরোধ করে না।—

२ कलि->>० शृः।

শ্রী শ্রীমতী মহারাণী বঃ আদ্বিগোড়া ওগয়রহ।

সহাপরাধীর স্বীকারোজি—১৮৭২ খৃঃ—১ আইনের ৩০ ধার।।
কেবল মাত্র সহাপরাধীর স্বীকার বাক্যে নির্ভর করিয়া আসামীর
অপরাধ নির্ণয় করণ আইনসঙ্গত নহে।—১ মা—১৬৩ পৃঃ।

জীজীমতী মহারাণী বঃ গোবিন্দ।

জ্ঞানকৃত বধ—অপরাধযুক্ত নরহত্যা—দশুবিধির ২৯৯ ও ৩০০ ধারা।

আসামী আপন জ্রীকে মাটিছে ফেলিরা তাহার বক্ষের উপর ইাটু দিরা মুখে ছই তিন প্রচণ্ড মুফ্যাঘাত করিলে মন্তিক্ষে রক্ত প্রবাহিত হইরা তৎক্ষণাৎ কি কিঞ্চিৎ পরে ঐ জ্রীর মৃত্যু হয়। ধার্য্য হইল যে বধ করিবার অভিপ্রায়ের অবর্ত্তমানে এবং ঐ আঘাত সাধারণতঃ সাংঘাতিক না থাকার, আসামীর অপরাধ "জ্ঞানকৃত বধ নহে" কিন্তু "অপরাধযুক্ত নরহত্যা" 1—> বো—৩৪২ পৃঃ। জী জীমতী মহারাণী বঃ পরশাপা মহাদেবপা। আদালত অবজ্ঞা—কাধ্যবিধি ৪৩৫, ৪৩৬, ৪৭১, ৪৭২, ৪৭৩ ধারা।

কার্য্যবিধির ৪৭৩ ধারার বিধান কেবল মাত্র দণ্ডবিধির দশম অধ্যায়ের লিখিত অপরাধে আবদ্ধ নছে, কিন্তু সর্বপ্রকার আদালত অবজ্ঞায় থাটিবে ।—১ বো—৩৩৯ পৃঃ।

জীজীমতী মহারাণী বঃ লোচা কালা। কাহাবিধির ১৫৭ ধারা—ওয়ারেন্ট।

ওয়ারেণ্ট বাহির করিবার সময় মাজিট্রেটকে যে আপন এলাকার অন্তর্গত থাকিতে হইবে এমন নহে, এলাকার বাহিরে থাকিয়াও তিনি ওয়ারেণ্ট বাহির করিতে পারেন।—১ বো—৬৪০ পৃঃ।

জীজীমতী মহারাণী বঃ শস্তু রঘু। দশুবিধি ৪৯৪ ধারা—স্বন্ধতিক্ত লোকের বিবাহ অসিদ্ধকরণ ক্ষমতা।

বিবাহ অসিদ্ধকরণ কিষা কোন জ্রীলোককে স্থামী বর্ত্তমানে বিবাহ করিতে অনুমতি দেওন, এইরূপ ক্ষমতা কোন জাতি-সমাজের নাই এবং আদালতও সেই ক্ষমতা প্রাহ্ম করিবেন না।

দওবিধির ৪৯৪ ধারামত -পুনর্কিবাহ করণ বা ভাছার সহায়তা (১০৯ ধারা) করণ অপরাধে অভিযুক্ত হইয়া যদি কেহ সাফাইস্বরূপ কহে যে জাতি-সমাজের অনুমতিক্রমে স্বামী বর্ত্তমানে পুনশ্চ বিবাহ সিদ্ধ হইয়াছে ইহা সে সরলভাবে বিশ্বাস করিয়াছিল, তবে সেউজি আদালতের গ্রাহ্য হইবে না 1—১ বো—৩৪৭ পৃঃ।

জীজীমতী মহারাণী বঃ অরুণ চেলম গং। দওবিধি ২৭২ ধারা।

দণ্ডবিধি ৩৭২ ধারার লিখিত অপরাধ সাব্যক্ত করিতে হইলে, নাবালিকার শরীর সম্বন্ধে দখল বা আধিপত্য, সম্যুক্ প্রকারে হস্তান্তর হওয়া আবশ্যক করে না।—১ মা—১৬৪ পৃঃ।

শীশীমতী মহারাণী বঃ আদিবিগতু। ভিন্ন রাজ্যে চুরি—১৮৭২ খৃঃ ১০ আইনের ৬৭ ধারা।

অন্য রাজার অধিকারে চুরি যাওয়া মাল সহ আসামী ত্রিটিস অধিকারে গ্রেপ্তার হয়। ধার্য্য হইল যে কার্য্যবিধির ৬৭ ধারা মতে ত্রিটিস অধিকারে চুরির অভিযোগ আসামীর বিৰুদ্ধে হইতে পারে ना। [किन्तु कांत्रामान नथतन दाथा व्यश्नाध विठात इहेटल शादत।] > मा->१३ भ्रः।

> 🗃 🗃 মতী মহারাণী বং সমিয় কন্দান। দশুবিধি ৩৬৩ ও ১১৬ ধারা—মহুষ্য চুরির সহায়তা।

অপ্রাপ্তবয়ক্ষা বালিকা-চুরি অপরাধের সহায়তা দোবে আসামী শান্তি পায়। আসামী জানিত যে ঐ বালিকা কোমরিন নামক ব্যক্তির কুপরামশে পিভাষাভার বিনা অনুমতিক্রমে গৃহ পরিভ্যাগ করিয়াছিল, তথাপি সে উহাকে সিংইল দ্বীপে কান্দিগ্রামে লইয়া বাইতে প্রবৃত্ত হইরাছিল। পথে দে ধৃত হয়। মনুষ্য-চুরি অপরাধ সম্পূর্ণ হইবার অত্যে অর্থাৎ বালিকাটিকে বাটী হইতে বাহির করি-বার পূর্বের কোমরিনের সঙ্গে আসামীর ষড্যন্ত্র ছিল না বলিয়া সেসন জজা ভাহাকে ছাড়িয়া দেন ৷ ধার্য হইল যে যতক্ষণ কর্ত্তু-পক্ষের সংরক্ষণ হইতে বালিকাটী স্থানাস্তর নীত হইতেছিল তত-क्रन পर्यास थे अभवाद्यत महायुका मस्त्र । वर्त्तमान साकक्रमाय ৩৯০ ও ১১৬ ধারা মত আসামী দণ্ডার্ছ।—১ মা—১৭০ পৃঃ।

🕮 🕮 মতী মহারাণী বঃ বুদ্বুনাক্ষু গং। সহাপরাধির সাক্ষ্য ও স্বীকার থাকা।

यथन व्यमामीत (भनाक महस्त व्यन) প্रमान नाहे, क्रमाश्राक्ष সহাপরাধির সাক্ষোর মূলে অপরাধ নির্বায় আইন্সক্ত নতে: मकी श व्यामाभी त की कात वाका की मारकात यथके (भावक विलय গণ্য इटेरव ना।--> (वा-- ८१८ थुः।

অ অমতী মহারাণী বঃ পিটরসন। অপরাধ করিবার উদ্যোগ।

কেবলমাত্র অপরাধ সাধন করিবার উপায় উদ্ভাবন করিলেই "উদ্যোগ" বলা যায় না ৷ যে অবস্থায় আসামী প্রতিবন্ধক প্রাপ্ত मा क्रेल व्यापदाध मः विकि क्रेक, काक्रांक " केरमान " करका > पला-७>७ रिः।

শীশীমতী ভারতেশ্বরী বং চারু নইয়া। म्ख्रविशि—889 श्रांद्रा—माश्रांद्रदश्त भगा अमे।

সাধারণের গম্য নদীন্থিত জলকর সভ্যের অবৈধরণে ব্যাঘাত জন্মাইলে দওবিধির ৪৪৭ ধারার অপরাধ করা হয় না ৷ কোন নদীতে বাদির জলকর সত্ব ছিল, আসামী ঐ নদীতে জাল ফেলিয়া মংস্ম ধরিত। কৌজনারী আদালতে তাহার নামে অভিযোগ স্থাপন হইলে বিচারে ৪৪৭ ধারামত অপরাধী সাব্যস্ত হইয়া তাহার व्यर्थम् इत्र । निर्देश नकत्त्र भगनाभग्रत्त व्यथिकात व्याष्ट्र, त्रहे প্রকার স্থানে প্রবেশ করিলে অন্ধিকার প্রবেশ করা হয় না বলিয়া হাইকোর্ট উক্ত দণ্ডাজ্ঞা রহিত করেন।— ২ কলি—৩৫৪ পৃ:।

ব্রীন্সীমতী মহারাণী বঃ আচার্য্য ! मखर्विध -७०४ क शांता ।

अकृति नामाना विवादन जानामी क्लान लाक्क शका मात्राञ्च সে আঢ়াই হাত নিচে রাস্তার উপর পড়িয়া যে আঘাত পার, তাহা হইতে ধনুফকার জনিয়া পঞ্চম দিবদে তাহার মৃত্যু হয়। ধার্য্য হইল যে দণ্ডবিধির '৩০৪ ক ধারণর লিথিত অপরাধ কিছা অপরাধযুক্ত নরহত্যার অভিযোগ আদামীর বিকল্পে হইতে পারে না; বেছেতু এরপ ফল ঘটিবার কোন সম্ভাবিত কারণ বা ঘটাই-वात উদ্দেশ্য ছিল ना ।--> गा---२२৪ शृः।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ রামেশ্বর রায়।

দওবিধির ১৯২, ১৯৩, ৪১৪ ধারাঃ—মিথ্যা প্রমাণ সংঘটন—চোরামাল গোপন করা।

কোন নিরপরাধিকে অপরাধী সাব্যস্ত করাইবার মানসে আসামী ভাছার বাটীতে ও বাগানে অপহৃত রেলওয়ে পিন গোপন করণে সহায়তা করিলে, বিচারে আনীত হইরা চোরামাল গোপন কর-ণের সহায়তা ও মিথ্যা প্রমাণ প্রস্তুত করা, ছই অপরাধে দণ্ডবিধির ৪১৪ ও ১৯৩ ধারা মত অপরাধী সাব্যস্ত হইয়া পৃথক্ পৃথক্ দণ্ড পায়। ধার্য্য হইল যে মাজিপ্রেটের পৃথক্ পৃথক্ দণ্ডাজ্ঞা আইন-সক্ষত হইয়াছিল।—১ এলা—৬৭৯ ধারা।

জী জীমতী ভারতেশ্বরী বং হলধর পাড়ুই। দণ্ডবিধি ২৭৭ ধারা।

উলিখিত ধারার অন্তর্গত '' সাধারণের ব্যবহার্যা উলুই কি জলা-শয় '' অর্থে সাধারণ ব্যবহার্যা নদী বুঝাইবে না। মৎস্থা ধরিবার জন্য নদীতে বৃক্ষের শাখা পুতিলে ঐ ধারার কথিত অপরাধ হয় না। ২ কলি—৩৮৩ পৃঃ।

জ্ঞীজ্ঞীমতী ভারতেশ্বরী বঃ দিদার সরকার। সক্ষরিত্রের জামিন—কার্যবিধির ৫০৫ ধারা।

যাহার নিকট হইতে সচ্চরিত্রের জামিন তলব করা যায়, ত্রুম পালন করিবার নিমিত্ত ভাহাকে অবসর দেওয়া উচিত।—

२ कलि-७৮8 पृः।

জীজীমতী ভারতেশ্বরী বঃ দ্বারিকানাথ চৌধুরী। ষ্টাম্প আইন (১৮৬৯ খৃঃ ১৮ জাইন) ২৯ * ধারা।

ধার্য্য হইল যে দণ্ডের পরিমাণ স্থির করিবার জন্য ফ্রাম্প মাস্থল না দিয়া বঞ্চনা করিবার অভিপ্রায় ছিল কি না ইহা নির্ণয় করিতে মাজিট্রেট বাধ্য ৷—২ কলি—৩৯৯ পৃঃ ৷

[#] ১৮৭৯ শৃঃ ১ আইনের ৬২ ধারা।

थे याकक्षमात्र चाद्रा धार्या इहेल (य २८* धात्रा मः कांख दय কোন যোকদ্দমা কালেক্টরের গোচর আনে তিনি তাহাই ফোজদারী সোপর্দ্দ করিতে পারেন। কিন্তু ফোজদারী সোপর্দ্দ করিবার পূর্বে আসামীর কোন বঞ্চনা করিবার অভিপ্রায় ছিল কি না ইহাও নির্দ্ধা-রণ করা তাঁহার কর্তব্য। কিন্তু কালেক্টর সোপদ্ধ করিলে যদি এমন প্রমাণ হয় যে দলিলে ফাম্প রুম্ম দেওয়া হয় নাই, কি কম দেওয়া হইয়াছে তবে ২৯† ধারা মত মাজি ট্রেট অপরাধ সাব্যস্ত করিতে বাধ্য, কিন্তু দণ্ডের পরিমাণ নির্ণয় করণ সম্পুর্ণরূপে তাঁহার স্বীয় আয়ত্যাধীন। -- ২ কলি-- ৪০৩ পঃ।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ হনুমন্ত।

১৮৭২ খ্রঃ ১০ আঃ—৩৪৪, ৩৪৫, ৩৪৭, ৪৫২ গং। দঃ বিঃ ৩৭৪ ধারা।—প্রমাণ-আইনের (১৮৭২-১ আঃ) ৩২ ধারা ২ প্রকরণ ও ৩৪ ধারা-পৃথক্ অপরাধের একত্র বিচার-হিসাব ইত্যাদি।

১৮৭২--१७, ১৮৭৩--१८, ও ১৮৭৪--१৫ श्रुकीरक চুরী, চুরীর সহা-য়তা, চোরামাল দখলে রাখা হেতু আসামী ২৭টী অপরাধে অভিযুক্ত হইয়া বিচারে আনীত হয়, ও তুইটী অভিযুক্ত অপরাধে অপরাধী সাব্যস্ত হইয়া দণ্ড পায়। ধার্য্য হইল যে কার্য্যবিধির ৪৫২ ধারা মতে ঐ অপরাধ নির্বায় আইনবিকল।

যে কোন ব্যক্তি কোন হিসাব সংক্রাপ্ত বিষয়ের সভ্যতা অবগত থাকে সে সমুং কিয়া তাহার উক্তি ক্রমে এ হিসাব না রাখিলে বা রাখা হইলেও যদি ব্যব্সা সম্বন্ধে নিয়মিত রূপে অন্যের দ্বারা রক্ষিত হয়, তবে প্রমাণ-আইনের ৩৪ ধারা মত তাহা আদা-লভের আহা হইতে পারে। হিসাব লিখিবার জন্য নিযুক্ত কর্মচারীর দ্বারা কোন কারবারের পক্ষে এই হিসাব রক্ষিত হইয়াছে যদি এইরূপ প্রমাণ হয় ভবে দেই হিসাব রীতিমত রক্ষিত না হইলেও উহা এ কারবারের বিৰুদ্ধে স্বীকৃত বৃত্তান্ত বলিয়া প্রাসঙ্গিক হইবে।

^{*} ১৮৭৯ খৃঃ ১ আইনের ৪০ ধারা দেখ। † ১৮৭৯ খৃঃ ১ আইনের ৬১ ধারা।

যে অভিযুক্ত ব্যক্তি কার্য্যবিধির ৩৪৭ ধারামত ক্ষমা প্রাপ্ত হয় मारे, माजिए क्षेत्रे जाराक माकी कतिया नरेए शास्त्रन ना। क्वन মাত্র সেসনের বিচার্য্য এমন ভিন্ন অপরাধে অভিযুক্ত ব্যক্তি কমা शांश इहेल जाहात माका शांमिक इहेर ना; यहज म निर्द्धायी मावार् थालाम थाय नाहे, वा ज्यानान जाहारक हाज़िया (मग्र नारे किया जारात अर्थताथ निर्वय करत नारे।

भवर्गराष्ट्रित विजनভागी मत्रकाती कक्रनतक्तरकत मथला वि कार्ष थाक जाहा गवर्गरा केंद्र श्रीय पथल थाका विलया श्रीतानिज ছইবে। বিনাক্ষমতায় কিয়া শঠতাক্রমে সেই জঙ্গল রক্ষক সম্মতি দিলেও যদি কেহ শঠতাক্রমে ঐ কাষ্ঠ লইয়া যায় তবে ৩৮১ ধারা মত তাহার চৌর্য্য অপরাধ হইবে।-> বো-৬১০ পৃঃ।

অন্নপূৰ্ণা বাই সংক্রান্তে। কার্যাবিধির ৩০ অধ্যার—চোরা মাল—তাহার প্রতার্পণ ইত্যাদি i

কোন সম্পত্তি চুরি করিয়াছে বলিয়া ক পুলিসের নিকট অভি-যুক্ত হয়। চৌর্য্য অপরাধ ঘটে নাই বলিয়া পুলিস কোন দ্বিতীয় শ্রেণীর মাজিট্রেটের গোচরে রিপোর্ট করে। পুলিদের সহিত একমত হইয়া মাজিট্রেট সম্পত্তি ককে প্রভ্যর্পণ করিতে इक्म (मन। वानी अ इक्रम अमस्के इहेशा (जलात माजिए द्विर्दित निकर्छ पत्रथान्य कतात्र, जिनि धार्या कतिलन य करिनक पृष्ठ वाकित मथल हरेट क जे मण्याखि लहेगाहि किंद्ध मठेडाक्तरम नरहः धवः উহা মৃতব্যক্তির উত্তরাধিকারিগণুকে দিঘার আদেশ করিলেন। সম্পত্তি উহারা পাইল।

ধার্য্য হইল যে কার্য্যবিধির ৩০ অধ্যায়ের বিধান ঐরপ মোক-क्यांत्र थाटि ना। कार्याविधित 850, 859 3 859 थाता किवन ভদত্তের পূর্ববর্তী ও ভাহা হইতে স্বতন্ত্র কার্য্যানুষ্ঠানে খাটিবে। माधातगढः यथन छम् ख वा विठात आगामी निर्द्धायी मावाख হইয়া খালাস পায় কিষা ভাহাকে ছাড়িয়া দেওয়া হয়, এমত স্থলে

যাহার দখলে মাল পাওয়া গিয়াছিল, তাহাকে উহা প্রত্যর্পণ করিতে আদালত বাধ্য। কিন্তু যদি মাজিপ্রেটের এমন হাদ্বোধ হয় যে মাল সম্বন্ধে কোন অপরাধ কৃত হইয়াছে তবে ৪১৮ ধারার বিধানক্রমে তিনি আপন বিবেচনা মত ন্যায্য ভুকুম প্রচার করিতে शाह्यम ।

জেলার মাজিট্রেটের আইনবিক্দ্ধ ত্রুম অনুযায়ী কোন সম্পত্তি পুলিস কর্ত্তক কোন পক্ষকে প্রত্যৈপিত হইলে পর হাইকোর্ট উহার ব্যভিক্রম করিতে পারে না ।—> বো—৬:० পৃঃ।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ ডনেলী।

কার্যবিধির ২১৫ ধারা, আসামী ছাড়িয়া দেওন—মোকদ্দমা পুনরুত্থাপন।

প্রথম বিচারকালে মাজিট্রেটের সমক্ষে যে প্রমাণ উপস্থিত ছিল. ভদ্বতীত অন্য কোন নুতন প্রমাণ নাপাইলে জেলার মাজিট্রেট ২১৫ ধারা মত ছাডিয়া দেওয়া আসামীর বিকদ্ধে অভিযোগ পুনংস্থাপন করিতে পারেন না। যখন কোন আসামীকে অবৈধরণে ছাডিয়া দেওয়া হইয়াছে তখন জেলার মাজিট্রেট মোকদ্দমা পুনকত্থাপন জন্য हाहेटकाट निथिट भारतन। धार्या हहेन या, य साकक्रमाय माजि-ট্রেট্ আইন ও বৃতাম্ভ সম্বন্ধে স্বয়ং একমাত্র বিচারকর্ত্তা থাকেন, সে মোকদ্দমায় তিনি উপযুক্ত সাক্ষী হইতে পারেন না। মর্কবী জজ কৰেন যে এরপ মোকদমায় মাজি ট্রেট যদি স্বয়ং সাক্ষ্য দিয়া আসা-মীকে অপরাধী সাব্যস্ত করেন তবে এ দোষ নির্বাহ্ম আইনবিক্ষা। জজ প্রিনদেপ কহেন, যদি মাজিট্রেটের সাক্ষ্য অগ্রাহ্য করিয়াও নথীতে প্রচুর প্রমাণ থাকে যদ্ধারা আসামীকে দোষী সাব্যস্ত করা যাইতে পারে, তাহা হইলে উল্লিখিত অপরাধ নির্বায় আইনবিকল্প न दि। — २ किल — 8 ० ६ भृः।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ ব্রজনাথ দে ও যতুনাথ ঘোষ।

বঙ্গীয় ১৮৬৪ খুঃ ৩ আঃ—সাধারণের গমনাগমনের পথ বন্ধ বা পরিবর্ত্তন করিতে মিউনিসিপাল কমিটার ক্ষযতা।

১৮৬৪ খ্লঃ ও বন্ধীয় আইন, যদ্ধারা সাধারণের গম্য রাস্তা মিউ-নিসিপাল কমিসনরদিগোর উপার অপিত হইয়াছে তাহাতে এমন কোন বিধান নাই যে তাঁহার৷ এক্রপ রাস্তা বা পথ বন্ধ বা ডাহার দিক পরিবর্ত্তন করিতে পারেন।—१ কলি—৪২৫ পৃঃ।

> শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বং পীতাম্বর জিন। खमान-आहेरनद २० ७ ५७ शहा-अनदाय श्रीकांद्र ताका।

১৮৭२ थुः ১ आहेरनत २७ धात्रात गर्म अगन नरह रा अकरत विहास আনীত সহাপরাধীর পুলিস সমক্ষে অপরাধ স্বীকার বাক্য অন্য আসামী প্রমাণ করিতে পারিবে না। কিন্তু ঐ স্বীকার বাক্য স্বীকার কারীর বিৰুদ্ধে প্রমাণ স্বরূপ গ্রাহ্ম হইবে না: কেবল মাত্র অপর আসামীর সাপক্ষে প্রমাণ বলিয়া গ্রাহ্য হইতে পারিবে।-

२ (वा-७) 9:1

कूनरवथ ।

শ্রীপ্রীমতী ভারতেশ্বরী,বঃ কাঞ্চন সিং। কার্যাবিধির ২৯৬ ধারা—সেসনের মোকদ্মা।

কোন ব্যক্তি দণ্ডবিধির ৪৫৭ ধারামত অভিযুক্ত হইলে মাজি ট্রেট ভাহাকে ছাড়িয়া দেন। সেসন জ্বজ কার্য্যবিধির ২৯৬ ধারার উপর নির্ভর করিয়া আসামীকে দঃ বিঃ ৩৮০ ও ৪৫৭ ধারার অভিযোগে সেসনে সোপর্দ্ধ করিতে মাজিট্রেটের প্রতি আদেশ প্রচার করেন। ফুলবেঞে (ত্প্ৰাক্ষী এবং ওত্তফিত জজ অসমত) ধাৰ্য্য হইল যে ঐ (ममन मार्थिक करा चारेन विक्क ; २३७ थातात '' (ममान साककमा " অর্থে কেবলমাত্র সেসনের বিচার্য্য মোকদমা বুঝায়।—১এলা—৪১৩পৃঃ।

इिख्यान न तिर्लार्ड-३৮१৮ थृकीका

कुल ८वक ।

চিল্লিমবিগড়ুর বিষয়ে। কার্যবিধির ৪৬ ধারা।

উল্লিখিত ধারানুযায়ী যে মাজিঞ্জেটের নিকট অধিক শাস্তির জন্য কোন মোকদ্দমা প্রেরিড হয় তিনি তাহা সেসনে সোপর্দ করিবার আদেশ করিতে পারেন।—> মা—২৮৯ পৃঃ।

कोजमात्री ञाणील।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ বলিয়ান খাঁ।

দঃবিঃ ২১৭ ধারা—অনির্দিষ্ট অভিবোগ।

আসামী দঃ বিঃ ২১৭ ধারামত অভিযুক্ত হয়, কিন্তু আইনের কোন বিধি কি প্রকারে অমান্য করিয়াছিল, তাহা অভিযোগ-পত্রে নির্দ্দিই ছিল না। ধার্য্য হইল যে অভিযোগ-পত্র অনিন্দিই রূপে লিখিত হইয়াছিল অভএব বিচারকালে এ অভিযোগের যে মর্ম্ম সংগৃহীত হইয়াছে আপীলে বাদীর পক্ষে সেই মর্ম অনুযায়ী কার্য্য করিতে হইবে।—২ বো—১৪২ পৃঃ।

সর্ব্ব ঐতালের বিষয়ে।

আপীলকারী বে কোন লোককে ক্ষমতা দেয় সেই ফেজিদারী আপীলের দরখান্ত আপীল আদালতে দাখিল করিতে পারে।—

> মা-৩·৪ খা I

——বিষয়ে।

কার্যাবিধির ৪৭৩ ধারা।

উল্লিখিত ধারার নিষেধ বাক্য কেবল ব্যক্তি সম্বন্ধে বুঝাইবে ৷

1 300-IF C

শ্রীপ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ আবুল হাসান। দঃ বিঃ ২১১ ধারা—মিথ্য অভিযোগ।

মিথ্যা অভিযোগ করিলেই ২১১ ধারার অপরাধ করা হয়, যদিও অভিযোগের উপর কোন কার্যানুষ্ঠান হয় নাই ।—১ এলা—৪৯৭ পৃঃ।

প্রীপ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ শালিক।

मः विः २১১ धाরा ।

উক্ত ধারা মত অপরাধ সাব্যস্ত করিতে গোলে ইহাই প্রচুর যে আসামী মিথ্যা অভিযোগ করিয়াছিল ও তাহার বিচারের কালে ঐ অভিযোগ মূল্তবী নাই, অর্থাৎ নিষ্পত্তি হইয়া গিয়াছে !—

३ धना-०२१ भुः।

মথুরা বঃ জওয়াহের।

দঃ বিঃ ১৮৮, ৪৪১ ধারা—১৮১৯ শৃঃ ৬ আইন—ধেয়াঘাট।

নাধারণের পারঘাটের তিন মাইল ব্যবধানে খেয়া দিলে ৪৪১ ধারার লিখিত অপরাধ ভাবে অনধিকার প্রবেশ হয় না। কিন্তু যদি কোন খেয়াঘাটে কিম্বা ভাহার নিকটে খেরা দিতে কোন ক্ষমতা প্রাপ্ত রাজকীয় কর্মচারীর দ্বারা নির্মিদ্ধ হইয়াও খেয়া চালায় ভবে সেদঃ বিঃ ১৮৮ ধারামত অপরাধী হয়।—১ এলা—৫২৭ পৃঃ।

্শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ কান্তপ্রসাদ।

সরকারী চাকর—অন্যায্য পারিতোষিক। দঃ বিঃ ১৬১ ও ১৬৫ ধারা।
ক একজন পুলিস কর্মাচারী। আদালতে পুলিস ডাইরী পাঠ
করা ও পুলিসের মোকদ্মা পেষ করা তাহার উপার ভার ছিল।

কোন এক চুরি মোকদ্বনায় আসামী শান্তি পাওয়ায় অপহত মাল वानीक (न उद्यात चाड्डा इय़। क वानीत निकर्ष हाराय थे मालत মূল্যের কিয়দংশ পায়। ১৬১ খারার বর্ণিত কোন উদ্দেশ্য বা পারি-ভোষিক স্বরূপ क औ अर्थ পায় নাই কেবল দস্তরীর স্বরূপ পাইয়াছিল। ধার্য্য হইল যে দঃ বি: ১৬১ ধারামত কর শান্তি হইতে পারে না, ১৪৫ ধারামত তাহার শাস্তি হওয়া উচিত।—১ এলা—৫৩০ পৃঃ।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বং ঠাকুর দয়াল সিং। কাৰ্যাবিধিৰ ৫৩০ ধারা।

छ्रे विद्राधी ज्योगादतत्र मध्य मध्य नघस्त्र विद्राधित साकक्ष्मात्र मधावर्जी मजाधिकाती, यथा ठिकानात. याशांक প্राज्ञाता थाजाना मिट्डिह, छाहात दाता मथल, कार्याविधित ६७० धातांखर्गंड मथल বলিয়া পরিগণিত হইবে না।—৩ কলি—৩২০ পৃঃ।

क्लरवधः ।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ বৈদ্যনাথ দাস। জরিমানা ও সম্পত্তি জব্দে দণ্ডনীয় অপরাধ—১৮৫৬ খৃঃ ২১ আইনের ৪৯ * ধারা—সরাসরি বিচার।

উল্লিখিত অপারাধ সরাসরি মতে বিচার হইতে পারে। উহাতে যেসম্পত্তি জন্দের বিধান আছে তাহা কেবল অপরাধ সাব্যস্তের ফল ব্যতীত দণ্ডের অংশ বলিয়া পরিগণিত হইবে না।—৩ কলি—৩৬৬ পৃঃ

क्लिमाड़ी जाशीन।

প্রীপ্রীমতী ভারতেশ্বরী ও মিচেল বঃ যজেশ্বর মুচী। নোট চুরি-টাকা দইয়া নোট ভাঙ্গান চুক্তি নহে।.

कत्र अकथान गवर्गायन्ते नाठि ठूति यात्र । ग मंदे नाठि थत्र निकर्ष লইয়া যাওয়ায় সে সরলভাক্রমে উহা রাখিয়া গকে টাকা দেয়।

र्न ১৮৭৮ मारमब न आहेरनद ७५ छ १६ शहा सम्ब

গ অপরাধী সাব্যক্ত হইলে পর মাজি ট্রেট নোট খকে দেন। ক জজের নিকট আপীল করে। সেনন জজ কার্য্যবিধির ৪১৯ ধারা মতে স্বয়ং ঐ ত্কুমে হস্তক্ষেপ করিতে পারেন না বিবেচনায় মোকদ্মার অবস্থা বিহিত ত্কুমের জন্য হাইকোর্টের গোচরে আনেন।

ধার্য্য হইল যে সেসন জজ কার্য্যবিধির ৪১৯ ধারামত ঐ মোক-দ্মা নিষ্পত্তি করিতে পারিতেন। ঐ ধারার লিখিত " আপীল-আদালত " অর্থে যাহা সমক্ষে আপীল চলিতেছে এমত নহে, যাঁহার আপীল শুনিবার ক্ষমতা আছে তাঁহাকে বুঝায়।

আরও ধার্য্য হইল যে মাজিপ্রেটের হুকুম ন্যায্য হইয়াছে। সরলভাবে টাকা দিয়া নোট রাখিলে, চুক্তিসম্বন্ধীয় আইনের ৭৬ ধারার বিধানমত উহাকে চুক্তি বলা যায় না।—৩ কলি—৩৭৯ পৃঃ।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী ও জহরদ্দী, বঃ হিম্মতুলা। কার্যবিধি—২১৫ ধারা—বাদীর সাকী।

আসামীকে ২১৫ ধারামত ছাড়িয়া দিবার অগ্রে বাদীর পক্ষের সমুদ্র সাক্ষীর জোবানবন্দী লইতে মাজিপ্রেট্ বাধ্য। পূর্বপরীক্ষিত সাক্ষীর সহিত একোজি হইবে অনুমানে কতক সাক্ষীর জোবানবন্দী লইতে তিনি অস্থীকার করিতে পারেন না।—৩ কলি—৩৮৯ পুঃ।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বৃঃ আমিরদ্দিন।

দশুবিধির ২১৭ ধারামত অপরাধ সাব্যস্ত করিতে হইলে ইহাই প্রচুর যে আসামী রাজকীয় কার্য্যকারক হইয়া রাজকীয় কার্য্যকারক অরপে আপনার কর্ত্তব্যকার্য্য সম্বন্ধে আইনের বিধি জ্ঞানতঃ অমান্য করিয়াছে, এবং কোন ব্যক্তিকে আইনত দশু হইতে রক্ষা করাই তাহার উদ্দেশ্য ছিল। যে ব্যক্তিকে রক্ষা করিবার উদ্দেশ্য ছিল সে বস্ততঃ কোন অপরাধে অপরাধী কি না এবং সেই অপরাধের জন্য সেদ্ধার্হ কি না ভাহা দেখা নিপ্রাঞ্জন। ৩ কলি—৪১২ পৃঃ।

कुनरवश्व १

্প্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বং কাশ্মীরী লাল। মিথ্যা সাক্ষ্য-দঃ বিঃ--১৯৩ ধারা--বিচার।

ধার্য্য হইল (চিফ্জর্ফিস্ ফুরার্টেটের অমতে) যে দণ্ডবিধির ১৯৩ ধারার অপারাধ কার্যাবিধির ৪৭৩ ধারার অন্তর্গত আদালত অবজ্ঞা বিধায়, যে আদালতের সমক্ষে উহা কৃত হয় তিনি বিচার করিতে অক্ষম। চিফ্জফিস ফুরার্ট কহেন যে যদি ১৯৩ ধারার কথিত অপারাধ সেই মাজিট্রেটের বিচার্য্য হয় তবে ঐ অপারাধ তাহার সমুখে হইয়াছে বলিয়াই তাহার অধিকার বহিত্তি নহে।—
১ এলা—৩২৫ পূঃ ১

कोजमाती वाशीन।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বং কুতুরুতুলা গং। ভাভিযোগ-পত্র লিপিবদ্বের পর সেমন সোপর্দ্ধ।

অভিযোগ-পত্র লিপিবদ্ধ হইলে পরেও মাজি ট্রেট পরবর্ত্তী কার্য্যা-মুষ্ঠান বন্ধ করিয়া কার্য্যবিধির ২২১ ধারামত আসামীকে সেসনে পাঠাইতে পারেন।

যদিও ২২০ ধারার ব্যাখ্যায় কহে যে অভিযোগ-পত্ত লিপিবদ্ধ হইলে আ্যানীকে অপরাধী সাব্যস্ত করিতে কিয়া খালাস দিতে হইবে, তথাপি ভাহার অর্থ এইরূপ নহে যে, যে মাজিপ্রেট্ চার্য্য করিয়াছেন তিনিই আ্যামীকে অপরাধী সাব্যস্ত ক্রিবেন বা খালাস দিবেন।—ও কলি—৪৯৫ পৃ:।

প্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী ও রামমাণিক্য চক্রবর্তী বং ধনঞ্জয় বরজ।
পুণক ভাপরাং—পুণক্ অভিযোগ—কার্যাবিধির ৫৩২,৫৫৩,৫৫৪ ধারা।

কভকগুলি অভিযোগ এক বিচারে আসামীর বিৰুদ্ধে লওয়া যাইতে পারে ইহাই কার্যাবিধির ৪৫৩ ধারায় নির্ণীত আছে। এক বংসরের মধ্যে কৃত পৃথক্ পৃথক্ অপরাথে (বাহার সংখ্যা যাই হউক না কেন) পৃথক্ পৃথক্ মোকদ্দমা হইয়া এক দিনে বিচার ছওনের भारक के शातास त्कान निरंघ नाहे।—७ कलि—६८० शृ: 1

🖣 🕮 মতী ভারতেশ্বরী বঃ পদ্মনাভূপে। কার্যাবিধির ৪৬৮ ধারা—জেলার মাজিট্ট্রেটের সহিত অপর প্রথম শ্রেণী মাজিট্রেটের সমন্ত্র।

উল্লিখিত ধারার বিধান পক্ষে প্রথম শ্রেণীর মাজিট্রেট জেলার माजिए अर्थेन। अथरमाज माजिए के चीत नमक जानकः মিথ্যা সাক্ষ্য দেওয়া অপরাধে অভিযোগের অনুমতি দিতে অস্বী-কার করিলেও, জেলার মাজিট্রেট দেই অরুমতি দিতে পারেন। কিন্তু সেসন জজু পারেন না।—২ বো—৩৮৪ পৃঃ।

🕲 শ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ মেঘ। দগুবিধির ৭৫ ধারা।

ধার্য্য হইল যে যথন কোন ব্যক্তি তিন বংসর মেয়াদ কিয়া ততো-ধিক শান্তিযোগ্য দণ্ডবিধির ১২ ও ১৭ অধ্যায় লিখিত কোন অপরাধ করিয়া অপরাধী দাব্যস্ত হইবার পূর্কে পুনরায় দেই প্রকার কোন অপরাধ করে, তবে দণ্ডবিধির ৭৫ ধারা নুযায়ী দ্বিতীয় অপরাথে অপরাধী দাব্যস্তের কালে দে অধিক শান্তি পাইবে না !--১ धना-७०१ भः।

🕮 শ্রীমতী ভারতেশ্বরী ও দীননাথ ঘটক বঃ রাজকুমার সিংহ গং। একমালী ক্ষমিতে অনিষ্ট-জনক কার্য্য-অপরাধ ডাবে অনধিকার প্রবেশ ইত্যাদি কার্যাবিধির ৩৫৯ ধরি।।

ক কোন জমির এজমালী শরিক অপর শরিক, খর বিনানুমতি-ক্রমেও ইচ্ছার 'বিকদ্ধে ঐ জমির উপর একটা ঘর প্রস্তুত করে। বিরোধ উপস্থিত হওয়ায় মাজিটেট তদন্ত করিয়া কার্যাবিধির (১৮৭২ খঃ ১০ আঃ) ৫৩০ ধারামত জমির যে অংশে এ ঘর ছিল তাহার দখল ককে দিলেন। জাক্সন জজ धার্য্য করিলেন যে মাজিঙ্টের ঐ ত্কুম অমমূলক, কেন না ঐ রূপ অবস্থায় ৫৩০ থারার विश्वान थाएँ ना ।

পরে খ দেওয়ানী আদাপতে এই মর্ম্মে নালিশ করে যে এ সমু-দয় জমিতে তাহার এজমালে দথল আছে, ক উহাতে কোন ঘর প্রস্তুত করিতে পারে না; এবং কর ঘর ভাঙ্গিয়া দিবার অনুজ্ঞা চাহে। খ ডিক্রী পাইলে ভাহার চাকরেরা ঐ ঘর ভাঙ্গিয়া ফেলে। ক্ষেজ্লারী আদালতে তাহাদের নামে অভিযোগ হওয়ায় অপকার করা অপরাধে ভাহাদের জরিমানা হয়। জাক্সন জজ ধার্য্য করিলেন যে আসামীরা কোন অন্যায্য ক্ষতি করে নাই, স্কুতরাং তাহাদের বিৰুদ্ধে অপকারের অভিযোগ চলিতে পারে না।

কিছুকাল পরে খর চাকরেরা দেখিল যে কর লোকেরা পুনরায় ঐ ঘর অর্থাৎ একটা নহবৎখানা প্রস্তুত করিয়াছে। তাহারা নিষেধ করিল কিন্তু কর লোকের৷ উহা আহ্য না করায়, বাঁশ টানিয়া ফেলিল ও কর লোকদিগকে ঠেলিয়া ফেলিয়া দিল। পরদিন কর লোকেরা অভিযোগ করিলে খর লোকেরা হাসামার অপরাধে ফেজিদারী আদানতে আনীত হয়। আসামীরা কতকণ্ডলি সাফাই সাক্ষীর নাম করে। পরদিন প্রাতে সাক্ষীগণের নামে সমন বাহির হয়, কিন্ত তাহাদিগকে পাওয়া গেল না। আসামিগণ সাক্ষী উপস্থিতের জন্য অবদর চাহিল। মাজিট্রেট তাহাদের প্রার্থনা অগ্রাহ্য করিয়া প্রদিন ভাহাদিগকে অপ্রাধী সাব্যস্ত করেন।

জ জ জ कित्रन् धार्या केति त्लन - (य हेहा अशादि ल्पेत स्माक कमा, माजिए डिंग् आतामीत नाकी नमन कतिए वाशा हिलन, धदर तह কারণ মোকদ্দমা মূলতবী রাখিতে পারিতেন। তিনি আরও ধার্য্য क तिलाम (य यथम माजिए द्वेरित अमन वाध इस विविक्त जनाहेवान বা বিলম্ব করিবার মানসে সাফাই সাক্ষীর মধ্যে কোন ব্যক্তির নাম দেওয়া হইয়াছে. তখনই কেবল ভিনি কার্য্যবিধির ৩৫৯ ধারামত ্ঐ ব্যক্তির সাক্ষ্য প্রয়োজনীয় কি না দেখিতে পারেন। আসামীর জবাব শুনিয়া, ভাহার সাক্ষীগণ ঐ জবাবের পোষকতা করিবার জন্য প্রয়োজনীয় কি না, এইরপ সিদ্ধান্ত করিয়া ভাহার সমুদয় সাক্ষী ভলব করিতে অস্বীকার করার ক্ষমতা মাজিপ্রেটের হস্তে ন্যস্ত করা ঐ ধারার উদ্দেশ্য নহে।

জাক্সন্ জজ আরও ধার্য্য করিলেন যে আসামীরা ঐ জমিতে বে-আইনী জনতার লোক হইয়া যায় নাই, অথবা তাহাদের কোন বে-আইনী উদ্দেশ্য ছিল না, অতএব মাজিপ্রেটের কার্য্যপ্রালী আইনবিৰুদ্ধ 1—৩ কলি—৫৭৩ পৃঃ।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ ভবানী গঃ।

একত্রে বিচারে আনীত সহাপরাধির অপরাধ স্বীকার বাক্যের উপর নির্ভর করিয়া অপরাধী সাব্যস্ত করণ অবৈধ, যখন ঐ বাক্যের পোষকে আর কোন প্রমাণ নাই।—১ এলা—৬৬৮ পৃঃ।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ প্রতাপ।

১৮৬৪ খৃঃ ৬ আঃ—২, ৩ ধারা—দঃ বিঃ—৩৭৮ ও ৪১১ ধারা—সফরিত্রের জামিন।

শঠতাক্রমে চোরামাল দথলে রাখা অপরাধে ক কোন প্রথম শ্রেণীর মাজিট্রেটের নিকট দোষী সাব্যস্ত হয়। ইহার পূর্ব্বে আরও ত্রইবার সে চুরি অপরাধে দও পাওয়া স্বীকার করে। মাজিট্রেট তাহাকে মেয়াদ ও বেত্রাঘাতের আজ্ঞা দেন ও মেয়াদান্তে সচ্চরিত্রের জামিন দিতে আদেশ করেন। 'ধার্য্য হইল যে চোরাম্মাল দথলে রাখা ও চুরি করা এক অপরাধ নহে, স্ক্রাং মেয়াদের সঙ্গে বেত্রাঘাতের আদেশ আইনবিক্দ্ধ হইয়াছে। আরও ধার্য্য হইল যে আসামীর চরিত্র সম্বন্ধে, মাজিট্রেটের সম্বন্ধে প্রচ্বা প্রমাণ ছিল, অতএব সচ্চরিত্রের জামিন তলব অসক্ষত হয় নাই।

আরও ধার্য্য হইল যে দণ্ডের সঙ্গে এককালে জামিন ভলবের ছকুম না দিয়া, মোকদ্দমায় আসামীর চরিত্র সম্বন্ধে যে প্রমাণ পাওয়া গিয়াছিল ভাষাতে দে যে একজন প্রাসিদ্ধা বদমাইল ভাষা মাজি-ট্রেটের হাদ্বোধ হইয়াছে, এই মর্ম্মে একটা কার্য্যানুষ্ঠান লিপিবদ্ধা করিয়া যদি উহাতে হুকুম দিতেন যে মেয়াদ অস্তে আসামীর নিকট সচ্চরিত্রের জামিন ভলব করা হইবে, ভাষা হইলে মাজি-ট্রেটের কার্য্যপ্রণালী বিশুদ্ধ হইত।—> এলা—৬৬৬ পৃঃ।

প্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ রাম চাঁদ। ১৮৭২খঃ—১ জঃ—৩০ ধারা।

একত্তে বিচারে আনীত সহাপরাধির অপরাধ স্বীকার বাক্যের উপর নির্ভর করিয়া অপরাধ সাব্যস্ত হইতে পারে না।—

> धना-७१६ शृः।

ভুবনেশ্বর দত্তের বিষয়ে।

দঃ বিঃ ১৭৩ ধারা-রিসদ দিয়া সমন রাখিতে অস্বীকার।

রসিদ দিয়া সমন রাখিতে অস্বীকার করিলে দণ্ডবিধির ১৭৩ ধারার অপারাধ হয় না ।—৩ কলি—৬২১ পৃঃ।

জীজীমতী ভারতেশ্বরী বং গঙ্গাধর ভঞ্জ। ১৮৬৯ খৃঃ ১৮ জাঃ—২৯ ও ৪৩ ধারা 🖜

উল্লিখিত আইনের ৪৩ ধারা মত যে মাজিট্রেট ফ্যাম্প আইন লজ্মনের অপরাধে ফোজদারীতে আসামীর বিকদ্ধে মোকদ্দমা চালাই-বার জন্য জেলার কালেক্টরের নিকট হইতে ক্ষমতা প্রাপ্ত হয়েন, তিনি স্বয়ং ঐ অপরাধ বিচার করিতে পারেন না। ৩কলি—৬২২ পৃঃ।

জ্রীজ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ সাহী রহি। ত্তুক্তর পাড়া।

আসামী কোন জ্রীলোকের মস্তকে ও ক্ষন্ধে প্রচণ্ড আঘাত করে। ঐ জ্বীলোকের কোলে একটা শিশু সম্ভান ছিল। একটা আঘাত র্জ শিশুর মস্তকে পড়িয়া ভাহার মৃত্যু হয়। ধার্য্য হইল যে মোক-দ্দমার অবস্থানুসারে আসামী জ শিশু সম্বন্ধে গুরুতর পীড়া জন্মাই-য়াছে।—৩ কলি—৬২৩ পৃঃ।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ গোড়পা বিন ভেঁকু গোড়। ১৮৭২ শৃঃ ১০ আঃ—২১৫ ধারা ইত্যাদি—মোকদ্দমা পুনরুখাপন।

যখন কোন অধীনস্থ মাজিপ্রেটের নথী দৃষ্টে বোধ হয় যে তিনি অবৈধরূপে আসামীকে কার্য্যবিধির ২১৫ ধারামত ছাড়িয়া দিয়াছেন, জেলার মাজিপ্রেট মোকদ্দমা পুনঃস্থাপন জন্য হাইকোর্টের গোচরে আনিতে পারেন, কিন্তু পুনর্বিচারের আজ্ঞা স্বয়ং দিতে পারেন না।—২ বো—৫৩৪ পৃঃ।

সফেরদিন বঃ ইব্রাহিম।

বেঞ্চ মাজিট্ট্রেটের ক্ষতা—১৮৭২ খৃঃ ১০ আঃ—৫০, ৫৩০ ধারা।

কার্যবিধির ৫৩০ ধারা লিখিত কার্যানুষ্ঠান করিতে বেঞ্চ মাজি-থ্রেটদিগের কোন ক্ষমতা নাই। ৫০ ধারানুযায়ী স্থানীয় গবর্গমেণ্ট কোন বেঞ্চকে কোন প্রকার মোকদ্দমা বা কোন শ্রেণীর মোকদ্দমা স্থান বিশেষে বিচার করিতে ক্ষমতা দিতে পারেন। কিন্তু "বিচার" শব্দের সংজ্ঞায় অপরাধের বিচার বলিয়া বর্ণীত আছে, স্কতরাং কার্য্যবিধির ৫৩০ ধারাস্তর্গতি বিবিধ কার্য্যানুষ্ঠান তাহার অন্তর্গত নহে।—৩ কলি—৭৫৪ পৃঃ।

চন্মন সার বিষয়ে।

অপরাধ স্বীকার বাক্য-কার্য্যবিধি ৩২৪, ৩৪৬ ধারা।

বিচারকালে আদালতের সমক্ষে যদি আদামী অপরাধ স্বীকার করে তবে কার্য্যবিধির ৩৪৬ ধারার লিখিত সার্ট ক্ষিকেট নিপ্রায়ো-জনীয়।—৩ কলি—৭৫৬ পৃঃ।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বং ডোঙ্গজী আওদোজী। ১৮৭২ খুঃ ১০ আঃ—২৮০, ২৯৭ ধারা।

অপরাধী সাব্যস্ত হইয়া কোন লোকের মৃত্যু হইলে পর ভাষার উত্তরাধিকারী বা স্থলাভিষিক্ত কোন ব্যক্তিকে আপীল করিবার किया बज्जू कता आशील চालाहेवात क्यां का कार्याविधि আইনে দেওয়া হয় নাই।-- ২ বো-৫৬৪ পৃঃ।

ই खियान न तिर शार्टे १४१२ थृकीक।

কৌজদারী আপীল।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ আবদুল করিমের বিষয়ে।
পুনশ্চ বিবাহ—সহায়ভা—দঃ বিঃ ১০৯, ৪৯৪ ধারা।

মুসলমান ধর্মাবলমী বালিকার অভিভাবক, স্বামী বর্ত্তমানে ভাহার
নামে পুনশ্চ বিবাহ ক্রিয়া সম্পাদন করাইলেও ঐ বিবাহে যদি
সেই বালিকা লিপ্ত না থাকে, তবে ঐ অভিভাবকের বিৰুদ্ধে দণ্ডবিধির
১০৯ ও ৪৯৪ ধারার অপরাধ হয় না ।—৪ কলি—১০ পৃঃ।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ হ্রিদয়াল কর্মকার।
১৮৭২ শৃঃ ২০ আঃ—১৯৫, ২৯৫, ২৯৬ ধারা—আসামী ছাড়িয়া দেওন—
মোকদ্মা পুনক্সাপন।

বাদীর সমুদর সাক্ষী লওয়া নিপ্পারোজন বিবেচনায় ডেপুটী
মাজিট্রেট ৩৮০ ধারার মোকদ্দমায় আসামী ছাড়িয়া দেন। বাদী
জেলার মাজিট্রেটের নিকট দরখান্ত করায় তিনি স্বয়ং বাকী সাক্ষীর
জোবানবন্দী লইয়া আসামীকে সেসুনে অর্প্রণ করেন। মোকদ্দমা
হাইকোর্টের গোচরে আনীত হইয়া ধার্য্য হইল যে কার্য্যবিধির ২৯৬
ধারামত জেলার মাজিট্রেটের কার্য্য সঙ্গত হয় নাই, কেননা
২৯৬ ধারার লিখিত "সেসনের মোকদ্দমা" অর্থে কেবল মাত্র সেসন
গ্রাহ্ম মোকদ্দমাই বুঝায়। কিন্তু "শুশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ ডনেলী"
নজীর অনুযায়ী তাঁহার কার্য্য আইনসঙ্গত হইয়াছে যেহেতু বর্ত্তমান
মোকদ্দমায় তুতন প্রমাণ লওয়া হইয়াছিল।—৪ কলি—১৬ পাঃ।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ আবতুল করিম ও শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বং গোলাম মহন্মদ।

ৰিচার—সাজ্যাতিক অন্ত্ৰ দইয়া বে-আইনী জনতাবদ্ধ, দঃ বিঃ ১৪৩ ও ১৪৪ ধারা।

সরাসরি মতে বিচার করিবার অভিলায়ে কোন অপরাধ থও খণ্ড করিয়া লওয়া মাজিটেটের ক্ষমতাতীত। সরাসরি বিচারের व्ययोगा व्यथनाध्यत व्यक्तियां इहेटल धवर वानीत कावानवनी দইয়া মোকদ্দমার গুৰুতর অবস্থা অবিশ্বাস করিবার বিশেষ কারণ ना थाकिल. माजिए डिंग्रे यथार्याता श्रांनी मर् कार्या कतिए वाथा। সাজ্যাতিক অন্ত্রধারী বে-আইনী জনতার অভিযোগ হইলে. প্রথমাংশ পরিত্যাগ করিয়া সুদ্ধ বে-আইনী জনতার লোক বলিয়া আসামীকে সরাসরি মত বিচার করণান্তর তিন মাসের অন্ধিক-কাল যেয়াদ দিয়া তাহাকে আপীলের অধিকার হইতে বঞ্চিত করা षरेवध।—8 कलि—३४ शृः।

হরম্বনরী চৌধুরাণীর বিষয়ে। পর্দানিশীন স্ত্রীলোকের কমিসন ছারা পরীক্ষার অধিকার। क्षंजनाती (याकक्षमात्र जानाना छेशन्डि ना रहेत्रा क्षित्रन षाता भाका (मउन शर्फानिभीन खीलारकत अधिकात आहि।-8 कलि-१० भुः।

শিবপ্রদাদ পাণ্ডার দরখান্তে।

অপবাদ-দঃ বিঃ ৫২, ৪৯৯ ধারা – সরলতা – প্রমাণ – আইন (১৮৭২ খৃঃ ১ আঃ)

১৮৭२ कृ: > आहेत्वत श्रीविक रहेवात मगत्र अविध मकःयामत যাবভীয় মোকদ্মায়, আইনের সাধারণ বা বিশেষ বৰ্জ্জিত বিধির অন্তর্গত অবস্থার প্রমাণের ভার আসামীর উপরে বর্তিয়াছে।

व्यापनारमत (योकम्मात व्यानामीत नतल छाव निक्राण कतिएक इहेल जाबात डेकि वसुङ: मजा कि ना मिरिक इहेर ना, किसु উপযুক্ত সভৰ্কতা ও মনযোগ পূৰ্ব্বক তদন্ত করিয়া উহা সভ্য বলিয়া বিশাস করিবার ভাহার বথেষ্ট কারণ ছিল কি না, ইহাই দেখা আব-শ্যক।—৪ কলি—১২৪ পৃঃ।

শ্রীশ্রীমতী মহারাণী বঃ রামস্বামী পদ্যাচী। প্রমাণ—আইন (১৮৭২ খুঃ > আইন)—সহাপরাধী।

উল্লিখিত আইনের ১৩৩ ধারায় স্পান্টরপে নির্দিষ্ট আছে যে সহাপরাধির সাক্ষ্যে, পোষ প্রমাণ অবিদ্যমানেও আসামী দোষী সাব্যস্ত হইলে ঐ দোষ-নির্নির আইনবিরুদ্ধ নহে। অতএব পোষক প্রমাণ না থাকিলে দোষ নির্নির হইতে পারে না এইরপ ধার্য্য করিলে আইনের মর্ম্ম অনুষায়ী কার্য্য করা হয় না।

প্রমাণ-আইনের ১১৪ ধারার বিধান ইংলণ্ডের তৎসম্বন্ধীর নিয়মের সঙ্গে ঐক্য হয়; সহাপরাধীর সাক্ষ্য যদিও বিশেষরূপ পরীক্ষা করিয়া সভর্কভার সহিভ আহ্য করিতে হইবে, তথাপি জুরি কিম্বা জ্ঞজ ভাহা বিশ্বাস করিয়া অপরাধ সাব্যস্ত করিলে ঐ দোষ নির্বন্ন আইনবিক্দ্ধ হইবে না দেশ ১৯৪ পৃ:।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ মালিক। ১৮৭২ খঃ ১০ আঃ—১২২ ধার।। অভিযুক্ত ভিন্ন অপর লোকের উক্তি নিপিবছ করিতে মাজিপ্টেটের ক্ষমতা।

কার্য্যবিধির ১২২ ধারানুযায়ী সকল মাজিঙেট সাক্ষীর উক্তি ও আসামীর অপরাধ-স্বীকার-বাক্য লিপিবদ্ধ করিতে পারেন।— ২ বো—৬৪৩ পৃঃ।

মুদে আলি আদম সংক্রান্তে।

১৮৭२ थृ१-- ३० जाः-- २>० थादा--वानी-- स्याकक्षमा फेठिशिता मखन, मः विः ১৮० थादा !

সরকারী কর্মচারীর আইনতঃ ক্ষমতা অবজ্ঞা করণ মোকদ্দমার কার্ম্যবিধির ২১০ ধারার দিখিত বাদী অর্থে ফাঁছার ক্ষমতা অবজ্ঞা করা হইরাছে ও ফাঁহার বিনা অনুমতিতে মোক্দ্মা কজু হইডে পারে না, ভাঁহাকেই বুঝাইবে; কিন্তু যে ঐ অবজ্ঞা হেতু কট পাইয়াছে ভাহাকে বুঝাইবে না।—২ বো—৬৫৩ পৃঃ।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ ছত্র সিং গঃ।

দণ্ডবিধি-৩০২ ধারা-অপরাধযুক্ত নরহত্যা-দণ্ডাজ্ঞা-রাম ইত্যাদি I

ल, ठ, क ও দ চারি জনে সকে বধ করিবার পরামর্শ করে। প্রথমে ল ও পরে চ তাহার মাথায় লাঠি মারিলে স মাটিতে পডিয়া যায়। তখন কও দ তাহার মাথায় লাঠি মারে। ধার্যা হইল যে (চিফ্জফিস ফুরার্টের অমতে) ক ও দ সর উপর আক্রেমণ আরম্ভ করে নাই, ও তাহারা যখন লাচি মারে তখন স মরিয়া গিয়াছিল কি না ভাহাও জানা যায় না, এই অবস্থায় যাবজ্জীবন দ্বীপাস্তরের দণ্ড যথেষ্ট হইবে।—২ এলা—৩৩ পৃঃ।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বং রামঞ্জীয়।

১৮৭২ খঃ- >০ আঃ--১২২ ধারা-অপরাধন্দীকার-বাক্য ।

১২২ ধারা অনুযায়ী অপরাধ স্বীকার-বাক্য লিপিবদ্ধ করণ কালে কার্য্যবিধির ৩৪৬ ধারামত সার্টফিকেট লিখিতে মাজিট্রেটের ভ্রম হইলে, ঐ স্বীকারোক্তি একেবারে অশুদ্ধ বলিয়া অগ্রাহ্য হইবে না। লিপিবদ্ধ স্বীকার-বাক্য যে আসামীর দ্বারা কথিত হইয়াছিল তৎসম্বন্ধে প্রমাণ লওয়া যাইতে পারে। — ২ মা—৫ পৃঃ।

🕟 🔄 🕮 🕮 মতী. ভারতেশ্বরী বঃ রাম বিরাপা।

সহাপরাধীর স্বীকারোক্তির ফল ইত্যাদি।

এক অপরাধের জন্য বহুলোক একত্রে বিচারে আনীত হইলে ভাহাদিগের মধ্যে যদি কেহ অপরাধ স্বীকার করে এবং সেই উক্তি যদি প্রমাণ স্বরূপ গ্রাহ্য করিতে হয়, তবে কেবল মাত্র স্বীকারকারীর বিৰুদ্ধে না হইয়া সকল আসামীরই বিৰুদ্ধে উহা গ্রাহ্য করিতে व्हेर्त ।—७ (वा—३२ शृः।

শ্রীশ্রীমতী ভারতেশ্বরী বং ত্রৈলোক্যনাথ চৌধুরী গং!
সহায়তার সহায়তা—ছ্যা অভিপ্রান্তে সম্পত্তি স্থানাত্তর করা অথচ মালিকের সম্বতিক্রমে
দঃবিঃ ১০৮ ধারা—২,৪ ব্যাখা ও ৩৭৮ ধারা ৫ ব্যাখ্যা।

খর মনিবের সম্পত্তি চুরি করণ উদ্দেশ্যে ক খর সাহায্য চাহে।
ককে শান্তি দেওয়াইবার জন্য মনিবের অনুমতিক্রমে খ তাহাকে ঐ
সম্পত্তি স্থানান্তর করিতে সাহায্য করে। ক চুরি অপারাধে ফোজদারী সোপর্দ হওয়ায় ধার্য্য হইল যে মালিকের সন্মতিক্রমে ঐ
সম্পত্তি স্থানান্তর হওয়ায় চুরির অভিযোগ খাটিতে পারে না,
কিন্তু অপারাধের সহায়তা হইবে। আরও ধার্য্য হইল যে কোন
অপারাধের সহায়তার সহায়তারপ অভিযোগ করিতে হইলে সেই
আসল অপারাধ ঘটিয়াছে কি না তাহা দেখা নিপ্রাজন।—
৪ কলি—৩৬৬ পৃঃ।

लाल माम वः निकुक्ष देवनागि।

মাজিট্রেট কর্তৃক স্ত্রী সন্তানাদি ভরণ পোষণের তুকুম—১৮৭২ খৃঃ ১০ আঃ ৪১ অধ্যায়—জারন্ধ সন্তানের সংবক্ষণের অধিকার।

কার্য্যবিধির ৪১ অধ্যায় অনুযায়ী ন্ত্রী সন্তানাদির ভরণপোষণের মোকদ্দমায় নাবালক সন্তান কাহার সংরক্ষণে থাকিবে ভাহা মাজি-ষ্টেরে বিচার্য্য নহে ।

অপ্রাপ্তবয়ক্ষ জ্ঞারজ সন্তানকে পিতার সংরক্ষণে অর্পণ করিতে কার্য্যবিধি অনুসারে মাজিট্রেটের কোন অধিকার নাই । এরপ শিশুর মাতা, পিতার দখলে তাহাকে অর্পণ করিতে অস্বীকার করিলে পূর্ব-কৃত ভরণপোষণের আজ্ঞা রহিত করা মাইতে পারে না।— ৪ কলি—৩৭৪ পৃঃ।

মদনমোহনের দর্খান্ত।

দঃ বিঃ ২১ ধার। ৯ প্রকরণ ও ১৬১ ধারা—অবৈধ পারিতোষিক—
সরকারী চাকর।

কোন কোর্ট অব ওয়ার্ডের ম্যানেজার গবর্ণমেন্টের হিসাবে কিছু টাকা একটি ব্যাক্ষে জমা দেয়। ঐ ব্যাক্ষ সরকারী ট্রেজরির কর্ম্মও করিত। ব্যক্তির পৌর্দার ক স্বীর পরিপ্রথমের জন্য পারিভোষিক চাহার কিঞ্চিৎ অর্থ পার। সেই অপরাধে সে কৌজদারীতে অর্পিত হইলে দণ্ডবিধির ১৬১ ধারা অনুযায়ী অভিযুক্ত হয়। ধার্য্য হইল যে যদিও ঐ টাকা গাবর্গমেন্টের হিসাবে দাখিল হয়, কিন্তু ক তাহা ব্যাক্তের পক্ষে জমা করিয়া লয়, স্থতরাং সে তখন ব্যাক্তের চাকর স্বরূপ কার্য্য করিয়াছিল, দণ্ডবিধির ২১ ধারার ৯ প্রকরণ অনুসারে ভাহাকে সরকারী চাকর বিদিয়া গণ্য করা যাইতে পারে না।—

৪ কলি—৩৭৬।

সিয়ার বাহাত্র সাহির বিরুদ্ধে মেকেঞ্জীর দরখান্তে।

দশল—বাটোরারার কার্যান্তর্গান—আমিনের দেওরা দশলের কল—১৮৭২ খৃঃ
১০ আঃ—৫৩০ ধারা।

বাটোয়ারা কার্ব্যে আমিন-দন্ত দখল কেবল সভাধিকারীত্বের দখল বুঝার; সম্পত্তির সাক্ষাৎ উপভোগ রূপ দখল নহে। অতএব আমিনের দত্ত দখল ছারা সাক্ষাৎ দখলকারী পূর্ব্বতন প্রজা উৎ-থাতিত হইয়াছে, এইরূপ সিদ্ধান্ত ফোজদারী কার্য্যবিধির ৫৩০ ধারার মোকদ্দমায় করা যাইতে পারে না।—৪ কলি—৩৭৮ পৃঃ।

মহেশচন্দ্র খাঁর দরখান্তে।

দেওরানী আদালতের বিনা অসুযতিক্রমে উৎখাত—নির্ক্তিরোধী দখল—
১৮৭২ খৃঃ ১০ আঃ—৫৩০ ধারা।

যদি কোন ব্যক্তি ন্যায্যয়ত দর্থনিকার থাকিয়া বলপূর্বক কোন সম্পত্তি হইতে উৎখাতিত হয় তাহা হইলে উৎথাতকারির ঐ সম্পত্তিতে কার্য্যবিধির ৫০০ ধারার যোকদ্দমা আহ্য কোন অধিকার জ্ঞানা। বিবাদের পূর্ব্বে কোন পক্ষ নির্বিরোধে দখলিবান ছিল ভাহাই আদালতের দেখিতে হইবে।—৪ কলি—৪১৭ পৃঃ।

कुनदिक ।

প্রীপ্রীমতী ভারতেশ্বরী বঃ আশুতোষ চক্রবর্তী গঃ।
১৮৭২ খৃঃ ১ আইন—৩০ ধারা। একজন আসামী জন্য ব্যক্তিকে
সিপ্ত করিয়া অপরাধ শীকার করণের কন।

সহাপরাধিকে লিপ্ত করিয়া যদি কেছ অপরাধ স্বীকার করে ও দেই উক্তি রীতিমত সপ্রমাণ হয়, তবে তাহা উভয় **আ**সামীরই বিৰুদ্ধে প্ৰমাণ স্বৰূপ আহা হইবে। কিন্তু পোষক প্ৰমাণ অবিদ্যমানে ঐ সীকার বাক্যের মূলেই অপর (যে স্বীকার করে নাই) আসামীর অপরাধ নির্ণয় করণ আইনবিক্তা। গার্থ চিফজটিন কছেন যে. অপর সাধারণ প্রমাণের ন্যায় আদালত জ্বরুপ প্রমাণ ব্যবহার করি-বেন। কিন্তু উহার কি মূল্য এবং উহা একাকী অপরাধ সাব্যস্ত করণে প্রচুর কি না তাহা জজের বিচার্য্য। পোষক প্রমাণ অবিদ্য-মানে এরপ প্রমাণ অতান্ত দ্বর্মল বলিয়া স্বীকার করিতে হইবে: কেন না অপর এক ব্যক্তির বিনা হলফে উক্তির সঙ্গে উহার কোন প্রভেদ নাই। যদি পোষকে প্রমাণ থাকে তবে স্বীকারোক্তি ও পোষক প্রমাণের মধ্যে কোনটি পূর্ব্বতন তাহা বিচারের সময় দেখা নিপ্রাঞ্জনীয়। জ্যাকসন জজ (মকডোলাণ্ডের সঙ্গে একমতে)— পোষক প্রমাণ বিশ্বাস করিলে যদি তাহা স্বয়ংই আসামীর অপরাধ পাব্যস্ত করিতে সক্ষম হয়, এমত প্রকার অবস্থাঘটিত পোষক প্রমাণ ना थाकिल श्रीकात वाकात्रण श्रीयात्वत्र डेलत निर्खत कतिया खलताध সাবস্ত্য করা যাইতে পারে না।—8 কলি—৪৮৩ পৃঃ।

ইতি পরিসমাপ্ত।

Printed by I. C. Bose & Co., Stanhope Press, 249, Bow-Bazaar.

Street, Calcutta.

সূচীপত্র।

অগ্রিম তদন্ত।				পৃষ্ঠা।
কথন নিশ্পয়োজন	•••	•••	•••	28
অধিক শাস্তি (মোকদমা দেখ।)				
অন্ধিকার প্রবেশ।				
এজমালী সম্পত্তিতে হয় না	• • •	***	٧	98, ৮৩
বিশেষ অভিপ্রায় আবশুক করে	•••	•••	•••	es
স্বত্বের প্রকৃত দাবী থাকিলে হয় না	• •	• •	• •	es
সাধারণের গম্য নদীতে হয় না	•••	• •	•••	92
থেয়াঘাটে অনধিকার প্রবেশ	••	• •	• •	95
অনিফজনক বস্তুর অপসারণ (কা	ঃ বিঃ ৫	১৮ ধারা।)		•
মূল অবস্থা লিপিবদ্ধ করণানস্তর আজ্ঞা			••	Œ
অধিককাল ব্যাপী বিষয়ে ৫১৮ ধারার ও	গ্ৰণালী খ	াটে না	•••	9
কেবলমাত্র পুলিস রিপোর্টে আদেশ প্রচা	র নিধিদ্ব	••	••	50
পশু ছাড়িয়া দিলে ৫১৮ ধারার বিধানমং	ত নিষেধ	আজা প্রচার		•
হইতে পারে না 🕠	•••		>;	, ()
আজ্ঞা নির্দিষ্ট ব্যক্তির উপর প্রচার হইনে	ব	* *	• •	35
এক তরফা হকুম প্রচার নিষিদ্ধ	***	• •	••	२৮
আপামীকে কারণ দর্শানের আদেশ দিতে	গ মাজিছে	ট বাধ্য	••	90
ক্থন হাইকোর্ট আদেশে হস্তক্ষেপ করিব	ত পারেন	•••		৩৮
বহুকাল ভোগে অনিষ্টকর বস্তু আইন-সি	क इय गा	•	•••	৩৯
অনুপস্থিত. (গরহাজির দেখ।)				
অনুমতি (মোকদ্রমা চালাইবার।) .			
ছোট আদালত দিতে সক্ষম	•••	• •	• •	>8
অনুমতি প্রদানের সমন্থ নির্দারিত নাই	••	•••	• •	3¢
কখন সেদন জজ বা জুডিদিয়েল কমিদন	দিতে অং	দ ম ••	·• ১৮,	60
স্পষ্টরূপে দিতে হইবে 🕠	••	• •	••	8•

		न्छ।।
কথন উপরিন্থ আদালত দিতে পারেন ও কথন নহে	••	42
অস্মতি প্রদান সম্বন্ধে জেলার মাজিষ্ট্রেট নকল অধীনস্থ মাজিষ্ট্রেটের		
উপর-আদালত	••	F-0
অন্তত্তর অভিযোগ (অভিবোগ দেখ।)		
অন্যান্ত পারিতোষিক।		
ফিজ ভোগী পেয়াদা সরকারী কর্মে অর্থ লইলে অপরাধী		85
কোন বিশিষ্ট উদ্দেশ্যে অর্থ না লইলে অপরাধ হয় না	•••	19
পারিতোধিক লুইলে কিরূপ কর্মচারির অপরাধ হয় না	••	۳۰ ده
	••	20
অপকার ৷		
সরলভাবে স্বীয় স্বত্ব রক্ষার্থ পরের অনিষ্ট হইলেও অপরাধ হয় না	• •	56
অনবধানতা ক্রমে ছাড়িয়া দেওয়া পশু অনিষ্ট করিলে অপরাধ হয় না	• •	৩৩
অপবাদ।		
অপবাদের মোকদ্দমায় কি নিরূপণ করিতে হইবে	• •	>•
অপ্রাধ।		
অপরাধ স্বীকার—(স্বীকার দেখ।)		
কথন পৃথক্ অপরাধে পৃথক্ দণ্ড নিষিদ্ধ •••	• •	>4
অপরাধের সম্বাদ দিতে ত্রুটী হইলে উহার সহায়তা নহে	•••	20
আপোষ-নিষ্পত্তি যোগ্য অপরাধ (আপোষ দেখ।)		
কতগুলি অপরাধ একত্রে বিচার্য্য		98
অপরাধযুক্ত নরহত্যা ।		
কখন জ্ঞানকৃত ৰধের তুল্য নহে	••	১৭,५৯
সম্পত্তি রক্ষার অধিকারক্রমে হত্যা করিলে এই অপরাধ হয় না		૭૯
স্স্তাবিত কারণ বা উদ্দেশ্য প্রয়োজনীয় ু	•••	92, 66
म त्सर् ष्टल भाखि किंक्षश रहेद्व		25
অবজ্ঞা—হুকুম অমান্য ইত্যাদি।		
দেওয়ানী আদালত অবজ্ঞা ফৌজদারী যোগা	, .	ь
স্থানবিশেষে আদালত অবজা অপরাধ নহে	•••	\$4, 85
অবজ্ঞাকৃত আদালত স্বরং বিচার করিতে অক্ষম	•••	26,62
সাধারণের ন্যায্য বিচারের ব্যাঘাত জন্মান কাঃ বিঃ ৪৭৩ ধারাস্তর্গত		
অবজা নহে	₩ ೨,	৬৫, ৬৬

•		শ্	का ।
অবজ্ঞার মোকদমায় অবজ্ঞাকৃত আদালতই বাদী	•••	58,	۶۶
মিথ্যা সাক্ষ্য দেওন কাঃ বিঃ ৪৭৩ ধারাস্তর্গত আ	নালত অবজ্ঞা	46,	b२
কাঃ বিঃ ৪৭৩ ধারা কেবলমাত্র দঃ বিঃ দশ	ম অধ্যায়ের অ	পরাধে	
निवक्ष नटक्	• •	• •	90
উক্ত ধারার নিষেধ ব্যক্তি সম্বনীয়	•••	• •	92
রসিদ দিয়া সমন লইতে অস্বীকার আদালত অব	ाष्ट्रा नरह	•••	৮৬
व्यवदाध (कार्याविधि ६२२ धाता ।)			
অবরোধ নিবারণের আজ্ঞা প্রচারের পূর্বের আসা	মীকে কাবণ দৰ্শ	ঠিব†র	
সময় দেওয়া কর্ত্তব্য			Œ
মূল বৃত্তাস্ত লিপিবদ্ধ করা আবশ্যক	• •		æ
त्निका भगरनत भथ अव रताथ	•••		5 a
কথন মাজিষ্ট্রেট অবরোধের মোকদ্দমা লইতে বা	ধ্য নহেন		১২
काः विः ६२> धातात स्माकम्ममात कार्यायानी	• •	«»,	৫৬
অভিযুক্ত ব্যক্তি (আসামী দেখ।)			
অভিযোগ।			
হাঙ্গামালিপ্ত উভয় পক্ষ একত্রে অভিযুক্ত হইতে প	পারে না	***	ર
এককালে বহুসংখ্যক্ অপরাধের অভিবোগ অবৈ	ধ	• •	98
উহার বিপরীত		••	6 2
অবিশ্বাদের কারণ অবিদ্যমানে অভিযোগের গুর	তর অংশ পরিতা	ां ज	
করা অবৈধ	•••	• •	\$
ত্মভিযোগ-পত্র।			
মিথ্যা সাক্ষ্যের মোকদ্মার অভিযোগ-পত্রের অং	र्शन	¢,	8.5
অপরাধ স্বীকারের পর অভিযোগ-পত্র পরিবর্তন		#v &	২৭
দঃ বিঃ ২৯২, ২৯৭ ধারার অপরাধের অভিযোগ-	পত্রের প্রণালী	• •	৬৭
দঃ বিঃ ২১৭ ধারার অভিযোগ পত্রের অনুষ্ঠান		• •	95
অশ্লীলতা—ইত্যাদি।			
দ: বি: ২৯২, ২৯৪ ধারার মোকদমার অনুষ্ঠান	•	•••	৬৭
আজু-রক্ষার অধিকার।		•	•
ইহার ব্যাপ্কতা ও সীমা		• •	3 4

		श्का ।
আত্ম-সম্বরণ (কোধ দেখ।)		,-
আদালত অবজ্ঞা (অবজ্ঞা দেখ।)		
আবকারী আইন।		
জরিমানা আদায়ের প্রণালী	• •	89
উক্ত আইনের অপরাধ সরাসারি মত বিচার্য্য	***	b 0
আপীল।		
পৃথক্ পৃথক্ অপরাধের শান্তি একত্র করিয়া আপীলের অধিকার জা	মে না	૭
উহার বিপরীত	•••	৬৬
কে আপীলের দরখান্ত দাখিল করিতে পারে	• •	95
আসামীর মৃত্যু হইলে তাহার উত্তরাধিকারী আপীল চালাইতে পার	র না	. b b
আপোষ নিষ্পত্তি।		
ওয়ারেণ্টের মোকদ্দমা আপোষে নিষ্পত্তি হইলে কাঃ বিঃ ২১৫ ধারা	মত	
ছাজ়িয়া দেওয়ার ফল হয় ••	• •	৬৩
কোন প্রকার অপরাধ আপোষে নিষ্পত্তি হয় না	***	৬8
আসামী—(ছাড়িয়া দেওয়াও দেখ।)		
অপরাধ কিছুমাত্র সাব্যস্ত না হইলে পরীক্ষা নিপ্রব্যোজন	••	৬
তথন আসামী ছাড়িয়া দিতে মালিষ্ট্রেট বাধ্য	• •	•8
আসামীর সমক্ষে সাক্ষী-জোবানবন্দি প্রয়োজন ৬, ১৬	৬, ৩২, ৪	৮, ৬৮
আসামীর সাফাই সাক্ষী গ্রহণ আবশ্যক	٠ ۶	(৭, ৩8
দাখিলী দলিলের নকল আসামীর প্রাপ্য	•••	৩৭
আসামীর জবাবে মাজিষ্ট্রেটের স্বাক্ষর থাকিলেই প্রচুর \cdots	•••	8'२
কাঃ বিঃ ৫০৫ ধারার মোকদমায় আসামীকে অবসর দেওয়া কর্তব্য	••	99
আইনের বিশেষ বা সাধারণবর্জিত বিধির প্রমাণের ভার আসামীর		20
আসামীর মৃত্যু হইলে তাহার উত্তরাধিকারী আপীল চালাইতে পারে	র লা	৮৮
ইন্ট্যাম্প আইন।		
ইন্ত্যাম্পে জালের উদ্যোগ হইয়াছিল সন্দেহ হইলে বিনা তদস্তে কা	লেক্টর	
কৌজদারী সোপদ করিতে সক্ষম		>8
রুত্ম না দিয়া বঞ্চনার অভিপ্রায় ছিল কি না মাজিপ্টেটের বিচার্য্য		90
ফৌজদারী সোপর্টের পূর্বে উহা কালেইরের নির্দারণ করা কর্তবা		98

				পৃষ্ঠা
উঠাইয়া লওন (মোকদমা দেখ।)			•	
উদ্দেশ্য (সাধারণ উদ্দেশ্য দেখ।)				
উদ্যোগ।				
काशतक वरन ••	• •	• •	٠. ٦	१५, १२
একত্র অভিযোগ (অভিযোগ দেখ।)			
এজমালী সম্পত্তি।				
এজমালী সম্পত্তি চুরি হয় না	••	• •	• •	೨೨
এজমালী সম্পত্তিতে অনধিকার প্রবেশ র	रम्र ना	•••	••	৩৪
ওয়ারেন্ট।				
কখন ওয়াবেণ্ট প্রচার নিষিদ্ধ	• •	••	••	٥.
ওয়ারেণ্টের ব্যাপকতা ও ফল	••	•••	••	२⊄
সাক্ষীর প্রতি কথন বাহির হইতে পারে	• •	•••	٠. ٦	c, ২৮
কখন ওয়ারেণ্ট পুলিসকর্মচারী ব্যতীত খ	মন্যের হা	ওলা করা যাই	<u> </u>	-
পারে ••	•••	••	•••	२४
প্রচারের সময় মাজিষ্ট্রেট স্বীয় এলাকান্তর্গ	তি কি না	দেখা নিপ্সয়োগ	म्म	90
কর্ত্তব্য কর্ম।				
আইনের বিধি অপাল্ন (্দঃ বিঃ ২১৭, ২	ং১৮) মো	কদ্দশায় আসাম	ौत्र	
উদ্দেশ্য প্রমাণ হইলেই প্রচুর	•••	110	••	৮১
কুট প্রশ্ন বা পরীক্ষা (জেরা দেখ।)				
কেমিকেল একজামিনর।				
ঁ •হার আসল রিপোর্ট প্রামাণ্য	•••	•••	••	૭૯
কৃত্রিম দলিল (জালিয়াৎ দেখ।)				
ক্রোধ—ক্রোধান্ধতা।	•	•		
কখন অপর।ধের লাঘব করে না	••	••	8	, ર ઙ
কারণ থাকিলে অপ্রাধের লাঘ্ব করে	•••	• •	••	>9
থারিজ (মোকদ্দমা দেখ।)				
খালাস (ডিদ্মিসও দেখ।)				
নিৰ্দোষী সাব্যস্তে থালাস হাইকোট বৃহিত	করিতে	काः विः २৯१	•	
and-marked and second				

				Je11
থেয়াঘাট।	-			
কখন উহাতে অনধিকার প্রবেশ হয় না		•••	•••	19
গ য়বী ।				
গয়বী সমাদ বিখাসের মূল নহে	•••	•••	•••	₹₺
গরহাজির।				t
বিশেষ কারণ ব্যতীত বাদী গরহাজিরে	আসামী ছ	হাড়িয়া দিতে হই	বে	83
গুরুতর পীড়া (অপরাধযুক্ত নরহত	গ্যা দেখ।)		
গেজেট।				
গেজেটে প্রকাশিত সরকারী চিঠি প্রাম	1 93	•••		৩৯
চুরি (চোরামালও দেখ।)				
দ: বি: ৩৮০ ও ৪৫৭ উভয় ধারামত এব	দত্তে শান্তি	ञदेवथ ••		, ৬ ¢
এজমালী সম্পত্তি চুরি হয় না		***	***	ಀ೨
শঠতাক্রমে চাকরের দথল হইতে	উহার	সম্বতিক্রমে লই	हेटन ७,	
চু त्रि श्हेरव	•••	• • •	• •	98
চুরির সহায়তা	• • •	•••	•••	から
চোরামাল।				
ভিন্ন রাজসংঘটিত অপরাধের মাল ব্রিটি	শ রাজ্যে গ	পাওয়া গেলে কে	বল	
৪১১ ধারামত বিচার্য্য	•••	•••	v	२, १১
চোরামাল প্রত্যর্পণের নিয়ম	• • •	•••	•••	90
না জানিয়া চোরা নোট রাথিয়া স	রলতাক্র ে	। টोका नित्न क	তিগ্ৰস্ত	•
হইতে হয় না	• •		• •	b.
ছাড়িয়া দেওয়া (কার্যবিধির ১৯৫	ना २५० ध	ারা।)		
অপরাধ সাব্যস্ত না হইলে আসামী ছার্				98
কার্য্যবিধির ১৯৫ ধারামত ছাড়িয়া দে	ওয়া আসা	মীর বিরুদ্ধে জেল	ার	
মাজিষ্ট্রেট ১৪২ ধারামত মোকদ্দমা	পুনঃস্থাপ	নে শক্ষম	•••	৩৭
২১৫ ধারামত ছাড়িয়া দেওয়া আসামী	কে পুনর্ব্বি	চারের আদেশ স	দস ন	
ङ्क मिट्ठ यक्षम		***	••	8≽
ছাড়িয়া দেওয়া আসানীকে সেমন সোণ	পর্দ করণ প	অ দেশের প্রণালী	***	48

				প্ৰা	l
জনতা (বে-আইনি	ন জনতা দেখ	1)			
জরিমানা।					
আবকারী আইনমত জ	র্বিমানা আদ	रियव अनानी	••	*** 89	
প্রাত্যহিক জরিমানা খ	प्रा टे ननिषि क	• •	•••	65, 69	
জলাশয় (ननी मि	थ।)				
জব্দ (সম্পত্তি।)					
জবাব (আসামী	দ্ থ ৷)				
জাতি-সমাজের ক্ষ	মতা (বিব	क्टिंग्य।)			
জামীন।		,			
অাপীল অ যোগ্য দ ও	প্রাপ্ত আসামী	কে সেসন জজ	জামিনে থাল	म क्रिक	
অক্ষ	•••	•••	•••	8, %	,
আসামী খালানের পর	হাজির জামি	ন লওয়া অবৈধ	•••	9	
জামিনির সর্ত্ত আদায়ে	র পূর্ব্বে নোটি	ন দেওয়া আ বশ	竹本	82	
জালিয়ৎ।					
ক্বৃত্তিম দলিল প্ৰস্তুত ম			•••	>	
জিরাৎ পয়মালী ব	মাইন (প্ৰ	9-প্রবেশ দেখ।)		
जूती।					
নিয়োগের অন্নঠান	••	• •	• •	89	
জেরা।					
জ্বেরায় অধিকার	***	•••	•••	ve	
জ্ঞানকৃত বধ।		•			
কথন হয় না	••	i i i i i i i i i i i i i i i i i i i	• •	৫৬, ৬৯	
कथन हर्रेट .	• •	• •	• •	., ••	
ডাকাইতী।		• (
ভিন্ন রাজ্যে সংঘটিত হ	ইলে ব্রিটিস র	জ্যে বিচার্য্য ন	হে	• • ৬২	
ডিস্মিস। '					
বাদীর পরীক্ষা না করি	, ,			· ` ₹5	
ডিসমিসের পূর্ব্বে বাদী	त्र श रक म मुनग्र	প্রমাণ লওয়া	কর্তব্য	80, 53	

. •				পৃষ্ঠা।
২১৫ ধারায় ডিস্মিদ্ কৃত মোকদ্দমা সেস	ন জজ পুনক্থ	াপনে অক	ম	82,99
ওয়ারেণ্টের মোকদ্দমা আপোষ নিষ্পত্তি	হইলে ২১৫ ধা	রামত ডিফ	(মিসের	
, ফল হয় •••	***	•••	***	৬৩
প্রমাণ গ্রহণানস্তর ২১৫ ধারামত মোক	দ্দ মা ডিস্মিস	্করিলে	জেলার	
মাজিষ্ট্রেট তাহা পুনরুখাপনে অক্ষম	• • •	•••	৬৫	,৭৬,৮৭
নৃতন প্রমাণ অবিদ্যমানে ২১৫ ধারামত বি	উদ্মিদ্কৃত ৫	মাকদ্দমা	জেলার	
মাজিট্রেট পুনরুখাপনে অশক্ত	•••	•••	•••	৭৬,৮৯
দখল—দখলের মোকদ্দমা।				
বেদথল করণেচ্ছুকের প্রতি বলপ্রকাশ অ	াইনসঙ্গত	•••	***	٥ د
कथन मथरणत जारमण जरेवध	•••	•••		٥٥, ٢٥
হেতুবাদ লিপিবদ্ধ করণান্তর মোকদ্দমা বি	বচার করিতে	হইবে	•••	২৩,৪৯
কা: বি: ৫৩০ ধারা গ্রাহ্য দখল কাহাকে	বলে	•••	8৯	86,04
শাস্তিরক্ষার মুচলিকা লইলেও কাঃ বিঃ ৫	৩০ ধারার ৫	মাকদ্দমা	চলিতে	
পারে	•••	•••	•••	8৯
কেবল বিরোধিগণ নোটিদ পাইবে	•••	•••	•••	¢•
উভয় পক্ষের সাক্ষী তলব আবশ্যক	•••	•••	•••	63
আমিন দত্ত দখল ৫৩০ ধারার মোকদ্মার	গ্রাহ্ প্রকৃত	- দখলের	প্রমাণ	
নহে	•••	•••	•••	28
৫৩০ ধারার মোকদ্দমা বেঞ্চ মাজিষ্ট্রেটের	বিচার্ব্য নহে	•••	•••	4
দণ্ড—দণ্ডাজ্ঞা।				
পৃথক্ অপরাধের দণ্ড একত্র করিয়া আপী	লের অধিকার	হয় না	***	ပ
উহার বিপরীত '	•••	• • •	•••	હેન્ક
কখন পৃথক্ দণ্ড নিষিদ্ধ	•••	***	:	e, v e
স্থলবিশেষ ব্যতীত দণ্ডাজ্ঞা বিলম্ব নিষিদ্ধ	•••	•••	•••	२०
ক্থন দণ্ড পরিবর্ত্তন নিষিদ্ধ	••	•••	·	30
চোরা মাল গোপন করণ ও মিথ্যা প্রমাণ	া সংঘটন করণ	পৃথক্-		
ं कर्प प्रखनीय	•••	***	•••	্ঀ৩
मिल्ल (कानिय़ ९७ (मथ।)		•		
দলিলের স্থাক্ষর প্রমাণ করা আবশ্রক	•••	•••	•••	১৯
দাখিলী দলিলের নকল আসামীর প্রাপা				ত প

গেজেটে প্রচারিত ও মুদ্রান্ধিত গবর্ণমে	ণ্টে কর্মচারির	। চিঠি দেশিল		পূকা।
গ্রাহ্	•••	•	,	৩৯
তুঃসাহস বা অনবধানতা প্রযুক্ত	নরহত্যা	1		
কখন দঃ বিঃ ৩০৪ ক অপরাধ হয় না	* * *		***	92
निकल (निल्ल (म्थ।)				
		হয় না	•••	92
	य '' नटश	• • •	•••	90
	•••	***		२०
নিৰ্দ্দোষী সাব্যস্তে খালাস (খাল	गान (मथ।)			
নিষেধসূচক আজ্ঞা।				
প্রচারের পূর্বে আসামীকে কারণ দর্শা	ইতে অবদর	দেওয়া আব	শ্যক	೨۰
উক্ত আজ্ঞা মোকদমা-ঘটিত নহে			•••	৩১
নোট (চোরামাল দেখ।)				
পথ (অবরোধ দেখ।)				
	খ।)			
কুট পরীক্ষার অধিকার			•••	િદ
পৰ্দানিশীন স্ত্ৰীলোক।				
কমিদন খারা পরীক্ষিত হওয়ার অধিক	ার আছে		***	۵۰
পশু প্রবেশ।	•			
কাঃ বিঃ ৫১৮ ধারামত নিষিদ্ধ নহে	•••		>>	. «১
অসাবধানতা ক্রমে অনিষ্ট হইলে ' অপ	কার 'ইয় না	•	•••	99
· পারিতোষিক (অন্যায্য পারিভোগি	वंद (पथ।)			
		•	क्रिम्बिम त्यन	
मः विः ७६२ धातात जानामी थानान मि	লৈ ৩২৩ ধার	। তাত্যা ও য়ি পুনক্তথাপ	ाञ्जासम् ८४४ स्टाब	1
ष्यरगंशा •••	•••	••	- · ·	8 &
পুলিস-পুলিস রিপোর্ট।				۰۲
পুলিস-রিপোর্ট শান্তিভঙ্গের প্রমাণ নহে		•••	e== 193	ر برود
	श्राष्ट्रम वा अनवधान जा श्रयुक्त कथन मः विः ००८ क अश्रवध रय ना निकल (मिलन एप ।) निमी । हेराट श्रवण कितिल मः विः ८८० ध निमी मः विः २०० ध नामा शिक्क ति का त्रावाम । नियविक्र ति का त्रावाम । नियविक्र ति का त्रावाम । नियविक्र ति का त्रावाम । नियधमृत्त आहन - विक्र क ः निर्मायी मावार श्रयानाम (थान निर्मायी मावार का त्रयानाम (थान निर्मायी (यानामी विव्यवद्याध प्राची । अत्रीक्षा (यानामी वव्यवद्याध प्राची । अत्रीक्षा (यानामी वव्यवद्याध प्राची । का विः ४०५ धाताम निर्माय हिला क । का विः ४०५ धाताम निर्माय निर्माय भावित्याध का व्यवद्याध भावित्याध का व्यवद्याध भावित्याध का व्यवद्याध भावित्याध का व्यवद्याध भावित्याध	প্রান্থ প্রান্থ বা অনবধানতা প্রযুক্ত নরহত্যা কখন দ: বিঃ ৩০৪ ক অপরাধ হয় না নকল (দলিল দেখ।) নদী। ইহাতে প্রবেশ করিলে দ: বিঃ ৪৪৭ ধারার অপরাধ নদী দঃ বিঃ ২৭৭ ধারান্তর্গত " ফলাশয়" নহে নির্জ্জনে কারাবাস। নিরবচ্ছিনে—আইন-বিরুদ্ধ নির্দোষী সাব্যস্তে খালাস (খালাস দেখ ।) নিষেধসূচক আজ্ঞা। প্রচারের পূর্বে আসামীকে কারণ দর্শহিতে অবসর উক্ত আজ্ঞা মোকদমা-ঘটত নহে নোট (চোরামাল দেখ।) পথ (অবরোধ দেখ।) পরীক্ষা (আসামী এবং সাক্ষীও দেখ।) কৃট পরীক্ষার অধিকার পর্দানিশীন স্ত্রীলোক। কমিসন দ্বারা পরীক্ষিত হওয়ার অধিকার আছে পশু প্রবেশ। কাঃ বিঃ ৫১৮ ধারামত নিবিদ্ধ নহে অসাবধানতা ক্রমে অনিষ্ট হইলে ' অপকার ' ইয় না পারিতোষিক (অন্যায্য পারিতোষিক দেখ।) পুনর্বিচার, মোকদ্দমা পুনরুত্থাপন (ছাড়িয় দ: বিঃ ৩২২ ধারার আসামী খালাস দিলে ৩২০ ধারা অযোগ্য প্রিলস—পুলিস রিপোর্ট।	গ্রাহ্ম না অনবধানতা প্রযুক্ত নরহত্যা। কখন দঃ বিঃ ৩০৪ ক অপরাধ হয় না নকল (দলিল দেখা) নদী। ইহাতে প্রবেশ করিলে দঃ বিঃ ৪৪৭ ধারার অপরাধ হয় না নদী দঃ বিঃ ২৭৭ ধারাস্তর্গত " জলাশ্য়" নহে নির্জ্জনে কারাবাস। নিরবছিনে—আইন-বিকল্প নির্দোষী সাব্যস্তে থালাস (খালাস দেখা) নিষেধসূচক আজ্ঞা। প্রচারের পূর্বে আসামীকে কারণ দর্শাইতে অবসর দেওরা আব উক্ত আজ্ঞা মোকদমা-ঘটত নহে নোট (চোরামাল দেখা) পরীক্ষা (আসামী এবং সাক্ষীও দেখা) কুট পরীক্ষার অধিকার পর্দানিশীন স্ত্রীলোক। কমিসন দ্বারা পরীক্ষিত হওয়ার অধিকার আছে পশ্ত প্রবেশ। কাঃ বিঃ ৫১৮ ধারামত নিবিদ্ধ নহে অসাবধানতা ক্রমে অনিষ্ট হইলে 'অপকার' ইয় না প্রারিতোষিক (অন্যায্য পারিতোষিক দেখা) পুনর্বিচার, মোকদ্মা পুনরুত্থাপন (ছাড়িয়া দেওয়া ও দঃ বিঃ ৩৫২ ধারার আসামী খালাস দিলে ৩২৩ ধারায় পুনরুত্থাপ অবোগ্য পুলিস—পুলিস রিপোর্ট।	গেছেটে প্রচারিত ও মুদ্রান্ধিত গবর্ণমেন্ট কর্মচারির চিঠি দলিল বলিরা প্রান্থ

				•	পৃষ্ঠা ।
তাহার বুনিয়াদে দঃ বিঃ ২১	১ ধারার মো	কদ্দমা স্থা	পন হইতে		
পারে না	••	• •	***	•••	8¢
কখন পুলিস কর্মচারির পুরি	নিস আইনের	২৯ ধারার	অপরাধ হয় না	•• 89	1, 85
পুলিদ কর্মচারী খোয়াড়ের	পশু किनित्न	১৮৭১ খ্	: ১ আইন		
মত দণ্ডাৰ্হ	•••		•••	•••	8,9
পূর্ব্ব অপরাধ সাব্যস্ত।					
মহাফেজের কৈফিয়ৎ প্রমা		• •	***	***	৩৬
পৃথক্ অপরাধ—পৃথক্	দণ্ড (অপর	াধ ও দণ্ড	(मर्थ।)		
পোষক প্রমাণ—(দহ	াপরাধির সাক	न्य (मथ।)		
প্রতিজ্ঞা—(ধর্মতঃ।)					
কার্যাবিধির ৫৩০ ধারার যে	নাকদমায় শ প	থ করাইয়	া সাক্ষ্য লওন		
আবশ্যক	•••		•••	***	8 •
हलएक इ " व्यंधी " भरक इ व	<u> </u>	•••	• • •	***	৬১
ক্ৰি হইলে ক্ষতি হয় না	•••	•••	•••		৬১
প্রতিভূ।					
জামিনীর দর্ত আদারের পূ	ৰ্বেকারণ দর্শ	ািইবার নে	নাটিদ পাইবে	•••	82
প্রমাণ (দলিলও দেখ	•				
ছোট আদালতের সমন-ব	ই প্রমাণস্বরূপ	া গ্ৰাহ	•••		৩১
পুলিস রিপোর্ট শান্তিভঙ্গের	ৰ প্ৰমাণ নহে		•••	o	২, ৩৮
মহাফেজের কৈফিয়ং পূর্ব্ব	বর্ত্তী অপরাধ	স ব্যস্তের	প্রমাণ নহে	•••	৩৬
গেজেটে প্রকাশিত চিঠি প্র	ামাণ্য	•••	••	•••	৩৯
বিচারকালে যে প্রমাণ ব্য	বন্ত হয় নাই	তাহা আ	भीरन मृष्ठे इहेरव न	··· tr	. 89
হিসাব কথন প্রমাণস্বরূপ		***	•••	• •	98
বর্জিত বিধির প্রমাণের ত			••	••	৯৽
এক আসামীর স্বীকারো	জৈ তাহার বি ^হ	কুদো লাইট	न मकरनबर्टे विकरा	ā	
প্রামাণ্য	***	•••	****	•••	৯২
বে-আইনি জনতা।				· ·	
আদামী বিবাদক্ষেত্ৰ হইট	ত সরিয়া গেং	ল পরে যে	া ক্রিয়াহয় তাহার	जना	
ं ८म मांशी नटह	•••	***	···	•••	১৩
উপস্থিত সকল আসামী অ	পেরাধের ফল	ভোগী	***	•••	২৬

	#J.			
একের হঠাৎ কার্য্যের জন্য সক	লে দায়ী নচে		•••	পৃষ্ঠা। ৫৯
বে-আইনী উদ্দেশ্য আবশ্যক ব		***	••	bæ
বেঞ্চ মাজিষ্ট্রেট।				
प्रयाजित्या । प्रथान स्थाजिक्सा (काः विः ६	৩০ প্রার্থ ১ বিচারে	অক্ষম		৮৭
বেত্ৰাঘাত।	4141) 140164	444	•	• ,
বেজাবাভা কোন স্থলে বিধি-সি দ্ধ	-			
रकान इंटम । वाव-। न खः कथन निशिक्ष	• •••	***	৩৫, ৩	₹8
	• •••	•••	04, 0	7, FC
(तनथल - (नथल (नथ।)				
ভরণপোষণের মোকদ্দমা				
তালাকের পর ভরণপোষণের হ			•••	¢¢.
জারজ সন্তানের সংরক্ষণ সম্বন্ধে	অাদেশ প্রচার মার্ডি	क्राड्डिएव निधि	ā	৯৩
মত্তা।				
অপরাধ গুরুতর করে না	• •••	•••	•••	84
মনুষ্য চুরী।				
ইহার ব্যাপকতা ও সহায়তা	•••	•••	•••	93
মাজিপ্টেট।				
জেলার মাজিট্রেটের সহিত অপ	র প্রথম শ্রেণীর মাজি	নষ্ট্রেটের সম্বন্ধ	•••	b 0
মিউনিসিপাল আইন।				
জমিতে ময়লা রাখিলে কেবলম	াত্র দথলিকার দায়ী	•••	• •	8 %
উপনিয়ম ভঙ্গে প্রাত্যহিক জরিং	गाना घटेवस	••	٠ ٤٥	. ৫9
কমিটী পথ পরিবর্ত্তনে অক্ষম	•	•••	***	99
মিথ্যা মোকদ্দমা (মোকদ্দম	((पथ ।)			
মিথ্যা সাক্ষ্য।	•	•		
• ছই আদালতের সমকে বিরোধি	া উক্তি প্রামাণা	***	،،،۵٫ 8،	. 45
উহার বিপরীত			••••	ર,∉ <i>*</i> ૨8
অভিযোগ-পত্তের অনুষ্ঠান 👑	••	•••	••• 6	1,89
ক্থন অপ্রাধ হয় না •	•••		***	., br
অ্থিম তদন্ত প্রয়োজনীয়	•••	• •	4.0	,°
মিখ্যা উক্তি জ্ঞানত: ইচ্চাপ্ৰবাক	ইহা প্রায়াণা			•

মিথ্যা সাক্ষ্য দেওন আদানত অবজ্ঞা	বিধায় যাঁহার	সমকে কু	ত হয়	ارهارا
তিনি স্বয়ং বিচাবে অক্ষম	••	••	• •	৬৮, ৮২
মুচলিকা (শান্তিরক্ষাও দেখ।)				
करमत इल	· •••	• •	• •	৯,৩৩
गू ल्ळवी ।		•		ŕ
সাক্ষী তলব করণার্থ মূলতবী রাখ। বি	চারকের স্বেচ্ছা	धीन	••	૨ ૨
য়ত সাকী (সাকী দেখ।)	•	de a		
মোক্তার।				
মোক্তার ও মোয়াকেলের কথোপকথ	न ১৮१२ युः, ১	আইনের ১:	হও ধারা	
মত সংরক্ষিত নহে	•••	••	•••	8
মোক্তার সম্পণ্ড করণের কার্য্যপ্রণালী		• •	• •	৩৩
দরখান্ত লিখিয়া দিলেই মোক্তারের	কার্য্য করা হয় -	स	• •	C o
মোকদ্দমা (ডিস্মিস্ও দেখ।)				
কখন বিনা নালিশে নোকক্ষমা স্থাপন	হইতে প∤রে	• •	••	২৮
মোকদ্দা উঠাইয়া লইবার কারণ	থাকা ও তাই	হা লিপিবদ্ধ	ক রণ	
আবিশাক	• •	***		٥٠,8٠
দথলের মোকদ্দমায় সাক্ষীকে শপথ ৫	দওয়া আবশ্যক	•••	••	8 •
ভিন্ন পদে থাকিয়া কজু করিয়া স্বয়ং বি	বচার করা নি	যদ নহে		84
দঃ বিঃ ২১১ ধারার মোকক্ষমা উত্থাপ	ানের পূর্বের্ব তদ	ন্তকরণ আ	বিশ্ৰক,	
ু পুলিশ রিপোর্ট প্রচুর নহে	•••		•••	8 &
মোকদ্মা থারিজের সময় ••	•••	••	•••	aa
বিচারে স্থান নিরূপণ ••	•••	• •	•••	د ى
বে মাজিষ্ট্রেটের স্বার্থ আছে তিনি স্বয়ং	বিচার করিতে	ত অক্ষ	• •	৬৮
যাহাতে তিনি স্বয়ং দাক্ষী তাহা বিচা	রে অক্ষ	• • •		৭৬
" সেনগ্ৰাহ্য '' মোকদ্দমা কাহাকে ব	र्टन	***	• •	ኅ ৭,৮৯
অধিক শান্তির জন্ম যে মোকদ্দ্রা তে	ারিত হয় তা হ া	সেসন সোপ	र्फनीय ।	9 ৮, ৮২
মিথ্যা অভিযোগ (দঃ বিঃ-২১১ ধারা)) কখন সম্পূৰ্ণঃ	र य • •	•••	৭৯
সুরাসুরি বিচারকর্ণ মানসে অভিযোগ	গের গুরুতর আ	সংশ পরিত <u>া</u>	াগ করা	,
, উচিত ৰহে	* • •	••	•••	ລ• ້
আদালত অবজ্ঞার মোকক্ষমা অবজ্ঞার	চত ∙ আদালতই	উঠাইয়া	শইতে	
, পারেন ••	••	••	•••	\$

দঃ বিঃ ৭৫ ধারা ক্থন খাটিবে	***		গুন্ধা। ৮০
বছসংখ্যক অভিযোগ কখন এক দিনে বিচাৰ্	Ú	•••	ba
রফা নিষ্পত্তি (আপোষ নিষ্পত্তি দেখ।)		
রেজিফরী-আইন।	,		
কখন বঞ্চনা এই আইনে বিচাৰ্য্য	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	•••	22
রেভিনিউ এজেণ্ট।			
বিনা সনদে কার্য্য করিলে কালেক্টরের বিচা	র্ঘ্য, মাজিষ্টেটের নহে	•••	9 0
ল্বণ।			
সীমান্তর্গত রওয়ানা শ্ন্য লবণ বিজারা ••	•	•••	৩২
লুকায়িতভাবে পরগৃহে প্রবেশ।			
উক্ত অপরাধ ও গৃহ-চুরি একত্রে দণ্ড অবৈধ	•••	•••	ર
বঞ্জা।	1 1		
পর-রূপ ধারণে বঞ্চনায় শঠতা প্রামাণ্য		•••	>>
বাদী ।			
গরহাজিরে, বিশেষ কারণ না থাকিলে আসা	মী ছাড়িয়া দিতে হইবে	•••	85
বিখাস হইলে বাদির সাক্ষ্য প্রচুর	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	•••	50 ,
আদালত অবজ্ঞায় মোকদ্দনায় কে বাদী	•••	 \s	্য, ৯১
বিচার—বিচারক-–বিচারের স্থান (মোকদ্দমা ও অবজ্ঞা দে	থ।)	
বিবাহ—পুনশ্চ বিবাহ।			
- স্ত্রীপুরুষের মত বাস করিলে বিবা ে∉র অনু মা	ন হইবে, বিপরীত প্রমা	ণের	,
ভার আসামীর উপর	***	•••	89
বিবাহ অসিদ্ধকরণের ক্ষমতা কোন জাতি-সম	াজের নাই	•••	90
কখন পুনশ্চ বিবাহের সহায়তা হয় না 🔭 🐽	•••	•••	64
বিরোধী হাট (শান্তিভঙ্গ দেখ।)			
বিশ্বাসঘাতকতা।.		,	
পুলিস কর্মচারী খোয়াড়ের পশু কিনিলে ঐ অ	পরাধ হয় না	•••	89 (
স্ত্রিকী সম্পত্তিতে অপ্রাধ সংঘটিত হইতে পা	রে	••• ,	¢a
इिक मोखि (स्मोककमाराया)		٠ ٤	

				পৃষ্ঠা ।
ব্যভিচার।				
অন্নবয়স্কাকে ব্যভিচারার্থে ভাড়া দেওয়া	কোন হলে জ	পরাধ নহৈ	•••	৩৬
ঐ অপরাধ সাব্যস্তে নাবালিকাকে হস্তাম্ভ	র করা আৰশ	্ক নাই	•••	90
শপথ (প্রতিজ্ঞাদেখ।)				
শান্তিভঙ্গ বা শান্তিরক্ষা।				
চূড়াস্ত আদেশের পূর্ব্বে আসামীর সমকে	মূল প্রমাণ বি	াপিবদ্ধ করা		
আবশ্যক	•••	• • •	გ	, ৩২
ভিন্ন জেলায় শান্তিভঙ্গ করিলে মুচলিকার	मर्ख जम रहे।	ত পারে	• • •	۵
আদেশ প্রচারের সময় উভয় পক্ষ উপহি	তে থাকিলে স	ামনজা রি		
निर्श्वरंग्राजन	•••	***		ऽ२
শান্তিরক্ষার আদেশ প্রচারের পূর্ব্বে প্রমা	ণ লওন আব*	া ক	৩২,	७৮
পুলিস রিপোর্ট প্রমাণ নহে	•••	111	৩২,	95
তৃতীয় ব্যক্তিকে আক্রমণ করিলেও মুচলি	কার সর্ত্ত জব্দ	नीय	***	೨
এক বৎসরের অধিক কালের জন্য মুচ্লি	নকা লওন কে	বল সেসন-জ	জর	
আয়ত্তাধীন	• • •	•••	•••	9 6
সমনের লিখিত সর্ত অনতিক্রম্য	•••	•••	•••	¢5
ক্থন মুচলিকা তলব অবৈধ	•••	•••	•••	٤3
কথন হাট বন্ধ রাথা যাইতে পারে	•••	•••	***	()
न्याया कार्या निविक्त नटह		•••	***	૯૭
যুক্তিবিবর্জিত পরিমাণে মুচলিকা লওন ব	ब देवध	•••	•••	৬৯
भांखि (मख (मथ।)				
সচ্চরিত্রের জামিন।	,			
हरूम পाननार्थ बानामी खवनत्र পाहेत्व	•••	***	***	90
कार्याञ्चीन	•••	•••	•••	4
সত্ত্বের প্রমাণ।		•		
मानिकी मञ्ज मावी कतित्वह त्माकममा	ভূম্মিদের কার	াণ হয় না	•••	89
मभन ।				
কথন সমনজারি নিপ্রয়োজন	•••	•••		১২
সম্পত্তি (এজমালী সম্পত্তি দেখ।)			3	• `

					. र्ज्ञ ।
সম্পত্তি রক্ষার অধিকার	र ।				
কখন জন্মে না	• •	•••	•••	• •	৬
উক্ত অধিকারক্রমে নরহত্যা	ও করা যাই	তে পারে	•••	•••	৩৫
সরকারী চাকর।					
ফীস্-ভোগী পেয়াদা সরকার	ী চাকর	•••	•••		85
" विनाभूला भूनावान वस्र ध	হণ "	•••	•••	•••	৭৯
সরকারী ভিন্ন অন্য কার্য্যে গ	থাকিয়া অর্থ	লইলে অপ	রাধী নহে	•••	20
আইনের বিধি অমান্য করিং	য়া কর্ম্ব্যক ে	ৰ্ম অবহেলা	•••	•••	6.2
সরলভাবে বিশ্বাস—সর	ালতা।				
সরলভাবে আপন সত্ব রক্ষাণ	র্থ পরের অবি	নষ্ট করিলে	ও ' অপকার '	হয় না	20
অপরাধের লাঘব করে	•••	•••	***	••	১৭
সর্লতার ফল	•••	•••	• •	•••	٥٠
সরাসরি বিচার—(মো	কদ্দশাও দেব	थ ।)			
আবকারী আইনের মোক্ল	মাঐক্লপ বি	চার্য্য	•••	•••	bo
সহাপরাধীর সাক্ষ্য—(সাক্ষ্য দেখ।	1)			
সহায়তা—(অপরাধের।					
অপরাধের সন্থাদ না দেওয়া		ৰতা নহে	••	•••	ર૯
মিথ্যা অভিযোগের পক্ষে সা	का प्रवन ड	ইহার সহায়	তা নহে	•••	৫२
সহায়তা জন্য দোষ-নিৰ্ণয় মু	ল অপরাধের	ৰ শাস্তি বা	থালাদের উপ	র	
নির্ভর করে না	• •	••	• •	७२	ং, ৯৩
ুমনুষ্যচুরির সহায়তা	••	:•	••	• •	95
পুন•চ বিবাহের সহায়তা ক	খন হয় না	. •	• •	••	৮৯
সাক্ষী।					
কথন সাক্ষীর বিরুদ্ধে ওয়ার			•••	•••	२०
কথন মৃত সাক্ষীর মৃত্যু প্রমা		•	•••	***	২৬
আসামীর সাফাই সাক্ষী এব			••	২৭,৩	8,20
মোকদমা ডিস্মিদের পূর্বে	•			•••	b 3
দাক্ষীর উক্তি দকল মাজি ত্রে	उरे निशिवन	করিতে স	ক্ম	•••	為 5
সাক্ষ্য—(মিথা সাক্ষ্যও					
সহাপরাধীর সাক্ষ্য কথন প্র	মাণস্বরূপ গ্রা	হ্	1.1	¢O,5	26,60

সহাপ	রাধীর স	ক্ষ্য পোষক	প্রমাণ অবিদ্যুষ	तित्व व्यष्ट्र वन्द	ह ५,२७,७৯,१	5,5¢,6¢,	P-10
এক ত	াাদালতে	র গৃহীত সাক্ষ	र कथन श्रना प	মাদালতের গ্র	াহ্য হইতে		
2	াৱে	•••	•••	•••	•••	•••	>
কথন	নহে	•••	•••	•••	•••	•••	৫ ዓ
সাক্ষ্য	আসামী	র সমক্ষে লিপি	প্ৰহ্ম হও্য়া অ	াৰশ্যক	4,5	৬,৩২,৪৮,	৬৮
সহাপ	রাধীর স	াক্ষ্য প্রমাণের	व्यगानी		•••	•••	¢8
বিশ্বাস	इट्टेंग	বাদির সাক্ষ্য	প্রচুর	•••	•••	•••	৬০
সাধা	রণের	ন্যায্য বিচা	র—(অবজ্ঞা	(नथ।)			
স্থীক	ার ও	ম্বীকারোত্তি	 (সহাপরা	ধীর সাক্ষ্যও রে	मथ।)		
অপর	ধ স্বীকা	র করিলে আ	দেসরের মত ি	নি প্র্যোজন	•••	•••	৮
কখন	স্বীকৃারে	নাক্তি প্রমাণস্ব	রূপ গ্রাহ্য নং	ξ	••	cc,	৯৫
কখন	উহা অ	শুদ্ধ হয় নাও	প্রামাণ্য	• • •	•••	৮৭, ৯২,	20
স্বীকা	রোক্তি	লিপিবদ্ধ কর	ণর প্রণালী	•••	•••	৬৬,	৯২
পুলিস	া সমকে	অপরাধ স্বীক	ার-বাক্য অপ	র আসামীর স	ম্নে প্রামাণ্য	•••	99
এক দ	<u> থাসামীর</u>	র বিরুদ্ধে লই	ল সকলের বি	ক্ৰ গ্ৰাহ্য	•••	•••	३६
সেস	ন গ্ৰাহ	ত্ত মোকদম	—(মোকদৰ	त (नथ।)			
সেস	ান সো	পर्দ-(या	কদ্দমা দেখ।)				
ন্ত্ৰী	লাক—	-(পৰ্দানিশীন	(मथ।)				
হাঙ্গ	ামা—	(অভিযোগ নে	7थ।)				
হাট	—বি	রাধী হাট—	-(শাস্তিরক্ষা	দেখ।)			
हिम	াৰ 🗀		•				
কথন	প্রমাণ	বরূপ গ্রাহ্য	•••	***	• • •	•••	98
ऋि	<u>তপূরণ</u>	t .					
বাদী	नः विः	२०० शाजा म	ठ क्लोकमात्रिय	নাপৰ্দ হইলেও	কাঃ বিঃ ২০৯	ধারা	
	মত ক্ষতি	চ-পূরণ করিতে	ত বাধ্য [়]	•••	,.	•••	৩২
কুা:	विः ৫२३	ধারার মোক	দ্মা প্রণালীত	ভ হইলে মাজি	দষ্ট্রেট ক্ষতিপুর	4	
•	দিতে বা	धा नष्टन	•••	•••	•••		44

मर्टमाधनी।

পৃষ্ঠা।	পঙ্কি।	অশুদ্ধ ৷	
3011	19(19-1		254)
٩	२ऽ	মোকদ্দমার নাম নাই	. (এী এী মতী মহারাণী বঃ গোলাম
			দরবেস—২৭ পৃষ্ঠা।)
\$ \$	ъ	मभीत .	• मङ्गीय।
> ৮	Œ	তয়োরাল .	তলোয়ার I
>>>	>9	मः विः ৮৮ शाता	. ১৮৮ ধারা।
> >	52	नियाटक .	• नियाहिन।
২১ টীক	ার শেষ পঙ্	ক্ত ॥১৮৭२ খৃঃ ৪০ আঃ .	১৮৭২ খঃ ১০ আ:।
२०	>>	কাৰ্য্যান্থ ষ্টান	कार्याञ्चान।
₹₫	টাক†য়	৩৬২, ৩০৪, ২৬১	৩৫৭, ৩০৩, ২৬৩,
۶۵	ર	धातांत्र .	ধারার।
৩০	٥ د	७ २ *	· * থাকিবে না ৷
৬১	٥٥	মোকদ্দনা ষ্টিত	. মোকদ্দনা ঘটিত।
७२	२२	र् रेग	. रहेरन।
৩৭	9	···	. &6
(ro	৬	৩০৪	. 006
৬৯	ь	করে	করেন।
20	9	১৪৫ ধারা	5७ ० धा ता ।
ঐ	টীকার	১৮৭৮ সালের ৭ আই	नंत ১৮৭৮ थुः १ (वक्षीय) आहेरनत्।
۲5	ъ	যাহা	থীহার।
৮২	, a	ष्ट्रेशाटिं टिंब	ष्ट्रेश्वाटर्षेत्र ।
ঐ	ka		. कंडधनि ।
৯০	25	s আহিনের	১ আইন।

[্]ক্তে উপরোক্ত শুদ্ধ পাঠ কাটিয়া লইয়া অনায়ালে পুশুকের বথাস্থানে সন্নিৰেশিত করা বহিতে পারে এই উদ্দেশ্যে ইহা পত্রের এক পৃষ্ঠায় মুদ্রিত করা গেল।